



प्रो. श्याम मोहन अस्थाना
स्मारिका

प्रो. श्याम मोहन अस्थाना

स्मारिका

अनुक्रमणिका

परिवार

1.	डॉ. दीपक कुमार	09
2.	वीणा सहाय	11
3.	कालिंदी मोहन वर्मा	12
4.	पंकज किशोर वर्मा	13
5.	कावेरी मोहन	14
6.	डॉ. कैलाश कुमारी सहाय	17
7.	शशि कंवलजीत सिंह	19
8.	शीला अस्थाना विमान	24
9.	स्मिता स्वामी	27
10.	डॉ. नीरजा अस्थाना	28
11.	संजय अस्थाना	31
12.	सुनील रंजन अस्थाना	36
13.	रवि अस्थाना	37
14.	मिनी सहाय	40
15.	इरा सहाय	41
16.	आराधना मृत्युंजय रावर	42
17.	अनुपम श्रीवास्तव	43
18.	कजरी वर्मा	44
19.	कविता सहाय देओकुलियार	45
20.	डॉ. वसु वत्सला पंड्या	46
21.	डॉ. सुश्रुत पंड्या	47
22.	डॉ. धवल दीप्तांशु अस्थाना	48
23.	अमृता सिंह अस्थाना	49
24.	डॉ. नरेश प्रसाद	50
25.	सुरेश प्रसाद	51
26.	गिरीश मोहन प्रसाद	52
27.	डॉ. लालजी वर्मा	53
28.	शरत चंद्र	54
29.	अनिल लाल	56
30.	डॉ. अजय सिनहा	59
31.	मधुप सिनहा	60
32.	डॉ. अरुण सिनहा	61
33.	डॉ. राकेश प्रसाद	62

अनुक्रमणिका

34.	सुनील लाल	63
35.	लता शरण	64
36.	राजेंद्र कुमार सिनहा	66
37.	डॉ. अशोक कुमार सिनहा	68
38.	अनूप सिनहा	69
39.	सुनीता कुमार	71
40.	डॉ. प्रेरणा सिनहा	72
41.	डॉ. अमित कुमार सिनहा	73
42.	डॉ. राकेश डेढ़गर्वे	74
43.	ममता सहाय अस्थाना	75

राजनीतिक /सामाजिक

44.	डॉ. नीरज सिंह	77
45.	डॉ. जया जैन	81
46.	डॉ. नलिन कुमार शास्त्री	82
47.	राजीव नयन अग्रवाल	87
48.	डॉ. गांधी जी राय	93
49.	प्रो. बलिराज ठाकुर	94
50.	रामदास राही	95
51.	डॉ. कमल कुमारी सिंह	96
52.	डॉ. ममता मिश्रा	99
53.	डॉ. किरण कुमारी	101
54.	डॉ. कंचन प्रभा सिंह	105
55.	डॉ. मधुकर प्रकाश	106
56.	डॉ. रमेश कुमार सिंनहा	107
57.	डॉ. सतीश कुमार सिनहा	108
58.	डॉ. राजेश सहाय	110
59.	डॉ. सुशील कुमार रंगटा	112
60.	डॉ. विजय लक्ष्मी शर्मा	113
61.	डॉ. विनीत सिनहा	114
62.	डॉ. अख्तर मसूद	116
63.	दिनेश प्रसाद सिनहा	119
64.	हरिश्चंद्र	122
65.	डॉ. कुमार निर्मल	125

अनुक्रमणिका

66.	डॉ. प्रभा रानी	126
67.	ऋतुराज वर्मा	127
68.	राकेश कुमार अस्थाना	133
69.	रमण कालिका श्रीवास्तव	134

सांस्कृतिक

70.	ओंकारेश्वर पांडेय	137
71.	चंद्रभूषण पांडेय	144
72.	श्रीधर शर्मा	150
73.	रविंद्र भारती	152
74.	शमशाद प्रेम	154
75.	जितेंद्र सुमन	156
76.	उदय सहाय	157
77.	मनोज कुमार सिंह	158
78.	गणेश प्रसाद सिंह	159
79.	सोमेंद्र माथुर	160
80.	द्विवेदी भुजंग भूषण भारद्वाज	162
81.	निरुपमा शंकर	163
82.	अनुपमा राय	166
83.	शिवेश्वर पांडेय	167
84.	डॉ. स्वयंबरा	169
85.	प्रियम्बरा	172
86.	मेधा वर्मा	174
87.	अनूप सोन्	175
88.	तारकेश्वर नाथ ठाकुर	176
89.	बखशी विकास	177
90.	रोहिताश्व गौड़	179
91.	विपुल कुमार गोयल	181
92.	उत्तम कुमार	182
93.	राजीव उप्पल	183
94.	प्रमोद त्रिगुणायत प्रामिल	184
95.	अमलेश श्रीवास्तव	186
96.	अनीश कुमार	187

अनुक्रमणिका

97.	श्राबंती मुखर्जी	188
98.	रजनी बेदी	189
99.	कविता सिन्हा	190
100.	सुधीर कुमार	191
101.	संजय कुमार	193
102.	कांति सिंह	194

परिवार

मेरे पापा प्रो श्याम मोहन अस्थाना, जिन्हें परिवार के लोग “गप्पू” के नाम से पुकारते थे, और अन्य लोग अस्थाना साहब के नाम से

मेरे बचपन की धुंधली यादों में नेपाल के प्रवास के शुरुआती दो वर्ष - खिड़की से पहाड़ों का नज़ारा, कार्गो हवाई जहाज के इंजन का शोर, बस।

पापा काठमांडू के त्रिभुवन यूनिवर्सिटी के त्रिचन्द्र कॉलेज में राजनीति शास्त्र में प्राध्यापक थे 1950-1956। इसके साथ ही पापा काठमांडू के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आयागों में भी काफी सक्रिय रहे थे। किंग महेंद्र के कोरोनाशन में माँ श्रीमती सावित्री अस्थाना ने बनारस के दैनिक अखबार आज की विशेष संवाददाता के रूप में भाग लिया था, जिसके लिए उन्हें एक विशेष मेडल भी मिला था। काठमांडू में ही पापा ने एक नाटक का निर्देशन भी किया था और अभिनय भी। नाटक था द्विजेन्द्र लाल राय लिखित ‘मेवाड़ पतन’। नेपाल राज परिवार एवं सैन्य अधिकारी भी इस नाटक में शामिल हुए थे। माँ की भी कुछ भूमिका थी, क्या थी, वो याद नहीं है। नाटक का प्रदर्शन काफी सफल रहा और काफी दिनों तक चर्चा होती रहती थी। दिन तो अच्छे गुज़र रहे थे मगर पापा भयंकर रूप से पेंचिश के शिकार हो गए। इसी बीच पता चला कि आरा (बिहार) में महाराजा कॉलेज की स्थापना हुई है और विभिन्न विषयों के प्राध्यापकों की आवश्यकता है। पापा ने इंटरव्यू दिया और राजनीति शास्त्र के प्राध्यापक और अध्यक्ष नियुक्त कर लिए गए। माँ भी श्री जैन बाला विश्राम में शिक्षिका नियुक्त हो गईं, और 1959 में प्रधानाध्यापिका बनीं। पापा काफी सरल स्वभाव के, मगर अनुशासित जीवन शैली के थे। उन्होंने कभी भी मुझे डाँटा या मारा नहीं।

बाल विकास विद्यालय, किशोर दल शिशु भवन, जिला स्कूल, हर प्रसाद दास जैन स्कूल, हर प्रसाद दास जैन कॉलेज की शिक्षा के दौरान सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में, विशेषकर नाटकों में तो मेरी विशिष्ट भूमिका थी ही, साथ ही पापा के विभिन्न नाटकों में मैंने और प्रो राणा के पुत्र अनिल (पूर्व सीबीआई डायरेक्टर) ने बाल कलाकार की भूमिकाएँ निभाईं।

मेरी किसी भी परीक्षा के दौरान कोई भी पैरवी नहीं करते थे, कह कर के कि अपना मेरिट खुद दिखाओ। मेडिकल एंट्रेंस परीक्षा में पहली बार असफल होने पर भी मुझे हताश नहीं किया जिस कारण अगले वर्ष परीक्षा में मैं सफल रहा। MBBS के बाद मेरे बिहार स्वास्थ्य सेवा जॉइन करने पर काफी खुश हुए थे। फिर मैंने PG Entrance में टॉप किया। राजेंद्र चिकित्सा महाविद्यालय से ही MS नेत्र की शिक्षा प्राप्त करने के बाद पापा के निर्देश पर 1984 में आरा में क्लिनिक शुरू किया।

स्वाभाविक ही था कि कामायनी बिहार की सभी नाट्य प्रस्तुतियों में मेरी संलग्नता रही, अधिकतर मंच परे, कभी कभी मंच पर भी। नाट्य शिक्षा घर बैठे ही मिल रही थी। मेरा अहोभाग्य! सौभाग्य यह भी कि मेरी पत्नी के रूप में उत्कृष्ट नाट्य अभिनेत्री वीणा सहाय का साथ मिला-कामायनी में, कामायनी परे।

माँ के विद्यालय के वार्षिकोत्सव हों या शत्रुंजय संगीत विद्यालय के वार्षिकोत्सव, हर अंग पर पापा की पूरी नज़र और पूरी पकड़ रहती थी। आरा का शायद ही कोई एक्टर या एक्ट्रेस हो, जिसने कभी न कभी पापा की छत्रछाया में काम न किया हो।

कवि भी काफी अच्छे थे। कवि गोष्ठियों में उनके हास्य व्यंग्य से परिपूर्ण कविताएं गहरी छाप छोड़ती थीं। 60 के दशक में साप्ताहिक काव्य गोष्ठियां आयोजित हुआ करती थीं।

शुरू से ही जुझारू प्रवृत्ति के थे। 1970 के कॉलेज टीचर्स आंदोलन, 1974 के जय प्रकाश आंदोलन और आपातकाल के दौरान कई बार जेल यात्रा भी की। एक बार पटना जेल में भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन में पगली घंटी बजा कर हुए लाठी चार्ज में हाथ की कानी उँगली टूट गई, और इलाज के अभाव में टेढ़ी ही रह गई। 1969 में आरा शहर में हो रही गुंडागर्दी के खिलाफ नागरिक आंदोलन का भी नेतृत्व करने में रात में भी अकेले ही निकल जाते थे। 1973 में नगरपालिका के चुनाव में भी वार्ड कमिश्नर के पद के लिए लड़े। मगर विरोधी प्रत्याशी के द्वारा बूथ कैप्चर कर लेने के कारण जमानत भर बचा पाए।

काफी दिनों से बंद रामलीला का आयोजन 1970 में नगर रामलीला समिति की स्थापना करने के बाद हुआ। रामलीला में बनारस की तर्ज़ पर झांकी जुलूस की भी शुरुआत की गई।

राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर होने के साथ ही राजनीति में भी काफी रुचि लेते थे। जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा के होने के कारण विभिन्न चुनावों में भाषण देने के लिए जगह जगह जाते थे। लेकिन रमना मैदान में आये हर पार्टी के नेताओं के भाषण सुनने के लिए बाकायदा कलम कॉपी ले कर जाते थे और पॉइंट भी नोट करते थे। आपातकाल के बाद हुए आम चुनाव में लोगों ने जनता पार्टी के टिकट के लिए कहा, मगर पापा ने इसे विनम्रतापूर्वक ठुकरा दिया।

अवकाशप्राप्त करने से कुछ पहले महाराजा कॉलेज के प्रिंसिपल बने। इस अवधि में महाराजा कॉलेज में पहली बार लड़कियों को दाखिला दिया गया। यह एक क्रांतिकारी कदम था।

31 अक्टूबर 1984 को अवकाश प्राप्त करने के बाद कामायनी बिहार संस्था ने पापा के नेतृत्व में देश की पचास से अधिक नाट्य प्रतियोगिताओं में डंका बजाया। हर जगह सर्वश्रेष्ठ नाटक के पुरस्कार के साथ ही कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता था।

1965 से ही आकाशवाणी पटना के अलावा राष्ट्रीय प्रसारण में पापा के दर्जनों नाटक प्रसारित किए गए। एक नाटक “ तीसरा आदमी “ रांची दूरदर्शन से और “ हाथी राजा “ पटना दूरदर्शन से भी प्रसारित हुआ था। एक बार राष्ट्रीय कार्यक्रम में पटना आकाशवाणी से पापा का लिखा हुआ नाटक और रांची आकाशवाणी से मेरा अभिनीत नाटक एक साथ प्रसारित हुआ था। इससे पापा बहुत खुश हुए थे और सबको बताते रहते थे। 1970 में उनकी लिखी कहानी पर चिल्ड्रेन फिल्म सोसाइटी ने “जवाब आयेगा “ नामक फिल्म बनाई थी। इस फिल्म में योगेश और योगिता ने अभिनय किया था। रूपम सिनेमा में लगी थी। सभी स्कूलों ने अपने छात्र छात्राओं को इसे दिखाया था। लगभग उसी समय साप्ताहिक हिंदुस्तान पत्रिका में उनका नाटक मुजाहिद प्रकाशित हुआ, शीर्षक बदल कर:- तूफान जो सर पटक कर लौट गया। साप्ताहिक धर्मयुग में भी उन्होंने कई राजनीतिक लेख लिखे थे। पटना के The Indian Nation और Searchlight समाचार पत्रों में भी राजनीतिक लेख और पत्र लिखते रहे थे।

यादें तो अनगिनत हैं।

किसे भुलूँ किसे याद करूँ।

परिवार, profession, समाज, नाट्य जगत, राजनीति:- सभी जगह अपनी पैठ बनाई और नेतृत्व किया।

ऐसे ही थे मेरे पापा: प्रो. श्याम मोहन अस्थाना

- डॉ. दीपक कुमार

संस्मरण लिखने बैठी हूँ, क्या लिखूँ क्या छोड़ूँ समझ नहीं आ रहा है। मेरे ससुरजी जो हमेशा मेरे साथ पिता तुल्य भाव रखते थे। ब्याह होकर जब से आरा आई तब से लेकर आज तक जब कि हमारे बीच अब सशरीर नहीं है, पर यादें हमेशा साथ रहती हैं। वैसे भी मेरा मानना है कि याद उन्हें किया जाता है जो हमारे साथ नहीं हो पर पापा हमेशा साथ थे, रहे हैं और रहेंगे। उनका आशीर्वाद सदा परिवार पर बना हुआ है।

बहरहाल पापा (प्रो. श्याम मोहन अस्थाना) का साथ ४० वर्षों तक रहा, चूँकि पापा नाटक लिखते और करवाते रहते थे और मैं भी रंगकर्मी रही हूँ, इस नाते कोई भी नाटक लिखते तो हमेशा मुझे पहले दिखाते और कहते "क्या कहती हो सही है?" मेरा जवाब हमेशा एक ही होता कि बहुत बढ़िया है, फिर पूछते तुम्हारा कुछ सुझाव? मैं शर्म से झुक जाती, कहती आप इतने बड़े नाटककार हैं और मुझसे सुझाव माँग रहे हैं, यह था उनका बड़प्पन। जुनून में कमी नहीं थी, जो ठान ले वह कर दिखाते थे, रिटायरमेंट के बाद उन्होंने तबला और संगीत सीखना शुरू किया और प्रभाकर की डिग्री हासिल कर ली। इसे कहते हैं जज़्बा।

संयम से रहना, संतुलित आहार लेना उनकी दिनचर्या होती थी, सुबह चाय उसके बाद कसरत फिर नाश्ता, समय पर दिन का भोजन और रात में हल्का भोजन यानी दूध रोटी प्रिय भोजन होता था।

पापा हमेशा कहते कि मुझे १०० साल जीना है पर ९३ वर्ष की आयु में सशरीर कल की गाल में समा गए। पर शायद संयमित जीवन शैली की वजह से वह हमेशा स्वस्थ और निरोगी रहे। पर जब भी उनके खून की जाँच होती तो मैं भगवान से प्रार्थना करती कि इन्हे डायबटिक नहीं निकले क्योंकि पापा मीठी चीजों के बहुत शौकीन थे, हर खाने के बाद कुछ मिठाई जरूरी था।

जब हमलोग आरा से बनारस आ गए तब पापा गर्मी की छुट्टियों में या लंबी छुट्टी में बनारस आ जाते थे, फिर खूब बातें करते, अपनी कहानी, संस्मरण सुनाते रहते, फिर मैं भी भूल जाती थी कि इतने बड़े नाटककार की मैं पुत्रवधू हूँ।

आज हमारे बीच पापा नहीं है पर आपका आशीर्वाद सदा हमारे साथ है, आपके औरा की प्रतिध्वनि सदा पूरे वातावरण में गूँजती रहती है।

शत शत नमन पापा

- वीणा सहाय

मेरे पापा, दुनिया के सबसे अच्छे पापा के रूप में उनकी गिनती होनी चाहिए। इतने सरल स्वभाव के और बहुत ही मृदुभाषी। बचपन में यदि हम भाई बहन में झगडा होता था तो बोलते थे “ए जी तुमलोग दो फीट की दुरी पर हो जाओ या दिवार की ओर मुह करके खड़े हो जाओ”—बस हमलोगों की लड़ाई खत्म। कभी भी डांट डपट या पिटाई नहीं करते थे।

इतने सरल थे की कहीं शहर में जाना होता था तो माँ से केवल १० रूपया मांगते थे रिक्शा भाडा के लिए। अगर उसमे से कुछ बच जाता था तो अमरुद खरीद कर ले आते थे। फल में अमरुद उनको बेहद पसंद था। कभी भी पैसा अपने पास नहीं रखते थे, जो बच जाता था वो आ कर माँ को दे देते थे। यहाँ तक की वो अपनी पूरी की पूरी सैलरी माँ को दे देते थे और जब जरूरत पड़ती थी तो उनसे ही माँगा करते थे।

एक बार की बात है की मेरा B.Sc. Hons. एग्जाम का सेण्टर गया मगध विश्व विद्यालय में था। हम और पापा ट्रेन से गया जा रहे थे और अपना सूटकेस ऊपर वाले बर्थ पर रख दिए थे। उस बर्थ पर एक आदमी दुशाला ओढ़े बैठा था और पता नहीं कैसे वो धीरे धीरे सारा कपडा सूटकेस से निकाल लिया था और हमलोगों को कुछ भी पता नहीं चला। घर ला कर जब सूटकेस खोले तो हम और पापा एक दुसरे का मुह देख रहे थे। चूँकि सूटकेस में मेरी किताबें थी (जो वो नहीं निकल पाया था) तो उसकी वजन से पापा को पता नहीं चल पाया की सूटकेस से कपडे गायब हो गए हैं।

इसी तरह की बहुत सारी मीठी यादें उनके साथ जुडी हुई हैं।

पापा ज्ञान के भंडार थे। किसी भी विषय पर उनसे चर्चा कर सकते थे चाहे वो पॉलिटिक्स हो, चाहे साहित्य हो या फिर सांस्कृतिक विषय हो..

इतने बहुआयामी प्रतिभा वाले इंसान बहुत कम होते हैं. हमें गर्व है की हम उनकी बेटी हैं। पापा जहाँ भी रहे हमें उनका स्नेह और आशीर्वाद हमेशा मिलता रहे। पापा आपको बहुत MISS करते हैं।

- कालिंदी मोहन वर्मा

हिंदी में एक मुहाबरा है “ बहुमुखी प्रतिभा के धनी “, जो हमलोगों के पापा—स्व श्री श्याम मोहन अस्थाना थे। एक पोपुलर प्रोफेसर, एक सफल नाटककार, एक सफल रंगकर्मी, एक लोकप्रिय जज, एक सच्चे देशभक्त (जे पी आन्दोलन में सक्रिय भाग लेना) और सबसे ऊपर एक नेक दिल इन्सान।

उनमे एक बहुत बड़ी खासियत थी की वो सबको यथोचित इज्जत देते थे। ऐसी ही एक वाक्या मेरे साथ भी हुई थी। मेरी शादी के तुरंत बाद मैं अपने ससुराल गया था, दुसरे दिन घर पर ही एक नाटक का रिहेर्सल हो रहा था (उन्ही के द्वारा लिखा एक नाटक— बुद्धम् शरणम् गच्छामि का)। मैं भी वो देखने के लिए बैठ गया था। पापा ने तुरंत हमें देख कर बोले – पंकज जी, ये रिहेर्सल को देखिये और हमें बताइए की इसमें क्या सुधार किया जा सकता है। वो जानते थे कि मेरा इस फील्ड में कोई जानकारी नहीं है फिर भी वो हमें इज्जत देने के लिए इस तरह का आग्रह किये । वो एक बहुत ही महान व्यक्ति थे।

आखरी दिनों में अधिकतर बुजुर्गों को भूलने की बीमारी हो जाती है, वो भी इस से ग्रसित हो गए। मुझे याद है कि मैं उनके पास बैठा था (ऐसे समय में लोग ऐसे व्यक्ति के पास बैठने से भागते हैं परन्तु मुझे किसी बुजुर्ग के पास बैठना बहुत पसंद है) और वो मुझ से पूछे
- पंकज जी आप पेपर मिल में हैं न ?
-- हाँ पापा।

फिर हर दो मिनट के बाद वही प्रश्न दोहराते रहे और मैं “ हाँ पापा” बोलता रहा। करीब ८-१० बार उन्होंने पूछा। मेरी आँखे भर आई थी। पर नियति को कौन रोक सकता है।

मैं बहुत ही बदनसीब रहा की उनके अंतिम समय पर उनके दर्शन नहीं हो पाया। मेरी इश्वर से यही प्रार्थना है की वो जहाँ भी हो शांति से हों और अपना आशीर्वाद हम सबों पर बनाये रखें।

- पंकज किशोर वर्मा

प्र० व्याम भेटन अस्थाना--वे नाम भेटन में आते ही मनमस्तिष्क
 अचपन की स्थितियों में चला जाता है। एक गर्व की अनुभूति होती
 है। क्यों न हो---आखिर में उनकी तीसरी सन्तान श्री औरवी मेरे
 पापा थे। ~~अचपन~~ में जिस परिवेश, पारिवारिक, सांस्कृतिक माहौल
 में मैंने आँखें खोलीं-- सष मुझे किस्मत में मिठाई बनाना, गाना
 गौड़की करना---। परिवार की जड़ें बनारस से जुड़ी थीं, इसीसे
 पापा कमी-कमी वहाँ के शब्दों "पूर्वा", "कसोब" का उच्चारण
 करते। बनारस जब आते, वहाँ से वापसी में "हीरस्तागर" की
 मिठाईयाँ आते। आर में कमी श्री जैन बला विप्राभ के आउट ट्राउस
 का प्रवास, ~~बनारस~~ में राजेन्द्रनगर के घर में रहना, जे० पी० अंदोलन
 में सक्रिय भूमिका, पुत्रिस द्वारा पापा की गिरफ्तारी हेतु घर की
 बेराखी, पापा का जेल जाना, उनका स्वानीय चुनाव में अभी
 वार के रूप में दावेदारी, कुँवर सेना से जोड़ा जेना, शान्ति
 समिति, नगर सुरक्षा समिति में ~~हिरस्तागर~~ भागीदारी---
 उनकी सक्रियता, हंसटमागिता छस सबके गिर फेरवाकी श्रौत
 बनती थी। हमें भी उर्जा मिलती र्खें मेरे मन ~~मस्तिष्क~~ पर
 में भी लीक से हटकर चलाने की इच्छा जागृत होती।
 अचपन से ही पापा के नेपाल प्रवास, वहाँ की राजनीतिक,
 सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी, ग्राही महल में
 आना-जाना, नेपाल के भारत में विद्यमान संबंध में पंडित
 से मुलाकात, परिणाम ^{परिस्थितिक} रूप में नेपाल छोड़कर स्वदेश (भारत)
 वापसी, फिर 1956 में आर आकर महाराजा कॉलेज ~~की~~ में
 व्याख्याता के रूप में मोगदान करना र्खें अंततः पूर्णतः आर
 वासी बन जाना--- सषफुद पापा के मुख से ये सिर वाफसा
 इतनी बार सुनी कि रटा-सा गया था। पापा की ब्राह्मण में
 कामायनी पनपी र्खें हम र्खें भी उनके साथ रंगमंच पर स्व-
 वन्द गये। घर में ~~बस~~ आर दिन रिटर्सल, अंचन सषफुद
 जीवन का अभिन्न अंग हो गयी। जिस दिन नाटक ~~का~~ किसी
 कार्यक्रम का रिटर्सल नहीं होता-बड़ा अधूरा सा लगता था।
 पापा प्रतिदिन व्यायाम करते र्खें दृष्टाने आते।
 वापसी में किसी नाटक का लॉह उनके साथ आता। ~~जु~~
 घर में या किसी भी अतिथि को पकड़कर नाटक का लॉह

मुनाते | उनकी एक आदत थी - उन्ठ चाद - आम पाने की शक्
 है तो घर के फ्रिज को खदखद कर डट्टा जाहिर कर देते |
 उनकी इस आदत से परेष्ठान होकर रफ़ी ही समय पर हम
 4 लोग (तितली, गुड़िया, हम, पाबन्ध) एक साथ चाय को आर
 पापा 4 कप चाय कैसे पी सकते थे? उन्होंने इस आदत
 को छोड़ दिया |

पापा कामायनी टीम लेकर पूरे भारतभर
 में आयोजित अखिल भारतीय महाम, श्रृंखला प्रतिरोधिता में
 हिस्सा लेते और हर बार 8-10 पुरस्कार लेकर आते |
 भी उनके साथ उनकी उपलब्धियों की साखी रहती |
 कई जगहों पर तो कहा जाने लगा था कि 'आ गये कामायनी
 वाले', अब उन्हें कोई पुरस्कार नहीं मिलेगा | 1980 से
 2005 तक नाटकों का स्पर्धाम युग रहा | पापा को कई
 पुरस्कार मिले | 1984 के अयकछा ग्रहण करने के बाद
 पापा ने पूर्ण रूप से विधिवत् ब्राह्मीय संगीत (गायन) सीखना
 शुरू किया | उन्हें ताव रफ़ी तान अठदी चाद नहीं होते थे |
 प्रायोगिक परीक्षा के समय में पापा को परेष्ठान करने की
 नीयत से परीक्षक महोदय से कहती कि पापा से तब पूरिय
 समाकर के बाद उन्होंने सम्मयण-बोवरी से तबजा सीखना
 प्रारंभ किया | बड़ो - तीन वर्ष तक सीखने के पछवात तबजा
 प्रविज्ञान बंद हो गया | नहीं रखा तो रंगमंच का सिठसिठा |
 व उसमें तो उनके प्राण बसते थे | कोई भी जड़की यदि
 संगीत सीखने के लिए आती तो पापा उसमें नाटक में
 अभिनय करने के लिए ज़रूर पूछते | अंबुरी भी बजते थे |
 पापा को दिखाया कि तबजा पन्तंद नहीं था |
 शाने के बौकीन थे - उनकी यात्री में उनके हिस्सा से सारी
 सामग्री उतारने के बाद भी कुछ न कुछ मांग देते थे |
 सीमित साधनों में सीतुष्टि के साथ रहना, उनके स्वभाव में
 था |

अमोदया में 1992 के 6 दिसम्बर को बावरी मस्जिद
 विध्वंस करने हेतु "अमोदया-चलौ" मार्च पर अमोदया
 जाने के क्रम में विरप्रतार हुए | उनके अंदर कुछ कर
 गुजरने का जुबून था | समाज सुधाकर, परोपकारी के रूप में
 भी उनकी पहचान बनी | अनेको अंतर्जातीय विवाह उन्होंने
 यस्तिार में करवाया |

पापा के सुणह की कुलआत, आसन, आवास
 चाम की सुविधों के साथ होती है | अंकल अं० के ०० की बसतम
 के दरवार में में दोनों मित्र थे - एक एक दिनेश की

की राजनीतिक-धर्मों के साथ, समेकित, इंग्लैंड 25 आदि को
 मविष्य तम कर देते थे। एक-दूसरे की खींचा-तानी, बस-
 परिवार--पुत्र इतिवार--प्रगोला सभका निर्णय पापा-अंतरा
 की अस्वाभाव्य करती। एक दूसरे के बिना दोनों का मन नहीं
 लगता था। - दो बदन एक जान...। पापा की दिनभरारी में
 दो ही जाती थी -- उल्लू का पट्टा, झुंझर का फच्चा -- ये दोनों
 संस्कृत भाषा की जाती थी। पापा का बड़ा चलाता है तो दो
 प्रत्यय का भी प्रसिद्धाण लेते। बहुत कम लोग जानते थे कि
 पापा साहित्यकार, नाटककार, निर्देशक, कलाकार के अतिरिक्त
 कवि भी थे। सषष्टुद्ध ठीक ही एक चला रहा था। ~~पापा~~
 पापा को किसी भी तरह की कोई असाध्य

बीमारी नहीं थी। सही मामले में मरतमौला जिंदगी जी रहे
 थे। देखा जाए तो बहुत बड़े मिठाखोर थे। अक्सर फ्रिज
 में मिठई के डिब्बे में से सारी मिठई खा जाते और ~~फ्रिज~~
 खाली डिब्बा मचावत ठमें मुंठ चिढ़ता। ठमें बड़ा आश्चर्य
 होता कि इतना मीठा खाने के बावजूद उन्हें जड़मिठीज नहीं
 था।

चारे-चारे वृद्धापस्था का प्रकोप उनके शरीर पर
 किसने लगा। स्मृतियाँ क्षीण होने लगीं। पर ये जरूर था कि ममे
 लोगों को भूलने लगे, पर पुराने लोग, पुरानी बातों को याद
 रखते। ~~नहीं~~ भिड़कुल नहीं भूले तो वो नाटक का मंचन, रंगमंच
 था। ~~रंगमंच~~ के मविष्य, उसके सनाटे को लेकर अंतिम
 क्षण तक उनकी चिन्ता रही।

~~विश्व~~ लगभग साठमर विस्तर पर
 रहने के पश्चात् ²⁴ दिसम्बर 2015 में उन्होंने अपने आत्मसं
 पर अंतिम सांस ली। इस प्रकार से माह्य जगत के मीठम
 पितामह, ~~ये~~ इस नखवर शरीर का परित्याग कर दूसरे लोक
 को प्रस्थान कर गये। उनको गये दस वर्ष हो चके परन्तु
 आज भी पापा हमारी स्मृतियों में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से
 जीवित हैं - उनका आशीर्वाद हमारे साथ है।

Dr. Kavari Mohan
 कवीर्य पूर्ण
 (संगीत शिक्षिका)

- कावेरी मोहन

प्रो० श्याम मोहन आस्थाना

Date _____

Page _____

जन्म शताब्दी वर्ष आ गया नाटककार आस्थाना का
विशेष साधियों जल्द करो सम्मान गुस्से के
साधियों का बात न सांचे मूले समीपमान को
मूल मंत्र वा उनका यह तो, धन का नहीं पहचान था
यही सीख और अंतनाह था, आस्थाना के जीवन का
पद-पभाव नहीं डिगा सका था उनके हृदय संकल्पों के
लागी वन जीवन जिशा था, सब कुछ करके अपना हान
अब्दों के ये धनी हमारे, आस्थाना युग की ये पहचान
जन्म शताब्दी वर्ष आ गया प्रो० आस्थाना का
श्याम, मोहन के रूप जैसे ये नृत्य गायन और वादन में
कड़ी धूप है, अंधकार हो या फिर हाँकं कावल
जेल-यात्रा भी करना पाकी इनके साहस का अपमान
इन काधों ने बना दिया था उनका बलबाली हुमान
इन सा साधारण व्यक्ति भी वन बैठा वंजरी था
जो कुछ कर गुजरे आस्थाना उसका न केई सम्मान था
महत शक्ति से जुड़कर हमें ज्ञान मिला नरपूर वा
उनके नाटकों में नारा सादेश और सुभाव था
जन्म शताब्दी वर्ष आ गया प्रो० आस्थाना का
'ओ० रामकुमार वर्मा' के शब्दों में ये नाटककार महान थे
सच मानें हम विविध प्रयोगों के द्वारा
'आस्थाना' नाटककार महान थे।
नाटककार महान थे
नाटककार महान थे।

पौनःश्याम महान् अस्थाना कुच्छ
कुच्छे इह नाटकं का नाम

- पूर्व-पश्चिम को अपनाकर लोकतंत्र वाणी से खरीद एक चंद्रिका
- नागफनी की डालों उलमकर, घीरे बड़े गंगा पुकार था
- उगीदम-अग्नि की ज्वाला में, धावण रूप उमारा था
- दूसरी सृष्टि की रचनाकर, जापग्रस्त नारद को मोटहल था
- आमापाली से बड़कर मदन-दहन का नाडव था
- सत्यमेव जयते संग भूर्तिथी का नगर सत्य रूप में धराया था
- तेज बुद्धिमान बंदर की रचना ने देश का माष्टाचार दिखवा था
- कुच्छ, विष्णु, मंडल को भी पृथ्वी पर उतारा था ।
- खिलाम के अन्धों ने विद्वानों को पछाडा था
- बुद्ध अरण्य गच्छामि में यथाथ की वाणी थी
- जाति ही क्या केवल पीचव है मूलमंत्र बंन धरिया था
- मार्गियों को गुस्ता अना है सरी को रूब इसाया था
- लीबियों की हड़ताल से पाते सेना घबड़ाया था
- मेरा नाम प्रचुरा में समाज से प्रतिमोक्ष का जल मँवा था
- कानूनी सलह में हम दो हमारे दो का नारा था
- अखिकृत के आमान में श्री यमराज का बीमा क खया था
- अश्वत्थामा हला नरा वा कजरा वा
- ने महामारत का दर्शन कराया था
- तीसरा आदमी के नाटक में दाम्पत्य जीवन
- के अलसलामे प्रश्न उमरते है ।
- जबब आयेगा एक विस्मयकारी घंटे के
- पिकचर है - नाटक का अपना ठीके प्रश्न
- का खबर मोगा है ।

9.

स्वश्याम मोहन कश्चराना

शाश्वती
शिव्यागो

कल, नीपक कुमार का पांन आया व
पापा के बरि मे कुल निरव कर मजिमे
जन्माष्टमी त्या दिन मी - यको के परदे
पुर वे दिन याव आये जब जन्माष्टमी एकर
तहा बहुत ब्रुम बाज से मगारि जाती थी
गहलवाको एकर यहा वी मांकिगो का देवते
आते थे। उसाक मकार ही बापल जाते थे

इन मांकिगो के पुरक, निवाचक, और
पकवाक मेरे आई श्याम मोहन कश्चराना ही
थे - एम सब बहने साथ मे लगी रहती थी
और मंग के बरि गीत गाते थे...

मूगत आवे मोहन मत वारि
देवो सखा वाके ठंग निरुले 355

जी हां। हम उही मोहन बतवाले क्री कात
कर रहे है। नाम से श्याम, और देवाकव
'मिशला' - जिसे सिधे शब्दों के आवरण
पहनाकर मजिन कला मुश्किल ही नहीं
असभव है...

काशी के वाराणगर मुहल्ले के सुपासीर
दुर्गा उसाक बकाल के यहा उदोन जन्म
लभा माता का नाम मगवती देवी :-
हमारा परिवार बडा था व लीन मई साल
बहने सभ उतके मुदि मे बडे हुये...
धर मे छोडा गाडी गिका चाकर बहुत से
रिश्तेदार भी आते जाते रहते थे...

उसने दस साल छोटी होने से उनका व्यपन
 नहीं करे पर इतना गह है कि सन् ४२ के
 भारत छोड़ो आन्दोलन से उन्होंने प्रभुकर हिस्सा
 लिये और कुछ वक्त जेल में भी बारी...
 साथ साथ हरिश्चन्द्र का लखनऊ लखनऊ
 बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में राजनीतिक शाखा
 पर काम भी किया...
 बाद में वकालत की डिग्री भी ली जो उन्हें
 दीक नहीं लगी... लिखने पढ़ने के चाव से
 उन्होंने प्रोफेसर के पद पर महाराजगढ़ लखनऊ
 आरा में कई वर्षों तक काम किया...
 अन्त में आरा में ही रहे और कई
 भाषाओं के कार्यों में भी भाग लिया

उनके जीवन को कुछ निम्न भागों में समझा
 जा सकता है -

१. साहित्यिक काम करना - बाराणसी महल की नौकरी
 के साथ एके माइकेली का स्थापना का गुरु
 उन वक्त के प्रमुख लेखकों की पुस्तकों का
 इन गुरु का छोड़ना न पटा करते थे
 श्री प्रो. चन्द्र शरत्चन्द्र बालकचन्द्र मुख्यालय
 और उनके पुस्तकें प्राप्त करते थे
 दोनों केवल ही सभी उल्लेख भी मिल सकते
 होते थे
२. नाटक का विकास - ये एक व्यपन ही
 हमारे मुहल्ले में होता रहता था
 राजनीति भी होती थी... इसी कारण से
 मैया ने अपनी ही 'आमरानी' नाटक
 सस्था बनाई है विभिन्न शहरों में

३

उसका अलाहपूर्वक पदार्शन होता था

इस लोचक - लोचक के तौर पर मुझे कई वर्षों के बाद पता चला जब मैं अमेरिका से लौटने के लिए आ रहा था। एकता को ही मरी "इतिहास पर मेरी दृष्टि" "कुछ शरणम गीतानाम" पर केंद्रित है जो व्याख्यात्मक है। जैसे अछूत कहलाया है मानव विवरण-देख - कुछ के शरण में जाती है

यह कहना उपयुक्त होगा कि हम-कुछ दिनों में सारंगधर जाते थे उसवल्ल हमारा वा पिकागक का स्थल था - वही वही उनका स्थान बुद्धिजीवी पहली पदचरन पर गया जो सारंगधर से शुरू हुई थी यह कहना कि बनारस का इतिहास उसका अस्मृतिक पत्र आहूया। लखनऊ पभाव उनके व्यापकत्व को उपलब्ध गहरा विवाह देता है

कभी-कभी हमारे घर के पाली थी श्री बनारस का प्रभुत संगीत, लखनऊ नदक, नृत्य - गोपीकृष्ण बनारस ही

किसी गोद में महराज

उनके घर में हरवल्ल संगीत नृत्य का रिहर्सल चलता रहता था ...

आज उनकी पुत्री कृष्णी महिन सावित्री श्याम संगीत विशालय चला रही है जिसमें ३५ ४० छात्रांगे संगीतनृत्य सीख रही हैं। श्री दीपक कुमार श्री कामायनी को यथा पूर्वक चला रहे

8

इशाज महान भाग - लावती जमी कोनी मूदी-
श्रीका के क्षेत्र अनुसूचीय भाग विभा
भागों में विभागा, नाम से वालिया विषय
भी चलागा - कई अन्य सामाज्य
अस्थाओं के साथ भी मत सहयोग देते रहे

इसके अलावा - वार परिवार पर उठते
पुड़ा क्यात रहा - इन सब गाराज पर
वजरे पर और बलते जाते रहे. गाने रहे ---
सब कहने की, शिक्षा दीक्षा, शादी, लाह
के अनेक गोक पर अग्र पर रहे,
हमारा भयतन भी उनका वार से जुड़ा हा

एक भी - शौक - बागवानी का, वार के
पिछवाड़े में नीम के पेड़ पर गालती लता
लिपटी हुई तीसरी आजल पर जाती थी

मौद्द सुगन्धित पुत्र, बेला, चनेली, सूदी,
परिगत, रमणी गंधा, चम्पा, का कुशुबु
ले, मरा होता था - कुद ही पीले का
लगते पाजी देते थे - गीत याद आता है -

अन बहका है बहका आधी रात को
बेला गहका है गहका आधी रात को
आज भी इन पुत्रों का सुगन्ध हमारे
को उन्मादित वार देती है - - -

अकी कृतियों के साथ दो पुस्तके मन
उठाई हरिवंशराय बचन की - - -

"व्या यूयू व्या शूद व्या" - गीड़ को निमाल
आज भी रही भावना से निकाले व्या यूयू व्या याद
- गमन वाली हुई - - - वार



Personal Reflections on the life of: Shyam Mohan Asthana

Some thoughts which come to mind when reflecting on Guppu Bhaiya, as we called him: Social activist, playwright, author, singer, musician, composer, actor, professor, sportsman, loved to laugh and cared deeply for family.

To us, particularly the younger Asthana siblings, he was our elder brother, mentor, leader and confidante. He along with Jiji, our eldest sister, would guide, counsel and direct the siblings against a background of music, a constant influx of houseguests and regular festival activities, at home in Daranagar, Varanasi. The 1940's to 1960's was a time of political, cultural and societal change which had an impact on our family life.

The family at that time was composed of ten siblings, with two strong parents, who were taken on a journey of service to the community. Time at home consisted of cultural events, music performances, including house concerts and drama performances. But it also comprised service to the community in the form of taking in refugees and connecting them with services and meaningful opportunities. Babuji, Amma, Bhaiya and Jiji were at the forefront of the caregiving and led us by their example. As a result, many of the younger siblings, including myself, followed a career track which included social work and service.

He was instrumental in promoting the rights of women in society along with Savitri Bhabhi. Themes of the empowerment of women were prominent in his plays and he supported and advocated for his sisters at all key points in their lives and when called upon would be available at a moment's notice. As an example of this, he made arrangements to accompany me to Calcutta for the flight to Sydney, Australia where I would be moving post marriage. There was no one else available for this. This was an undertaking as Bhabhi was in her last trimester with Kaveri and arrangements had to be made for Amma to travel to Ara to support her. This was the only way for Bhaiya to see me off and for travel to Australia to occur. For this I have eternal gratitude to him.

Most of the qualities of service and equality are also reflected in his family today, with continued advocacy for the rights of women in society. Bhabhi was the principal for a

school with free tuition for underprivileged girls, a tradition which continues today. Bhaiya and Bhabhi imbued this concept of service to society which continues in their children, with continued teaching in schools, music and dance, cultural lessons and activities in the community. Bhaiya's plays are widely known, with recognition in competition and accolades, but more importantly they carry themes of justice, the complexity of relationships in societies and the role and responsibility of individuals in society. Beyond this, however, they were energizing and entertaining! Most importantly, he believed in honesty, in giving credit for work that others had done and sharing gratitude for building on the shoulders of our parents as a solid foundation of family and community service.

- Sheela Asthana Biman



I am the youngest sibling of Professor Shyam Mohan Asthana so my message is going to be short and sweet.

My family lovingly called him Gappu thus I called him Gappu bhaiya. He was a father figure for me. I have fond memories of spending my childhood, school holidays at his place. They would be like
“Pranam bhaiya”.
“Kaho ji kaisi ho? Theek ho na?”
“Ji bhaiya.”

I actually spent most of my time with,”bachha party,” i.e. with my nephew and nieces. Since age wise I am closer to them. Every time I visited India I went to Arrah, still do.

We all miss his presence, his smile and his,”aye ji.” Most of his sentences started with, aye ji”.

I would give anything to hear his voice asking me how I was.

Shat shat naman!

- Smita Swamy

मेरे प्यारे गप्पू-चाचा
 सभी जानते हैं कि उनका पूरा नाम
 श्याम मोहन अस्थाना है परन्तु दादी ने प्यार से
 उनका नाम 'गप्पू' रखा था। उनका परिवार
 आरा में जाकर बस गया था इसलिए बराबर
 बनारस आना-जाना लगा रहता था। यूनिवर्सिटी
 आरा के महाराजा college में Political Science
 के प्रिन्. थे इसलिए जब भी दारानगर घर
 आते सभी बच्चों को पढ़ाई पर ध्यान देने के
 लिए आग्रह करते। हम पूछते थे कि college
 में पढ़ाने के लिए कितना पढ़ना होगा, तब कहीं
 बहुत मनलगाकर University से कम से कम
 Masters की degree लेनी होगी। नहीं पता था
 कि आगे चलकर हम भी उन्हीं की तरह
 college में lecturer हो जाएंगे। मेरी नौकरी
 की बात सुनकर उन्हें बहुत खुशी हुई थी।

उनका विषय के आतिशक्त कला और
 संस्कृति से विशेष लगाव था। उनके लिखे
 नाटक पटना आकाशवाणी से लगातार प्रसारित

किये जाते थे। बनारस में भी नागरी नाटक मंश्री से जुड़े होने के कारण उनके कई नाटकों का रंगमंच से भी संचालन हुआ। वो मनोविज्ञान के अधिकारी थे जिसके कारण कथानक में स्वभाविकता आती है। अपने विद्रोही प्रकृति के कारण 1942 के राष्ट्रीय मन्दोलन से 1974-75 के बिहार जन-आंदोलन तक सक्रिय रहे। ..

उनकी मुख्य नाट्य रचनाएं पूर्व और पश्चिम (1963) पूर्ण कालिक खरीदा हुआ चेहरा (1983) एकांकी संग्रह नागफनी की डाल (1983) एकांकी संग्रह प्यारे बहो गंगा (1989) एकांकी संग्रह आदिम अग्नि (1989) एकांकी संग्रह वावण तेरे रूप में (1989) पूर्ण कालिक मैदा नाम मथुरा है रंगमंच के सिमटते दाखरे के बीच एक प्रयोगवादी चिन्तन है। इस प्रकार उन्होंने कविता, साहित्य लेखन,



गाटक और सामाजिक-राजनीतिक मिलाप के क्षेत्र में सहायनीय कार्य किया है। ये हमसामी के लिए प्रेरणा का विषय है।

नीरजा अस्थाना
मुजफ्फरपुर
बिहार

Date: _____

(A-1)

Page: _____

प्रथम रविवार

गमा की एक सुबह चाचा बाबूजी से बात कर रहे थे। हम श्रोता थे। चाचा ने पूछा " बनारस में जो Philosophical Schools हुआ करते थे, अब हैं या नहीं ?" बाबूजी ने कहा " दर्शन शास्त्र की पढ़ाई अब विश्वविद्यालयों में होती है। प्रारंभिक स्तर के लिए कुछ संस्कृत विद्यालय जाकर हैं।" चाचा वेदान्त, सांख्य, जडक, आदि स्कूलों के बारे में जानना चाह रहे थे। बाबूजी ने कहा कि वह वैद्यजी (सुझिया निवासी पंडित शिव कुमार शास्त्री) से पूछ कर बता सकते हैं। चाचा वस्तुतः बनारस की पृष्ठभूमि में किसी नाटक का ताना-बाना बुन रहे थे।

हमने कहा चाचा अगर हमारे साथ आप प्राचार्य निवासी जी के घर चलें तो उनसे आपका प्रामाणिक जानकारी मिल जाएगी। प्राचार्य जी संस्कृत विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र पढ़ाते हैं। उनमें घर के हीन सामान वेद विद्यालय हैं जहाँ विद्यार्थी वेद की ऋचाओं का सहकर पाठ करते हैं। चाचा सहमत हो गये।

जपाने किसी नाटक संग्रह (नाम मरे को स्मरण नहीं) के सिलसिले में चाचा बनारस आये हुए थे। कई दिन रुकना था। समय पर्याप्त था। जपाने दिन हम लोग ~~को~~ प्राचार्य जी के घर पहुँचे। शाम का वक्त था। प्राचार्य जी नीचे आये। हमने उनसे चाचा का परिचय कराया। वह काफी प्रसन्न हुए। उन्होंने वेद विद्यालय भी दिखाया। फिर किसी अन्य दिन जपाने का संग्रह मिया क्योंकि उनके संध्या पूजन का समय हो गया था। लेकिन कात्सुचीन से चाचा काफी उत्साहित थे।

चाचा का प्रकाशक पाण्डेयपुर में था। हर दो-तीन दिन बाद वह प्रकृत पढ़ने के लिए बुलाता था। एक दिन हम ~~को~~ प्राचार्य चाचा जब पाण्डेयपुर पहुँचे तो प्रकाशक प्रेस में नहीं था। पता चला दो घण्टे बाद आयेगा। हमने चाचा से कहा कि बंगाल में तिब्बती संस्थान है वहाँ चलते हैं। हमारे एक मित्र वहाँ पहुँचे हैं। समय था हम लोग चल दिये। वहाँ श्री उपेन्द्रा शिवास्त्व से मेट हो गयी उन्होंने हम लोगों को किसी लामा से मिलवाया।

Date: (A-3)

Page: _____

नामा ने हमें बौद्ध दर्शन का शोधार्थी समूह कर बड़ी जंजीरों से बंधा हुआ है। हमने दो सवाल पूछे पहला - बौद्ध दर्शन का सार सूत्र "अप्य दीपा भवः" और बृहदारण्यक उपनिषद् का सार सूत्र "महम ब्रह्मास्मि" जो शंकर के चार महावाक्यों में एक है, में अन्तर क्या है? दूसरा प्रश्न है क्या इसी मसीह ने करुणा और विनम्रशीलता का तत्व भगवान बुद्ध से लिया है? उन्होंने पहले प्रश्न का विस्तार से जवाब दिया जिसमें अभिधम्म पत्रक के लंबे-लंबे उद्धरण थे लेकिन दूसरे प्रश्न के उत्तर को टालने के उपरांत में कहा कि दोनों ही तत्व सर्वकालिक और सर्वमान्य हैं। उन्होंने सारनाथ में रह रहे बौद्ध भिक्षुओं से मुलाकात करने की भी सलाह दी।

चाचा को लगा कि मैं सार्थक रही। घर लौटते समय हमें कहा चाचा पहले पाण्डेयपुर पिसनहरिया का गुलाब जामुन बहुत अच्छा होता था। उन्होंने कहा हाँ चलो देखते हैं। चौराहे पर एक ही नाम के तीन सारनखोर्ड देख कर

पूरे इसमें पुराना वाला दुकान कौन सी है।
किसका उपद्रव होगा? हमने कथा रचा कर
पता चलेगा। हम लोगों ने गुलाब जागुन

खाया, वाकई उपद्रव था। चाचा का
देखा-देखी हम भी पुराने में लया हुआ
शौरा पी कर दुकान से निकले हूँगा

कि हाँ यहाँ अपना सार्थक रहा। उपरा वापसी
से पहले चाचा ने हमें एक कथि सौंप
दिया कि बनारस के दार्शनिक -

उपध्यात्मिक स्कूलों के बारे में जानकारी
लगा करे। न मालूम क्यों इस विषय
पर लिखने की चाचा की इच्छा उपद्रवी
रह गयी लेकिन उनके सौंपे गये कथि ने

हमारे सामने एक ऐसे विषय के उपध्यात्म
का रास्ता खोल दिया जिससे हम

संभवतः अनजान ही रह जाते। हम गौणित
और सांख्यिकीय के विद्यार्थी थे, दर्शन
व उपध्यात्म से कोई रिश्ता नहीं था। वाकई
में हमने मुख्य उपनिषदों का उपध्यात्म किया
जिसके लिए हम चाचा के कृतज्ञ हैं।

साहित्य चर्चा

नारक के उपनिवेश जगद विही चीज में चाचा का मन रहता था जो वह भी साहित्य चर्चा। कविताओं से ज्यादा कहानी और उपन्यासों में उनकी रुचि थी। यह उनके नारकों में भी दिखता है। (उन्होंने) लेखकों के लेखों की तरह पद्यत्मक संवाद शैली नहीं उपन्यास, न ही कालिदास की तरह उपमा या प्रसद की तरह भाषा सौंदर्य पर बल दिया। सीधी, सरल लेकिन चुशीली संवाद संरचना उनका खूबी थी। 18^व - 19^व सदी से ज्यादा वह 20वीं सदी के लेखकों पर चर्चा करते थे। विशेषकर अस्तिववादों लेखकों पर। हेमिंग्वे, काफ़्का, कामू उनके पसंदीदा हैं। मेरे पुस्तक संग्रह में है जो पुस्तकें वह ले गये उनमें जर्मेस्ट हेमिंग्वे की "फार हूम द वेल् टोलस" "जोल्ड्रु मैन एण्ड दे सी", काफ़्का की "मेदामाफेसिल एण्ड अपर स्टोरीज", उपलबेयर कामू की "ग्राउट साइंडर", एमजाइल एण्ड किंगडम" शामिल हैं। इसके उपनिवेश विहोपर मॉडवेल की

जहाँ- हर इंसान- के सपने हो साकार
नी- आनी- हूँ यही- दस्ती- बार- बार-

याद- जाला- हूँ वो- जमाना-
जब- वो- आते- थे खुशियों का खजाना-
हर- चेहरे पे- शिवा उठनी- थी मुस्कान-
फिर-क उठने- थे हर- कदम दौके मस्त- मस्माना-

कालों- के नये- चर्चा
याद- है आज भी उनकी नाटक, कविता और कदानी-
हमेशा रहने- है सबके दिमाग में
उन- जगहों- की यादें, कभी-नही- होती पुरानी-

सुना- रहा- हूँ जिनकी- में- गाथा-
वो- हूँ प्रबल- व्यक्ति- से भरपूर- अहसास- दिवाना-
हो। सही- सम्मान- आपने-

परम- पूज्य- हमारे- पापा- शाम- मोहन- अस्थाना

- सुनील- रंजन- अस्थाना
(Joy)

हमारी स्मृति में दारानगर के पुरतनी मकान को वो
 बगीचे की तरफ का कमरा जिसमें हमारे कम्पा
 (निर्मल कल्याण) और बाबू जी (कृष्ण मोहन
 कल्याण) रहते थे, चाचा जी के
 आगतन पर वो प्रथम बाबू जी के पास
 बैठ कर उनका स्वागत का दाम-चाय और
 चम रहे जहाँ के मुकदमे का लताचाल करते थे,
 उसके उपरान्त कम्पा के चाय-नाश्ता लाने पर
 हम सभी आई-बेटी के उसी कमरे में बैठने
 का विदेश देते और अपना म्या नाटक जो
 उन्होंने लिखा होता. उसको सुनाते थे, उसकी
 सुरक्षा से, जी, सुना बैठ जाओ" खे होती थी
 हमें आज भी याद है. उनका नाटक 'बृहम शरणा
 गच्छामी. के लेखन के साथ प्रत्येक भाग को
 विलाल ने सुनाते थे, नाटक के सुनते वक्त
 किसी को भी कमरे से बाहर जाने की अनुमति
 नहीं थी। नाटक के उस भाग के अंत में
 सभी लोगो से अलग-अलग प्रतिक्रिया करते थे।
 हम लोग बड़े चाव से नाटक सुनाते थे।
 उस वक्त में हम सभी को एकदम नया अनुभव
 होता था। चाचा जी को संयुक्त परिवार में
 पूरा विश्वास था। लताजी की सुरक्षा और
 अन्धकार का देश का विरोध करते थे।

चाचा ने कभी भी अपनी पैतृक सम्पत्ति में हस्त
 नहीं थी बूरी जिम्मेदारी अपने बड़े भाई पर
 पिला जी पर डालकर विशिष्ट होकर नाट्यसहित
 में आगे बढ़ रहे थे। वो बहुत धुमकें और
 शान्त प्रकृत के व्यक्ति थे। उनकी सखी गवीर
 नाट्य के लेखक और उसके मेचर में थी।
 प्रथम बड़े रेडियो पर नाट्य प्रस्तुत होते पर वो
 कामी प्रस्तुत थे। आज में उनके राजनीति शास्त्र
 का प्रोफेसर कम और नाटककार के रूप में
 ज्यादा लोग जानते थे। चाचाजी परिवार में
 सबकी प्रथा सम्मान मदद करते थे और
 समाज सेवा में भी अग्रिम रूप ले रहे रहते
 थे। परिवारिक एकता का पाठ इनसे
 सीखा. एक दुसरे में प्रथा सम्मान मदद और
 एकता बनाये रखने की प्रेरणा इनको उनसे
 मिली. उल्लेख ही सबका साथ और सभी
 को सम्मान की प्रेरणा थी। उनके विचार
 आज भी जिवन्त हैं। आज भी उनकी
 'संवाद' 'ए. जी. सुनो' सुनती रहती है।

कतिपय बार विगत वर्षों में दीपक, रूपा के
 यहाँ मुलाकात हुई। उस वक़्त शारीरिक अस्वस्थता
 के कारण चलने में परेशानी थी। उनकी
 दाखानगर मकान में चलने की इच्छा थी, परन्तु
 पैर में कब्ज होने के कारण यहाँ आने
 में असमर्थता व्यक्त थी। दाखानगर
 मकान में आने का उनका इच्छा अत्यन्त
 रह गयी; इसी आदो में आज भी
 उनका आग्रह 'जिंकार' है।

रवि अस्थाना
 दाखानगर,
 गारागली

प्रो. श्याम मोहन अस्थाना, मेरे मामा, आरा शहर में रहते थे। हम उन्हें प्यार से गप्पू मामा कहा करते थे। यह नाम उन्हें किसने दिया, यह तो याद नहीं, लेकिन बातचीत करने का उनका शौक ही शायद इस नाम का कारण रहा होगा।

वे मेरे मंझले मामा थे। उनसे मुलाकातें भले ही बहुत अधिक नहीं हुईं, पर जितनी भी हुईं, हर बार मन को आनंद से भर देती थीं।

जब भी हम आरा जाते, मामा हमें बैठाकर अपनी दिलचस्प कहानियाँ सुनाया करते। उनके बैठने का अंदाज़ भी निराला था, पैर पर पैर चढ़ाकर, आलथी-पालथी मारकर और एक पैर को हल्के-हल्के हिलाते रहना उनकी खासियत थी।

यह भी उल्लेखनीय है कि मामा कॉलेज में प्रोफेसर होने के साथ-साथ नाटक भी लिखा करते थे, जिनका मंचन भी होता था। उन्होंने कामायनी नाम की एक नाट्य संस्था की स्थापना की थी, जो आज भी सक्रिय है।

हमारे पूरे परिवार में मामा और मामी का एक विशिष्ट स्थान रहा है। हर महत्वपूर्ण काम में उनकी राय ली जाती थी और उन्हें आज भी आदरपूर्वक याद किया जाता है।

- मिनी सहाय

Mera mama ji ke sath sampark us samay jyada hua jab main MA karne unke paas Arrah gayi thi. Mama ji hamesha apne rangmanch ke karyakram ya sangeet ke program mein hamesha busy rahte the.

Bahut se unke students hamesha unse guidance lene aate rahte the aur wo utne hi pyar se sabse milte bhi the.

Meri studies ke bare mein bhi hamesha puchte rahte the aur guide bhi karte the.

Ek baar ki baat hai unka ek drama Patna mein hone wala tha, hum sab wo drama dekhne gaye the unke sath. Morning train se hi Patna chale gaye hum sab fir wo drama wale hall pahuche. Almost pura din nikal gaya sabhi program hone mein, unke drama ki khoob tareef hui, sab ne khoob tareef kiya. Fir night train se humlog wapas Arrah aaye. Din bhar ki bhag daud hui par Mamaji bilkul nahi thake na hi pareshan hue, ye sab Mamaji ka rangmanch ka prem hi tha jo dikh raha tha.

- इरा सहाय

Writing about Prof. Shyam Mohan Asthana is no simple task, as he was a truly multifaceted individual — athletic, intellectual, witty, hardworking, humble, and kind. He was our beloved maternal uncle, and a deeply cherished presence in our lives.

Alongside his teaching career, he had a deep love for literature. He wrote and published several plays, and his dramas and poems were even performed on stage — a reflection of his creative spirit.

He often shared a lighthearted story that always made us smile: even at 70, his hair remained naturally black. People would sometimes question his age, thinking he was pretending to be a senior citizen just to join the senior line — and he'd have to convince them he really was!

Though he is no longer with us, his memories, stories, and the warmth he brought into our lives continue to stay with us. He lives on in our hearts.

- Aradhana Mrityunjaya Rawar

I have very special memories of my Mama. He was the one who supported me when I wanted to pursue a computer hardware course, and he stood by us during the most difficult times, especially after the passing away of my mother, when we were facing financial troubles.

He was caring, supportive, and always ready to help. He also had a playful side; he was natakkaar, and that made him so full of life. My mother was very fond of him, and I grew up seeing the strong bond they shared. He was very fond of "Baigan ki sabji" prepared by my mother, He used to say -"Ae Ji Mumum ,aaj Baigan ki Sabji banao"

I spent a huge part of my childhood in his city, and those days remain some of the best memories of my life. His presence, his guidance, and his affection have left a deep mark on me.

- Anupam Srivastava

“ एक संपूर्ण व्यक्तित्व ”

दृढ़ता बूट बूट भरी, था लोहे का चरित्र,
मेरे पिता के थे परम मित्र,
किया सदा वही जो मन में ठाना,
मेरे अंकल श्री श्याम मोहन अस्थाना।

हैं मन में बाल स्मृति की रेखा,
जो पी. आंदोलन में उन्हें जेल जाते देखा।
भुकना उन्होंने कभी नहीं जाना,

शेसे थे श्री श्याम मोहन अस्थाना।
कला को समर्पित उनका जीवन,
रचे कितने नाटक, किया मंचन,

देखा न उनसा 'कला का दीवाना'
यही तो थे - - - - - ।

धन की रही न चाह पर 'बात के धनी'
विद्वान, लेखक, कलाकर बेहद गुणी,

रच दिया 'काभायनी' का ताना बाना,
शेसे थे - - - - - ।

जीवंत आज भी उनसे हैं उपवन,
अर्पित उनको मेरे श्रद्धा सुमन,

रंगकर्मियों ने उन्हें अपना गुरु माना
श्रद्धेय पूज्य - - - - - ।

मंच के जादूगर,
संवादों के साक्षात्कार,
राजनीति के प्रवचक,
कामायनी के संस्थापक

मंच था उनका जीवन-संग,
नाटक में था अपना-दंग।

हे गुरु, हे कलाकार महान,
शताब्दी वर्ष पर तुम्हें प्रणाम।
श्राव मिलकर जायें जाना,
शित शित नमन अंकल अस्थाना॥

Baba,
Bachpan me hamesha unko,
Natak karte aur karwate dekha.
Bachpan me mujhe unhone,
music se parichay karaya.
Bachpan me main aur Dhawal ladai karte,
To woh Hume 6 feet ki duri par baitha dete.
Bachpan me ek tijori thi unki,
Hume chamanprash milta tha.
Bachpan me dekh kar unko,
Lagta ki nahana faltu hai.
Bachpan me hamesha unke,
Pedicure- manicure karti.
Bachpan me sikha unse,
Maine ki suahrita kya hai hoti .
Bachpan se dekha Lagan unka,
Gaane aur bajana me.
Bachpan me natak karwaya mujhse,
Par main nritaki bani.
Bachpan se badi hui dekha unko,
Meri shaadi me sabse zyada tension me.
Bachpan se hamesha suna unse,
Ki jina 100 tak hai.
Par jab badi hui,
Baba chale gaye
Apni zinda dil yaadein chhod.

- डॉ. वसु वत्सला पंड्या

Mera parichay baba se 2005 goa trip par me hua tha,
Kabhi kabhar idhar udhar ki baatein hoti thi.
Kabhi woh apna natak sunate, kabhi kisse kahaniyan,
Jo baba ka gun tha,
Unke saath rahte huye ek baat sikha thi ki;
Jeevan ko agar anushashan se jiya jaye to zindagi badi hi nahi lambi bhi ho sakti hai.

- डॉ. सुश्रुत पंड्या

काशी में जन्में, पले बढ़े, और आरा को किया जीवन समर्पित,
रंगमंच की दुनिया से करते थे अथाह प्रेम,

सोते जागते रंगमंच की उन्नती और प्रगति के सपने देखते,
घर के हर बच्चे को संगीत और नाटक के लिए प्रेरित करते,
ऐसे थे हमारे **एस एम अस्थाना !!**

ज़िंदादिल, आत्मविश्वास से भरे, बेबाक व्यक्तित्व वाले,
जो ना कभी आंदोलन में पुलिस की लाठियों से डरे ना घर में घुसे चोरों से,

सबको चाय नाश्ता कराने का शौक रखना,
और खुद चाव से दूध रोटी खाना,
ऐसे थे हमारे **एस एम अस्थाना !!**

लोगों की महफ़िल जमा करके एक से एक पुराने किस्से सुनाना,
असंभव है भूलना आपकी श्रीनगर की बस यात्रा का फ़साना,

ना भूल पाएंगे हम आपका रेडियो प्रेम,
टेलीफोन पर जब भी बात करते, आवाज़ इतनी ऊँची,
जैसे उस पार बिना फ़ोन के आवाज़ को हो पहुँचाना,
ऐसे थे हमारे **एस एम अस्थाना !!**

जितनी हमारी दादी अनुशासनप्रिय,
उतने की हमारे दादा **मस्त मौला**,
जिनका हर झगड़े का एक इलाज़ तीन फीट की दूरी बनवाना,

ना होते अगर *एस एम अस्थाना* तो ना कभी बन पाती **श्याम-धवल** की जोड़ी,

होंगे आप दुनिया के लिए **एस एम अस्थाना**
मेरे लिए तो आप सदैव **मेरे प्रिय बाबा** ही रहेंगे।

- डॉ. धवल दीप्तांशु अस्थाना

बाबा के साथ मुझे बहुत वक्त नहीं मिला पर जितना भी समय मैंने उनके साथ बिताया या फिर यूँ कहे की जितना भी मैंने उनको अपने परिवार के माध्यम से जाना है उससे मुझे यही पता चला की उन्होंने अपने जीवन में वही किया जिसमे उन्हें सबसे ज्यादा खुशी मिलती थी।

उन्होंने अपना जीवन कला और साहित्य के लिए जीया।

उन्होंने ना सिर्फ अपने परिवार को बल्कि आस पास वालों को भी प्रेरित किया।

बाबा के जीवन से मैंने सीखा है की जो काम करने से आपका मन खुश हो वह काम करने से कभी खुदको रोकना नहीं चाहिए।

जीवन में खुदके लिए समय निकलना भी अनिवार्य है।

- अमृता सिंह अस्थाना

In Remembrance of Asthana Bhai Sahab

Happy 100th heavenly birthday, Bhai Sahab. Your legacy lives on in our hearts, and we're grateful for the memories we shared.

Today marks a special day to celebrate Bhai Sahab's life and remember his heartfelt love always expressed to me. Wishing him a peaceful 100th birthday in heaven. Bhai Sahab your 100th birthday is a testament to your remarkable life. We're sending love and wishes from afar. Though you're no longer with us, but when thought goes, your loving voice of calling still rings my ear. In my early days I also used to call you as "Kathmandu Wala" Bhai Sahab and later as Asthana Bhai Sahab.

Bhai Sahab your 100th birthday is a milestone that brings both joy and sadness, but am grateful for the time and memories you shared with us.

Your legacy lives on through us, Bhai Sahab.

"HAPPY 100th BIRTH IN HEAVEN"

"REGARDS"

Professor Shyam Mohan Asthana was married to my elder sister Savitri didi.

I was a part of family members attending their marriage.

Though I was very small and have little memory of the occasion but I have seen in family photos and albums that it was one of the most attended marriage in our family in those days.

I recollect his visits in 1950s & sixties that he made at our houses in Patna & Delhi. Both my parents had great love and affection for Bhai Saheb (Professor Asthana).

These were the moments of my early teens that I had the opportunity of coming closer to Bhai Saheb. I very clearly recollect his sense of humor, wittiness and his power of storytelling that he could do so vividly that many marvel at it even today.

Later I met him during the marriage of his son Dr. Deepak at Rajendra Nagar, Patna and felt the warmth of his greetings. He was complete in all respects. A quality which very few have.

I remember interacting with him on varied subjects during his visit after 1986 to Bokaro Steel City when he stayed with us. This was the time when I could mark how knowledgeable & learned he was. I am admirer of his along with many more for his deep rooted interest and contribution in the fields of arts, drama, acting, direction and his fight against evils in the society for decades.

His continuous endeavour of bringing up the level in the fields of his interest has made him immortal not only in Arrah but also in the State of Bihar.

I am extremely happy to note that Dr Deepak is coming up with a souvenir on his 100th birth Anniversary.

I pay my humble homage to the multifaceted Dr Asthana.
May he continue giving blessings to all of us now and forever.

- Suresh Prasad

It is my privilege to write few words about Shyam Mohan Asthana Bhaisaheb.

To me, Asthana Bhaisaheb and Arrah are synonyms. By Arrah, I always mean Shyam Mohan Bhaisaheb and by Shyam Mohan Asthana Bhaisaheb, I mean Arrah. From this simile, one can easily gather that he was a very popular person of Arrah and together with Didi, raised the literary, social and cultural standard of Arrah town.

A very artistic man - there was an art in his style of greeting, style of talking, style of unleashed humor with deep meaning, which people could realise later and cherished it for a long time.

A very learned, talented & multifaceted personality, yet simple to the core of heart. He was a man of principles & was jailed during JP movement for carrying forward the Nationalist feelings, which was in his blood. The glorious ideas, which he possessed not only made him a distinguished and illustrious figure of Arrah town, but the State of Bihar.

I am really fortunate to be related to him and glad to know that during his centenary year celebrations, the theatrical & dramatic Societies organized various competitions involving students, poets, dramatists etc thereby remembering him and applauding the contributions made by him to the Society.

I am overwhelmed by the idea of Dr. Deepak, his son to bring out a souvenir on his 100th birth anniversary.

May his blessings be showered on us so that we take forward his traits and qualities in our day to day life..

- Girish Mohan Prasad

श्री श्याम मोहन अष्ठाना (दिवंगत) यानी मेरे फूफा-ससुर से बहुत बार मिलने का अवसर मिला था। मेरी शादी 'लाल' परिवार में हुयी और उसके बाद मुझे कई बार उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। फौज में एक चीज़ अच्छी है, और वह है वर्ष में दो महीने की छुट्टी, जो जूनियर रैंक में आसानी से मिल जाती है। और जाहिर है कि इसका एक भाग हमलोग पटना, अपने ससुराल में (मेरे ससुर पुलिस में एस० पी० और बाद में डी० आई० जी० रहे), और एक भाग अपने गाँव में, बाबूजी और माँ के साथ, और कुछ समय हमलोग मेरे सादू-भाई के साथ बिताते थे। यह एक पैटर्न बन गया था।

पटना और आरा की दूरी कुछ खास नहीं है। उस समय जब सड़क सामान्य रही थी आरा से पटना डेढ़ घंटे से दो घंटे का सफर हुआ करता था। जब मैं छुट्टी में पटना में रहता था तो कई बार फूफा जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यह मैं इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि फूफा जी आरा में रहते थे। संजाली बुआ जी ने आरा में एक स्कूल की स्थापना भी की थी, और उसके साथ जीवन-पर्यंत जुड़ी रहीं। उनका जब भी स्मरण करता हूँ एक कड़े अभिभावक का चित्र उभर कर आता है। प्रकट रूप से उनका व्यक्तित्व ऐसा लग सकता है किन्तु मन की उदार और कर्मठ थीं। जो ठान लिया सो ठान लिया। इसके ठीक विपरीत फूफा जी का व्यक्तित्व कोमल और स्नेहपूर्ण था। इस वक्तव्य से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि बुआ जी में स्नेह की कमी थी। कुछ लोगों का बाहरी व्यक्तित्व अंदरूनी व्यक्तित्व से बहुत अलग होता है, और कभी-कभी गलत सन्देश दे जाता है। बुआ जी एक शिक्षिका थीं और फूफा जी आरा के सांस्कृतिक समाज के एक अभिन्न अंग (स्कूल में अपना योगदान देने के अलावा)। लेकिन सबसे अहम् बात थी कि फूफा जी एक सफल नाटककार थे। उन्होंने कई नाटक लिखे और उन सभी का सफलतापूर्वक मंचन भी किया और करवाया। इन सभी में निर्देशक के रूप में आदरणीय फूफा जी ही हुआ करते थे। पटना और आरा में कोई खास दूरी नहीं होने की वजह से उस समय उनका आना-जाना निरंतर लगा ही रहता था। मैं उन्ही दिनों से साहित्य, खासकर कविता से जुड़ा रहा और अपनी कवितायें कभी-कभी फूफा जी को सुनाया करता था। वे गंभीरता से सुनते और प्तोत्साहित करते। अभी वापस मुड़कर देखता हूँ तो लगता है वे जरूरत से अधिक ही मेरी कविताओं की प्रशंसा करते।

श्री श्याम मोहन अष्ठाना आरा के सांस्कृतिक समाज में अच्छा-खासा दखल रखते थे। उन्होंने कई नाटक रचे, और उन सभी का सफलतापूर्वक मंचन भी किया अथवा करवाया। आरा का सांस्कृतिक समाज बिना श्री श्याम मोहन अष्ठाना को स्मरण किये बिना अधूरा ही कहा जायेगा।

भावभीनी विनम्र श्रधांजलि

- डॉ. लालजी वर्मा

मैं शरत चन्द्र और पत्नि अंजली चन्द्र (निक नेम अंजू) आदरणीय प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थानाजी की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक संस्करण शेर्यर करना चाहता हूँ। अस्थानाजी मेरी पत्नी के फुफा थे। कई बार उनसे मुलाकात होते रहती थी। जब मैं जबलपुर में मध्यप्रदेश विद्युत मंडल में पदस्थ था तब वे, फुफा, अपनी दोनों बेटियाँ मुन्नी और टुन्नी और एक घनिष्ट दोस्त श्री सहायजी और उनके परिवार के साथ भोपाल जा रहे थे। हमारे अनुरोध पर वे लोग एक दिन जबलपुर स्थित हमारे घर में रुके। विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भेड़ाघाट ले गये जहाँ पावन नदी नर्मदा के दोनों तटों पर विभिन्न रंगों का संगमरमर का पहाड़ है। इसका आनन्द नदी में नौका विहार करके उठाया जा सकता है। उन सभी ने नौका विहार कर इसका आनन्द उठाया।

फिर हम लोगों की उनके और उनके परिवार से भेंट तब हुयी जब मैं, अंजू और अपने किशोरावस्था की पुत्री रूमा (स्वीटी) और पुत्र निशांत (नीशू) के साथ कार से जबलपुर अपने घर देवघर जा रहा था। रास्ते में आरा पड़ता है जहां हम लोग उनसे भेंट करने के लिए एक दिन रुके। उनके, बआ और बच्चियों के साथ समय गुजारना हम लोग के लिए आज भी यादगार है। फुफा और बुआ का प्यार भरा आर्शीवाद पाकर हम लोग अत्यन्त ही आत्मियता के साथ वहाँ कुछ समय बिताया।

एक बार वर्ष 2002 में बनारस के फुफा और बुआ के सुपुत्र डॉ. दीपक यहां आए हुए थे। उस मुलाकात के दौरान मैंने उन्हें बताया कि इन दिनों मेरी पोस्टिंग नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी रायपुर में है। उन्होंने मुझसे विस्तृत जानकारी प्राप्त की जब मैंने उन्हें बताया कि मध्यप्रदेश विद्युत मंडल जबलपुर में, मैं **Executive Director (Engineer in Chief)** के पद पर था। जब वर्ष 2000 के नवम्बर में मध्यप्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ राज्य का गठन हुआ। उसके बाद मेरी सेवायें छत्तीसगढ़ शासन को सौंपी गयी और नवनिर्मित छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत मंडल के प्रथम सचिव के पद पर मेरी पोस्टिंग हुयी। छत्तीसगढ़ के नया राज्य बनने पर प्रथम राज्यपाल के रूप में श्री दिनेश नंदन सहाय, सेवानिवृत्त **IPS, DGP** बिहार से थे, की पोस्टिंग हुयी। जब मैंने उन्हें यह जानकारी दी तब उन्होंने बताया कि श्री दिनेश नंदन सहाय के आई.पी.एस. चयनित होने के पहले वे फुफा के साथ आरा कॉलेज में प्रोफेसर थे और उनके अच्छे दोस्त भी थे। मैंने उन्हें जानकारी दी कि सचिव और छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल के टेक्निकल डायरेक्टर के पद सम्भालने पर मैं शासकीय कार्य के संबंध में राज्यपाल महोदय से मिलता रहता हूँ। इसे जानकार उन्होंने मुझे अपने द्वारा लिखित दो पुस्तके दी और कहा कि मैं स्वयं इसे राज्यपाल महोदय को सौंपू।

रायपुर वापस आने पर मैं उनके आदेशानुसार अंजू के साथ गैरकार्यालयीन भेंट के लिए राज्यपाल महोदय के ए.डी.सी. को फोन किया कि इस बार मैं **non-official capacity** में राज्यपाल के दोस्त प्रोफेसर अस्थाना जी द्वारा दी गई किताबें देने के मिलना चाहता हूँ। उनके ए.डी.सी. द्वारा इस संबंध में राज्यपाल महोदय से चर्चा कर शीघ्र ही उनसे भेंट की व्यवस्था की गयी। निर्धारित समय में मैं अपनी पत्नी के साथ राज्यपाल भवन पहुँचा। सरकारी अधिकारियों की गाड़ियों की एन्ट्री राज्यपाल भवन के प्रांगण में ही निर्धारित स्थल पर पार्क की जाती है। मेरा ड्राइवर भी उसी के अनुसार वहाँ कार पार्क करने लगा तभी **security** द्वारा कहा गया कि आप अपनी कार सीधे राज्यपाल भवन की सामने पोर्च में गाड़ी खड़ी करे। तदानुसार ड्राइवर कार पोर्च में ले गया जहाँ ए.डी.सी स्वयं उपस्थित थे। उन्होंने हम दोनों को ड्राइंग रूम में ले गए तब तुरन्त ही माननीय राज्यपाल महोदय और महोदया भेंट करने के लिए आ गए। अभी तक जितनी बार मेरी मुलाकात राज्यपाल महोदय से हुई वह शासकीय कार्य के संबंध में ही होता था लेकिन इस बार का अनुभव कुछ अलग ही था। इस बार मैं उनके दोस्त प्रोफेसर अस्थानाजी के दामाद और भतीजी के रूप में मिल रहा था। बड़ा ही भावुक क्षण था। चाय नाश्ता के बाद हम दोनों वहाँ से विदा हुए। फिर एक आश्चर्यजनक बात हुई। राज्यपाल महोदय और महोदया हम दोनों को छोड़ने के लिए स्वयं पोर्च तक आए और कार के दोनों पिछले दरवाजे के पास खड़े होकर हमें विदाई दी। अविस्मरणीय।

हम सभी श्रेद्धय अस्थाना फुफा को विनम्र श्रद्धांजली अर्पित करते हैं, शत-शत नमन करते हैं।

- शरत चंद्र

(1)

Prof Shyam Mohan Asthana, my Phuphaji, was an individual with multifaceted personality. I had the opportunity opportunity to ~~spend~~ valuable association with at Mahadeva Road, Ara.

~~He was a writer.~~

He started his career as a lecturer in Tribhuvan University, Kathmandu, ~~to~~ Nepal. Later, he joined Maharaja College Ara, Bihar as Professor in Political Science. Ⓟ

He was a writer and also socio-political activist. He took active part in all social activities whose aim was to eradicate social evils in the ~~same~~ society.

(2)

He ~~was~~ played an ~~also~~ active role in the 'Social Revolution' led by ~~Dr~~ Jai Prakash Narayan during the Emergency period.

He ~~was~~ taken into custody along with ~~J. P. Narayan~~ and had to ~~serve~~ ^{spend} in the Bankipore Jail Patna. Even after his release he kept the spirit of social activist alive, which reflected in the ~~to~~ books, plays that he wrote. To name ^a few books written by him are, 'Kharida Hua Chota Chema', 'Nag fani Di Daal', 'Adim Agni', 'Aazadi ~~ke~~ Kitni Door' ~~etc~~. Many of his plays were broadcasted by All India Radio, Patna duly enacted ~~by~~ by their

Even after his ~~no~~ release, ~~from~~ he kept the ~~same~~ spirit of social activist alive which reflected in the plays, books which ~~were~~ ^{became} very popular he wrote & were ~~pub~~ published in ~~bot~~ book form. To name a few are, "Kharida Hua Chehra", "Nag Fani Di Daal", "Adim Agni", "Azadi Kitni Door" ~~etc~~, and many more.

His plays ~~written~~ were broadcasted broadcasted by All India Radio, Patna duly enacted by their radio artists.

To sum up his personality - he was a true ~~phiso~~ philanthropist, and popularly known as

"Aachana Sahib".
"If everyone is moving forward together, then success takes care of itself."

— : 0 : — Henry Ford



I have lovely memories of Manjhla Phupha. During the years 1982 to '87, when I was in the Bihar Health service, posted at Koelwar and living and practicing in Patna, I had the good fortune of meeting him in Patna during his several visits there and our occasional visits to Arrah.

He was a very lively and learned person with a passion for drama. He would both write the script and conduct stage plays. He was a highly respected Professor at Arrah.

I personally had the good fortune of having several chats with him on all kinds of subjects - drama, politics, our social structure, etc.

He was an eminent person, gracious and kind, and will always be very fondly remembered.

May his soul rest in peace 🙏🙏

- Dr. Ajay Sinha

फूफाजी की 100वीं जयंती पर शत शत नमन। एक राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर होते हुए भी, उन्होंने हिंदी साहित्य में अपनी अद्वितीय पहचान बनाई।

उनकी हिंदी नाटकों की रचनाएँ और उनके नाटकीय ढंग से कविता पाठ सुनना एक अविस्मरणीय अनुभव था।

आरा में हमारे साथ बिताए गए समय में उनकी प्रस्तुतियाँ हमें आनंद से भर देती थीं। लोहा सिंह की कथा सुनाना भी एक विशेष आनंद था।

उनकी प्रेम और दानशीलता हमेशा याद रखी जाएगी। फूफाजी की स्मृति में यह श्रद्धांजलि अर्पित है।

- मधुप सिनहा

Today I think of Dear Phuphaji not only as an academic, poet, and playwright, but a beloved member of our family. His achievements were many, yet what stands out most is the warmth and depth he brought into our lives.

His love for knowledge was never just about books or classrooms—it was about sharing, inspiring, and encouraging others to see the world with fresh eyes.

As a poet, his words carried tenderness and truth, often revealing feelings we ourselves could not put into words.

As a playwright, he gave voice to stories that lingered in the heart long after the curtain fell.

But beyond all this, he was ours. His wisdom was gentle, never heavy; his presence, always reassuring.

We will miss his words, his wit, and his way of making life seem richer just by being in it.

Yet, in so many ways, he remains with us—in the lines of his poetry, in the echoes of his plays, and most of all, in the love he gave so freely.

In fond remembrance

- Dr. Arun Singh (Raju) & Geeta

आज हम सब अपने पूज्यनीय मौसा जी, स्वर्गीय प्रो. श्याम मोहन अस्थाना जी को उनकी शताब्दी जयंती पर
विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

आप राजनीति शास्त्र के एक प्रख्यात प्राध्यापक रहे और शिक्षा जगत में आपके योगदान को सदैव आदरपूर्वक याद
किया जाएगा। अकादमिक जीवन से परे आपकी बहुमुखी प्रतिभा ने आपको विशिष्ट पहचान दिलाई। रेडियो के
"हवामहल" कार्यक्रम में आपकी सक्रियता, नाटक लेखन में आपकी गहन रुचि और राजनीति के प्रति आपका
विशेष लगाव आपकी जीवंत और सृजनशील व्यक्तित्व के प्रमाण हैं।

भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त टी. एन. शेषण के कार्यक्रम में आरा से छपरा तक आपकी उपस्थिति, आरा शहर को
एक नई पहचान देने वाला स्मरणीय प्रसंग रहा।

आपकी जीवन यात्रा में मौसी स्वर्गीय सावित्री अस्थाना जी का सहयोग हर कदम पर आपके साथ रहा, जो आपके
व्यक्तित्व की शक्ति और संबल बना।

आज भी हमें और संपूर्ण मैक्लोडगंज महा परिवार को आप पर गर्व है। आपकी शिक्षाएँ, आपकी स्मृतियाँ और
आपके आदर्श सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

आपको शत-शत नमण 🙏🙏🙏

- डॉ. राकेश प्रसाद

कभी कभी जीवंतता किरदार से भी ऊंची होती है **पुण्यश्लोक प्रातः स्मरणीय श्याम मोहन अस्थाना** आदरणीय फूफा जी आज उन्हें शब्दों में बांधना कितना दुरूह जान पड़ता है जैसे तो उनकी पहचान रेडियो नाटककार के रूप में भी थी। उन्होंने अपने जीवन में कई नाटक लिखे, जिनमें से कुछ प्रसिद्ध हैं:

- मेरा नाम मथुरा है
- बुद्धम शरणम् गच्छामि
- अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो वा
- तुफान
- बुधुआ की शादी
- सपना खरीदोगे
- दूसरी सृष्टि

उन्होंने लगभग पांच दशकों तक नाटकों का लेखन और निर्देशन किया। उनके नाटकों की सराहना राष्ट्रीय स्तर के प्रसिद्ध नाटककार एवं आलोचक डॉ. राम कुमार वर्मा ने की थी उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर आरा में नाट्यांजलि प्रस्तुत की गई थी, जिसमें उनके लिखे नाटकों का मंचन हुआ था। साहित्य शब्द, साहित्य भाव, और साहित्य मंचन के बीच इतनी सपाट और स्पष्ट रेखा खींचना उनके व्यक्तित्व का हिस्सा रहें हैं स्नेह दूरदर्शिता मृदुभाषी और दैवीय सोच जैसे माता सरस्वती का आचरण उनमें समाया हो यह सदगुण और सदबुद्धि उन्हें आज भी प्रासंगिक बनाता है।

सच में आज भी उनको शब्दों में बांधना कितना बड़ा असफल भागीरथी प्रयास कर रहा हु यह मेरी अंतरात्मा ही जानती है।

शब्दांजलि श्रद्धांजलि न जाने किन भाव से उनको नमन अर्पित करु यह भी कठिन है और अब जब जीवन अस्ताचल की ओर है और फूफा जी को शब्दों में समेटना; आने वाले किसी भी कालखंड में असंभव ही रहेगा।

हृदयगत नमन! 🙏

- सुनील लाल

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना, मेरे मँझले मौसा बहुत ही विलक्षण व्यक्तित्व के मालिक थे। अपनी संस्कृति, कला, नाटक, साहित्य एवं कविता के प्रति उनका विशेष रुझान था।

मुझे अच्छी तरह याद है, सन् 1990 में मेरे पति, जो आर्मी अफसर हैं, उन दिनों कारगिल में पोस्टेड थे और कारगिल एक फील्ड स्टेशन होने के कारण मैं अपने बच्चों के साथ लखनऊ में सेपरेटेड फैमिली कैंपस में रह रही थी। एक दिन वे मेरे घर आए।

उनका रुझान समझते हुए मैंने उन्हें अपने पति की कविता की डायरी दिखाई। कविताएं पढ़कर वे बहुत खुश हुए और भेंट स्वरूप उन्होंने एक कविता उस डायरी में लिख दी। मैं उस कविता की फोटो यहां संलग्न कर रही हूँ। तथा भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि उनका परिवार खुशहाल रहे।

- लता शरण

राही चलना, चलते रहना

चाहे कितनी दूर सफर ही

चाहे कितनी दूर नगर ही

राही चलना

श्याम मोहन प्रस्थान

२८. ११. १०।

हमारे परम प्रिय पूज्य मौला स्व. प्रो. श्याम मोहन
 अष्टथाना। हमने जबसे होश सम्हाला, इनको
 महफिलों में / सम्मेलनों में लोगों को अपने हाथ
 एवं अज्ञानमय कृतिमाओं और पाठ द्वा
 सम्प्रेषित / रोमांचित करते जाया। जिस
 किसी बैठक में हमारे श्रेष्ठ मौला जी
 हों किसी को समय का भाग नहीं होता
 कब दोपहर से शाम हो गई, या कब
 शाम से रात। लोगों को उनकी कृतिमाओं
 में इतना रस और आनंद की अनुभूति
 होती थी कोई भी अपनी जगह से
 हिलना नहीं चाहता।

दो ऐसी घटनाएँ जिसके मैं भी हिस्सा
 था जिससे मौला जी ने "चारा बोखला"
 पर अच्छी अपने हाँद सुनाये थे। वही
 दो घंटे के अकेला इन्हेने चारा बोखला
 पर कब्र पाठ किया और हमसबमी लोट-
 पेट होते रहे।

दूसरी घटना है जब उनसे पटना में एक
 कार्यक्रम में भेंट हुई। उस वक्त वक्त में
 धर्मवाद में कार्यरत था। मैंने उनको
 बताया कि मैं धर्मवाद में हूँ। फिर क्या
 था धर्मवाद से धर्मवाद तक का

सफ़र अत्यंत मनोरम और हास्य
से पूर्ण रहा। यह बँक शाम की थी
जो देर रात तक चली चलती रही।

मैला जी मेरी अंतिम मंठ वर्ष 2011/12
में हुई जब मैं रामगढ़ कैंट में कार्यरत
था एक फैक्ट्री देखने आर के पास
गया था ~~वहाँ~~ मैला जी से मिला।
उन्होंने बड़े स्नेह से विचारों। दरसारी
बातें हुई एवं चलते समय उन्होंने
अपनी एक रचना (पुस्तक) बि
~~की~~ "वीवियों की हडताल" दी।
पुस्तक की शिर्षक बताती है कि
मजदूर क्या है। मैंने वो हरे
चटोटे सम्हाल कर रखा है।
श्रेष्ठ मैला जी को शत. शत. नमन।

राजू

My Manjhala Phoopaji was an Educationist, Playwright, Dramatist and an inspiration for many.

My memories of him are from over 35 years ago. Both him and my manjhali phua would visit us at our house in Rajendra Nagar, Patna. They were close to my parents. Their weddings were 2 days apart in July, 1951.

He was a man of few words. He was humble and unassuming. I recall that he sat cross legged on the sofa and it made me marvel at his suppleness.

He was well respected by all. He was a strict disciplinarian, upright, principled and private.

He devoted his life to education and later his passion was writing. He participated in 'Kavi Sammelan.

He had firm political views as a BJP member. He wrote, directed and organized stage performances. He was a family man and spent most of his life in Arrah.

I am looking forward to reading the digital version of his life and people's memories of him.

- Dr. Ashok Kumar Sinha

जब भी आराम से बैठा रहता हूँ, सभी चिंताओं से दूर, तभी बीते पल खास कर स्कूल के दिनों में बीते यादगार लम्हें एक एक कर स्वाभिक रूप से स्मरण होने लगते हैं। उन्हीं यादों से अनायास ही मुझे अपने मंझले फूफा, प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना की छवि आँखों के सामने आ जाता है। अक्सर उनका हमलोगों के घर गया जी में आना, उन्हें अपने महाराजा कॉलेज, आरा से संबंधित कार्य हेतु मगध विश्वविद्यालय, गया जी में जाने के दौरान होता था। उस समय मैं स्कूल में शिक्षा ग्रहण किया करता था। मोबाइल का जमाना तो था नहीं। बिना कोई पूर्व सूचना दिये ही उनका आना होता था। एका एक उन्हें अपने घर में आया देख एक अलग खुशी की अनुभूति घर के सभी सदस्य में होता। फूफा पाठन के अलावा नाटक का लेखन भी किया करते थे। अक्सर उनके द्वारा लिखित नाटक का आकाशवाणी, पटना से रेडियो पर उन दिनों हमलोग सुना करते थे। कभी - कभी फूफा का आगमन जब हमलोग के घर गया जी में होता था, उसी दौरान रात आठ बजे के करीब उनके नाटक का ब्रॉडकास्टिंग रेडियो पर हुआ करता था। काफी बार हम सभी लोग फूफा के साथ ही उनके द्वारा लिखित नाटक उन्हीं के सामने रेडियो पर सुना करते थे। जब रेडियो पर स्वर आता था कि अब आप 'प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना द्वारा लिखित नाटक —' सुना करते थे तो फूफा को सामने देख मैं काफी रोमांचित व गौरवान्वित महसूस किया करता था। नाटक का ब्रॉडकास्टिंग समाप्त होने के बाद फूफा द्वारा उस नाटक का विश्लेषण करना तो और भी रोचक व अभुतपूर्व रहता था। मेरा अपना स्मरण फूफा को एक राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर से ज्यादा नाट्य लेखक के रूप में ही आता है। नाटक लिखना, उस नाटक को दिशा देना, विभिन्न कलाकारों को संवाद देने का तरीका बतलाना, यह सब गुण मेरे फूफा में कूट-कूट कर भरा था। अपने जीवन में ऐसे कलाकार मुझे अभी तक नहीं मिले हैं।

मंझले फूफा से मेरा अंतिम मुलाकात बनारस में उनके पोते की शादी के दौरान हुआ था। सच कहूँ, तो मेरा उस समय अपनी पत्नी, पुतुल के साथ बनारस जाने का मकसद फूफा से उनके एकानवे वर्ष के करीब होने पर, उनका दर्शन करना व आशीर्वाद प्राप्त करना भी था। मेरा मानना है कि बड़ों का दिया आशीर्वाद कभी खाली नहीं जाता।

वैसे यह दुनिया एक रंगमंच ही तो है। हम सब एक कठपुतली के समान हैं जिसकी डोर ऊपर वाले के हाथों में बंधी है। वह जब - तब, यहाँ - वहाँ, जैसे - तैसे, हमें घूमाता है। तभी तो जिंदगी में सुख - दुःख, आशा - निराशा, सफलता - विफलता, सुगमता - संघर्ष आदि आते - जाते रहते हैं।

फूफा के सौ वर्ष के वर्षगांठ पर मेरे तरफ से उन्हें अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि। सादर प्रणाम।

मिन्दू

मेरे प्यारे एवं पूज्यनीय अस्थाना मौसा जी, आपको जनम शताब्दी पर शत शत प्रणाम। आज इस महत्वपूर्ण दिवस पर आपके प्रति मेरी कुछ यादें हैं जो मैं शेर करना चाहती हूँ।

जब भी आपका और मौसी का पटना आना होता था तो लगता था कि अब अच्छी अच्छी कहानियां सुनने को मिलेगी।

मौसा का हमेशा पटना रेडियो स्टेशन के हवामहल प्रोग्राम में कहानियां आती तो हमसब लोग घर में रेडियो पर मौसा का नाम सुनने के लिए एकदम उत्साहित रहते थे।

वो बहुत ही विद्वान तो थे ही ओर दिल के बहुत उदार भी थे।मौसा आपकी याद हमेशा आती है और आती रहेगी।

उन्हें हम बच्चों से बहुत लगाव था। उनके जैसा प्रतिभावान व्यक्ति होना बहुत मुश्किल है।

मौसा आपको शत शत नमन।

- सुनीता कुमार

As I think of respected Asthana Mausaa, a smile comes on my face when I recall his extremely simple, pleasant, happy go lucky attitude in life.

He had small wants and desires, a man who wanted to dedicate his life to Art, Literature and Drama, was equally enthusiastic about Classical Music, Dance.

The house vibrated with tunes and sounds of Dholak, tabla, singing, harmonium. Needless to say, it bustled with people's laughter and joy. And he was a brilliant Professor too, I can vouch for his vast knowledge of Political Science Theory paper as I got tutored by him and won Distinction in Pol Theory paper in IA exam, way back in 1982.

He was all ears to poetry, Mummy would recite her self composed poetry but had to listen to his comments on improving it. I once took his help in writing lines for 'Meri Pasand' Programme for Patna Radio Station and how poetic how beautiful were those lines.

In fact the Programme Organizer got tempted to take the paper but I refused. I wish I had kept that paper with me. Many years later whenever we met at some wedding his only request would be Seema, 'Tum Ranjeeshe sahi Gao,' then he would tell people around, introducing me and saying "ye bahut achaa gaati hai." Such words of praise coming from a Perfectionist was a real compliment for me.

Mausaa was a person who was far away from being wordlywise but a pure soul, had no expectations from anyone, just wanted to be his artistic self.

That's why he is immortal and remembered by so many of us.

On his centenary birthday I offer my Shradhanjali to him, wishing him happy times wherever he is today.

- Dr. Prerna Sinha

डॉ. श्याम मोहन अस्थाना (हमारे चाहते मंझला फूफा), एक ऐसी शख्सियत जो आरा से निकल कर अपनी खुशबू पुरे जहाँ में कुछ इस तरह उन्होंने फैलाये कि जो भी उनके सम्पर्क में आया वो उनकी कलात्मक विलांछनता से अभीभूत हुआ।

राजनीती शास्त्र के व्याख्या रहे और हमेशा इस सिलसिले में मगध विश्वविद्यालय बोधगया, उनका आना जाना बना रहता था और इस कारण मुझे भी उनका सानिध्य प्राप्त हुआ।

एक ऐसा नाटककार जिसके हर शब्द एक जीवंत दृश्य को सामने ला कर रख देता। जब अपने लिखे नाटकों को परिवार के सदस्यों के बीच वर्णित करते थे तो शायद ही कोई अपनी जगह से उठना चाहता। मेरी माँ श्रीमती रेन् सिन्हा जब तक अपने कार्य से निश्चिन्त नहीं हो जाती तब तक अस्थानाजी अपने नाटक का विवेचन शुरू नहीं करते थे।

पूरा परिवार के द्वारा इतना भाव विभोर हो कर उनकी नाटक के पात्र को सुना जाता। उनके द्वारा लिखे नाटक "मेरा नाम मथुरा" में झूनिया नाम की लड़की की कहानी है। "नागफनी की डाल" एक मध्यम वर्गीय प्रधापिका की कहानी को बखूबी दर्शाया गया है। "बाजार भाव" में कितनी आसानी से आज की व्यापारिक मानसिकता को दिखाया गया है।

बहुत ही विलक्षण बुद्धि के व्यक्तित्व जिसका कोई तोल नहीं। आजीवन अपने रेडियो नाटक के अलावा रंगमंच के लिए समर्पित रहे। मेरे पिता प्रो कृष्णानंद सिन्हा (जिन्हे प्यार से अस्थाना जी कचू बाबू पुकारते थे) उनका एक विशेष लगाव था क्योंकि रिश्ता ही कुछ ऐसा था।

आज उनके पुत्र डॉ. दीपक कुमार एक प्रतिष्ठित नेत्र रोग विशेषज्ञ के रूप में वाराणसी में कार्यरत है, मधुरभाशी और मजाकिया व्यक्तित्व। चूंकि मैं भी इसी परिवार का अंग हो तो ये अपना सौभाग्य समझता हूँ।

उनकी पुत्री, कावेरी मोहन, जिसे प्यार से सभी परिवार में "टुन्नी" कह कर पुकारते हैं, एक बहू-प्रतिभाशाली गायिका है और अपने सुरिली आवाज़ से आरा के सर जर्मी पर अपने लोक गीतों के माध्यम से अपने पिता के आदर्शों और परम्परा को आगे बढ़ा रही हैं।

मेरी हमेशा से शुभकामनाये अस्थाना परिवार के लिए

- डॉ. अमित कुमार सिन्हा

तो मौसा ने समझाया कि राका का अर्थ है सारे ग्रह, और तारे। और फिर बताया कि सारे ग्रहों का स्वामी है राकेश, यानी चांद।

अब हो गयीं दो बातें – पहली तो ये कि मौसा की किताबें प्रकाशित हुईं, और फिर, उन्होंने बताया कि मेरे नाम का मतलब चांद क्यों है! तो स्थापित साहित्यकारों को पढ़ पढ़ कर जो मैं बड़ा दानिशमंद मानने लगा था खुद को, तो कुछ सीढ़ी नीचे आया। और मौसा का कद बड़ा लगा।

1984 में पापा सासाराम से राँची आ गये और आरा से सम्पर्क लगभग छूट गया। बीच में एकाध बार शादियों में गया, बस।

फिर मैं खुद राजनीति विज्ञान का प्राध्यापक बन गया, मध्य प्रदेश आ गया, और छतीसगढ़ बनने के बाद रायपुर आ गया। अरसा बीत गया। इस बीच मौसा भी नहीं रहे यह सूचना भी मिली! एक दिन रायपुर से पटना जाने वाली ट्रेन से अपने कॉलेज जा रहा था। एक ग्रुप था जो बैठने की जगह देने को तैयार नहीं था। अचानक उनकी बातों से लगा कि वे आरा जा रहे हैं और कॉलेज से ही सम्बन्धित लोग हैं। मैं ने मौसा का नाम लिया, और वे चौंक गये किरायपुर का कोई व्यक्ति उन्हें जानता है! और जब मैं ने बताया कि मेरे मौसा थे तो मुझे न केवल बिठाया, मेरा नाम पता भी लिख कर ले गये। मौसा के जाने के इतने अर्से बाद भी उन्हें जानने, और मानने, वाले लोग अब भी थे आरा में!

रायपुर में कुछ कलाकारों से भी सम्पर्क है। और आयोजनों में दर्शक की हैसियत से शामिल होता ही हूँ। इतना कि लोग पहचान लेते हैं। एक बार मैं ने यूँ ही कहा कि एक नाट्य संस्था है कामायनी...। और मेरी बात पूरा होने सा पहले ही पूछ बैठे, आप कामायनी को जानते हैं? मैं उनसे कहने वाला था कि उन्हें अपने कार्यक्रमों और स्पर्द्धाओं में बुलाइये, और वे मुझसे ही कहने लगे कि कोई कॉन्टैक्ट हो तो उन्हें आने को कहिए न!

मेरे लिए ऐसी घटनायें सम्मोहक, मेस्मेराइज़िंग, जैसी हो गयीं। मैं जिनके साथ रहा, जिनसे बातों की, और लगता था निहायत ही घरेलू और आम व्यक्ति हैं, उनका यश उनके जाने के सालों बाद भी जीवित है! और तब मुझे लगता था, खाली बैठों का टाइमपास है। मैं निश्चित ही गलत था।

किसी छोटी जगह से इतना बड़ा मुकाम बना लेने की शख्सियत का नाम है श्याम मोहन अस्थाना, मेरे मौसा। आरा, जो तब कुख्यात था अपराधों और अपराधियों के लिए, वह नाट्य विधा के आसमान पर भी चमकता था, सितारे की तरह, राका की तरह। केवल उन्हीं के कारण। कामायनी अब भी जीवित है, श्याम मोहन अस्थाना भी उसके साथ सांस ले रहे हैं। बस, मौसा अब नहीं रहे।

- डॉ. राकेश डेढ़गर्वे

आदरणीय मौसा जी (स्वर्गीय श्याम मोहन अस्थाना) को उनकी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उनको हृदय से नमन कर रही हूं। उनके सानिध्य में मैंने कुछ वक्त गुजारे हैं। उसी वक्त के कुछ संस्मरण आलेखबद्ध कर रही हूं।

मैंने अपनी माध्यमिक शिक्षा ग्रहण के दौरान कुछ समय आरा में व्यतीत किया है।

वहां पर आदरणीय मौसा जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। वहां पर मैंने मौसा जी के साहित्यिक साधना को नजदीक से देखा है।

उनकी लेखनी बहुत ही शसक्त है। उनके नाट्य विधा की मैं बहुत बड़ी प्रशंसक हूं। उनके नाटक बहुत ही चुटिले और समाज में व्याप्त कुरीतियों पर बहुत जबरदस्त कुठाराघात करते थे।

उनके नाटक समाज को मार्ग दर्शक की भूमिका निभाते हैं। उनका व्यक्तित्व बहुत ही विशाल था। उनके कई नाटक देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

उनकी प्रस्तुति कितनी दमदार होती थी जिससे मैं बहुत प्रभावित हूं। उनका विनोदपूर्ण स्वभाव, मृदु वचन, अपनों के प्रति सहृदयता, अपने कार्यों के प्रति समर्पण एवं कठोर अनुशासन सभी के लिए अनुकरणीय है।

मैं पुनः मौसा जी को शत शत नमन कर रही हूं।

- ममता सहाय अस्थाना

राजनीतिक /सामाजिक

प्रो. श्याम मोहन अस्थाना : एक स्मृति चित्र

जीवन के विविध क्षेत्रों में आरा शहर को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने वाले जो लोग हमारे जनपद की स्मृतियों में हमेशा बन रहेंगे, उन दर्जनों लोगों में एक चमकदार नाम प्रो. श्याम मोहन अस्थाना का भी है। हिंदी नाटक और रंगमंच के क्षेत्र में आरा को एक विशिष्ट पहचान दिलानेवाले सुप्रसिद्ध नाटककार प्रो. श्याम मोहन अस्थाना का जन्म सन 1924 ई. में 29 अक्टूबर को वाराणसी (ऊ.प्र) में हुआ था। स्वाभाविक रूप से उनकी शिक्षा-दीक्षा भारत की सांस्कृतिक राजधानी कही जानेवाली उस महानगरी में ही हुई थी। उसके बाद आजीविका की तलाश में नेपाल पहुंचे थे।

अपने जीवन के कुल 32 वर्षों की अवधि पूरी करने के बाद प्रो. अस्थाना सन 1956 में महाराजा कॉलेज के राजनीति विज्ञान विभाग के प्राध्यापक के रूप में आरा आए थे। उसके बाद से वे हमेशा के लिए आरा और बिहार के होकर ही रह गए। सन 2015 में 24 दिसंबर को उन्होंने आरा के मानसरोवर कॉलोनी स्थित अपने आवास पर जीवन की अन्तिम सांस ली और हमेशा के लिए अपने परिजनों, सहयोगियों, शिष्यों, संस्कृतिकर्मियों और चाहनेवालों की स्मृतियों में अमर हो गए। अभी पिछले ही वर्ष आरा, वाराणसी आदि कई शहरों में समारोहपूर्वक उनकी जन्म शताब्दी मनाई गई थी।

प्रो. अस्थाना बहुआयामी व्यक्तित्व संपन्न जाने-माने शिक्षक-रचनाकार थे। वे राजनीति शास्त्र के विद्वान तो थे ही, अपने विषय के बेहद सफल और लोकप्रिय शिक्षक भी थे। इसके साथ ही अपने समय की सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों में भी उनकी सक्रिय सहभागिता थी। 1974 के जेपी आंदोलन के वे अग्रिम पंक्ति के संगठनकर्ताओं में से थे।

प्रो. श्याम मोहन अस्थाना एक समर्पित साहित्यकार थे। जैसे तो उनकी पैठ साहित्य की कई विधाओं में थीं किंतु नाटक और एकांकी लेखन के क्षेत्र में उनकी गहरी रुचि थी। इन दोनों ही विधाओं में उन्होंने प्रचुर मात्रा में लेखन किया। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, अपने पहले प्रकाशित नाटक ' पूरब और पश्चिम ' के बाद उनकी विशेष पहचान बनी और धीरे धीरे वे चर्चा में आने लगे। उसके बाद उनके लगभग आधा दर्जन के करीब नाटक और एकांकी - संग्रह प्रकाशित हुए जिससे जीवन के उत्तरार्ध में राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान मिली।

अस्थाना जी (आरा शहर में वे इसी नाम से लोकप्रिय थे) जैसे कुछ विशिष्ट नाटककारों में शामिल थे जिनकी कृतियों को पाठकीय लोकप्रियता भी हासिल हुई और मंचीय सफलता भी। शुरू में तो हिंदी नाट्यालोचन के क्षेत्र में उनकी अनदेखी की गई लेकिन बाद में उनकी नाट्यकृतियों पर कई समीक्षाएं और आलेख प्रकाशित हुए। हिंदी नाटक और एकांकी लेखन के इतिहास में भी उन्हें सादर स्मरण किया गया है।

प्रो. अस्थाना एक संपूर्ण नाटककार थे। उन्होंने शाश्वत महत्व के विषयों पर भी नाटक लिखे और बिल्कुल सामयिक और तात्कालिक महत्व के विषयों पर भी। पुराण, भारतीय इतिहास, दर्शन, बौद्ध और जैन धर्म से संबंधित विषयों, राजनीति, देशप्रेम, श्रृंगार, सामाजिक जीवन की समस्याओं- नारी उत्पीड़न, जातिगत भेदभाव, बढ़ती बेरोजगारी, युवा असंतोष आदि गंभीर विषयों के साथ ही उन्होंने सामान्य, हल्के-फुल्के विषयों पर हंसने हंसाने वाले विषयों पर भी कई चर्चित कृतियों की रचनाएं की।

यही नहीं, उन्होंने बच्चों के लिए भी कई नाटक लिखे जो सरस्वती पूजा, स्वतंत्रता दिवस, शिक्षक दिवस, विद्यालयों के स्थापना दिवस आदि अवसरों पर प्रस्तुत किए जाते थे। वे प्रहसन भी लिखते थे और नृत्य-नाटिकाएं भी।

इसका कारण यह था कि वे एक नियमित और समर्पित लेखक थे। वे जहां कहीं भी रहते थे, प्रतिदिन समय निकाल कर कुछ न कुछ लिखते जरूर थे। मुझे याद है, 74 आंदोलन के दौरान जब हम दोनों गुरु-शिष्य मीसा बंदी के रूप में आरा के अन्य कई साथियों के साथ हजारीबाग जेल में बंद थे, तब भी सर (प्रो.अस्थाना) सुबह प्राणायाम-योगासन के बाद प्रतिदिन चाय पीकर लिखने के लिए बैठ जाते थे। उन्होंने उस दौरान छोटे-बड़े कई नाटक लिखे थे, जिनमें से एक-' होटल खजुराहो' एक रेडियो नाटक के रूप में बाद में काफी चर्चित हुआ था। उन दिनों एक नवोदित कहानीकार के रूप में मेरी पहचान भी स्थापित हो रही थी और सर की जानकारी में भी वह थी, जिसके कारण मुझपर उनका कुछ अतिरिक्त स्नेह और अनुग्रह था। तब वे मुझे अपने लिखे जा रहे नाटक का कोई न कोई अंश लगभग प्रतिदिन सुनाया करते थे।

शुरू-शुरू में उनका आग्रह साथ रह रहे अन्य मित्रों को भी अपना लिखा सुनाने का होता था, लेकिन उन लोगों का साहित्य के साथ बीन और भैंस जैसा विरागात्मक संबंध देखकर उनका उत्साह ठंडा पड़ पड़ गया था। वैसी स्थिति में अकेले मुझे ही उनसे बहुत कुछ सीखने का सुयोग मिला था। उन्हीं दिनों उन्होंने मुझसे कहा था कि वे कुछ नाटक दाएं हाथ से लिखते हैं तो कुछ नाटक बाएं हाथ से भी लिखते हैं। तब दाएं हाथ और बाएं हाथ का मतलब समझाते हुए सर ने गंभीर विषयों के साथ ही हल्के-फुल्के विषयों पर अवसरानुकूल लेखन करने की अपनी सामर्थ्य की ओर भी संकेत किया था।

प्रो. अस्थाना जितने अच्छे और समर्पित नाटककार थे उतने ही प्रतिबद्ध रंगकर्मी भी थे। उन्हें रंगकर्मी कहने से मेरा आशय नाटक की स्क्रिप्ट तैयार करने के बाद उसे दर्शकों तक ले जाने की समूची प्रक्रिया में उनकी सक्रिय सहभागिता से है। नाट्यकृति के मंचन के लिए उपयुक्त प्रेक्षागृह के चयन , पात्रों की भूमिकाओं का निर्वाह के लिए उपलब्ध श्रेष्ठ स्त्री - पुरुष कलाकारों की तलाश और उनका प्रशिक्षण (साथ ही प्रत्येक नाट्य प्रस्तुति में कुछ नए कलाकारों को भी अवसर प्रदान करना), उनकी वेश-भूषा और सज्जा पर विशेष ध्यान देना, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था की निर्दोष परिकल्पना और संयोजन, नाटक के मन-मिजाज को समझने वाले प्रबुद्ध लोगों के साथ ही सामान्य रुचि के दर्शकों को भी प्रेक्षागृह तक लाने का प्रयास करना आदि जरूरी कार्यों के साथ ही नाटक की प्रभावशाली और स्मरणीय प्रस्तुति के निमित्त वे सभी कार्य मनोयोगपूर्वक करते थे।

वे एक उच्चकोटि के निर्देशक के साथ ही एक अच्छे अभिनेता भी थे। उन्होंने आरा रंगमंच के साथ दर्जनों अभिनेताओं को जोड़ने का कार्य किया था। ऐसे नामों की सूची लंबी हो सकती है। विस्तार भय से सबका नामोल्लेख यहां संभव नहीं है फिर भी जहां तक मेरी जानकारी है, आरा रंगमंच को पहली महिला कलाकार उन्हीं के साहसिक प्रयास से उनकी छोटी बहन आदरणीया सत्या अस्थाना के रूप में मिली थी। बाद में तो उन्होंने न जाने कितनी महिला कलाकारों को अपनी नाट्य-संस्था 'कामायनी ' के माध्यम से आरा रंगमंच से जोड़ा था। ' कामायनी ' को आरा रंगमंच की नर्सरी भी कहा जा सकता है, जिसने न केवल नए कलाकारों को रंगकर्म से जोड़ने का कार्य किया, बल्कि अपनी श्रेष्ठ प्रस्तुतियों के माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों में आरा शहर को गौरवान्वित किया।

चिल्ड्रेन फिल्म सोसाइटी ऑफ इंडिया के द्वारा निर्मित बाल फिल्म 'जबाब आएगा' के लेखक के रूप में भी प्रो. अस्थाना ने विशेष ख्याति अर्जित की थी। उनके पहले आरा शहर या शाहाबाद के कौन-कौन से लोग हिंदी फिल्म संसार से किसी भी रूप में जुड़े थे, मुझे मालूम नहीं है। इस लिहाज से वे पहले व्यक्ति थे जो बतौर लेखक चित्रपट संसार से जुड़े थे। 'जवाब आएगा' फिल्म का विशेष प्रदर्शन रूपम सिनेमा हाल में हुआ था और उसे आरा के प्रायः सभी विद्यालयों के छात्रों को दिखलाने की व्यवस्था की गई थी।

तब मैं आरा जिला स्कूल का छात्र था और हमें भी स्कूल की ओर से फिल्म दिखाने के लिए ले जाया गया था। फिल्म बहुत अच्छी बनी थी। उसका अंत मुझे अभी तक याद है, जो बेहद मर्मस्पर्शी था। उसमें प्रमुख भूमिकाएं निभाने वाले दो बाल कलाकारों में एक योगिता बाली भी थीं जो बाद के दौर की चर्चित फिल्म अभिनेत्री बनी थी। निश्चित रूप से उस फिल्म को देखने के बाद किशोर वय के दर्शकों के मन में फिल्मों और रंगमंच के प्रति सहज आकर्षण पैदा हुआ था, जिसकी परिणति बाद के दौर में कई लोगों के उस क्षेत्र से जुड़ने के रूप में हुई।

प्रो.श्याम मोहन अस्थाना जेपी आंदोलन में अपनी सक्रियता के कारण भी याद किए जाते हैं। वह आंदोलन मगध विश्वविद्यालय की परीक्षा संबंधी गलत नीतियों के विरोध में सबसे पहले 1973 के अक्टूबर-नवंबर से आरा के छात्रों द्वारा प्रारंभ किया गया था। उसके कारण आरा के कॉलेज कई महीनों तक बंद रहे थे। बाद में मार्च 1974 में पटना से राज्यव्यापी छात्र आंदोलन प्रारंभ होने के बाद तब के वरिष्ठ छात्र नेता वशिष्ठ नारायण सिंह के प्रयासों से आरा का छात्र आंदोलन भी उसी में समाहित हो गया था। 18 मार्च 1974 को बिहार विधानसभा के समक्ष हुए विशाल प्रदर्शन के दौरान प्रशासनिक कुप्रबंधन के कारण आंदोलन हिंसक हो गया। सर्चलाइट प्रेस जला दिया गया। सैकड़ों छात्र घायल हो गए।

अप्रैल के प्रथम सप्ताह में प्रतिष्ठित सर्वोदयी नेता श्री जय प्रकाश नारायण ने आंदोलनकारी छात्रों के अनुरोध और आगे शांतिपूर्वक कार्य करने के आश्वासन के बाद आंदोलन का नेतृत्व संभाला। उन्हीं के नेतृत्व में आंदोलन का स्वरूप व्यापक करने के उद्देश्य से सभी स्तरों पर छात्र संघर्ष समितियों के साथ-साथ जन संघर्ष समितियों के गठन का निर्णय लिया गया जिनमें प्रबुद्ध नागरिकों, समाजचेता बुद्धिजीवियों और समाजसेवियों को शामिल किया गया। आंदोलन के इसी चरण में प्रो.श्याम मोहन अस्थाना सहित कई लोगों का आंदोलन में प्रवेश हुआ। वे न केवल उस आंदोलन में शामिल हुए बल्कि आगे बढ़ कर उसकी नेतृत्वकारी भूमिका का निर्वाह भी किया। इसी क्रम में वे आपातकाल के पूर्व और उसके बाद भी मीसा और डीआईआर जैसी धाराओं में बंदी बनाए गए। उस दौरान मुझे भी हजारीबाग, पटना और आरा की जेलों में उनके साथ रहने का अवसर मिला था। निस्संदेह उस आंदोलन में प्रो. अस्थाना ने बेहद सक्रिय और अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया था।

प्रो. अस्थाना एक सक्रिय समाज सुधारक व्यक्ति थे। भारतीय समाज व्यवस्था में व्याप्त जातिभेद, आर्थिक असमानता, लैंगिक भेदभाव, भाषा और क्षेत्र आधारित असमानता आदि के वे न केवल चिंतन में बल्कि आचरण में भी कट्टर विरोधी थे। उन दिनों यद्यपि आरा जैसे पिछड़ी सामाजिक चेतना और सामंती प्रभाव वाले शहर के लिए वह बहुत बड़ी बात थी तथापि उन्होंने अपनी बहनों के अंतरजातीय विवाह साहसपूर्वक और समारोहपूर्वक संपन्न कराए थे। हां, वे इस तरह के आयोजनों में अनावश्यक दिखावे और फिजूलखर्ची के खिलाफ थे। वे जन्म और कर्म से हिंदू जरूर थे लेकिन व्यर्थ की रूढ़ियों और कर्मकांडों के सख्त विरोधी थे। उनपर आर्यसमाज के विचारों का स्पष्ट प्रभाव था।

इसीलिए वे मृतक के दाह संस्कार के बाद होनेवाले दशकर्म, तेरही, श्राद्ध और मृत्युभोज आदि के सख्त विरोधी थे। अपनी अर्द्धांगिनी डॉ सावित्री अस्थाना के निधन के बाद उन्होंने किसी तरह का कर्मकांड और भोज नहीं कराया था। दाहसंस्कार के तीसरे दिन बहुत करीबी लोगों की उपस्थिति में मृतात्मा की स्मृति में हवन, शांतिपाठ और प्रसाद वितरण करवाया गया था। इस तरह वे पूरी तरह प्रगतिशील सामाजिक चेतना संपन्न व्यक्ति थे।

महाराजा कॉलेज, आरा से अपनी सेवानिवृत्ति से कुछ समय पूर्व विश्वविद्यालय के नियमानुसार वरिष्ठता के आधार पर प्रो.श्याम मोहन अस्थाना को कॉलेज का प्रभारी प्रधानाचार्य बनाया गया था। अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने महाविद्यालय में सह-शिक्षा की साहसिक शुरुआत का ऐतिहासिक निर्णय लिया था। उसके पहले केवल जैन कॉलेज, आरा में ही सह-शिक्षा की व्यवस्था थी।

अपने कई सहकर्मियों द्वारा कतिपय व्यावहारिक आपत्तियां किए जाने के बावजूद प्रो.अस्थाना अपने निर्णय पर अडिग रहे। शहर के लिए यह नई बात थी। शुरू में लड़कों के कॉलेज में नामांकन कराने में छात्राओं और उनके अभिभावकों को संकोच हो रहा था।

ऐसी स्थिति में प्रो. अस्थाना ने सबसे पहले अपनी ज्येष्ठ सुपुत्री सुश्री कालिंदी मोहन और अपने अभिन्न पारिवारिक मित्र सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. के. बी.सहाय की पुत्री का नामांकन करा कर कॉलेज में सह शिक्षा की विधिवत शुरुआत करवाई। आज अगर महिला कॉलेज को छोड़कर आरा के सभी अंगीभूत और सम्बद्ध महाविद्यालयों में सह-शिक्षा की व्यवस्था सुचारु रूप से चल रही है तो उसका श्रेय प्रो. अस्थाना को ही है।

प्रो. श्याम मोहन अस्थाना मेरे गुरु थे। महाराजा कॉलेज, आरा में मैंने कक्षा में बैठकर उनसे राजनीति विज्ञान पढ़ा था। लेकिन जेपी आंदोलन के दौरान मुझे उनके साथ जेल में रहने का जो अवसर मिला, उससे मैंने बहुत कुछ सीखा। हमदोनों गुरु-शिष्य हजारीबाग, पटना और आरा की जेलों में साथ-साथ रहे थे।

सर अस्थाना जी जेल में भी बहुत ही अनुशासित जीवन जीते थे। इसके साथ ही वे बहुत लोकतांत्रिक स्वभाव के व्यक्ति थे। यद्यपि वे कहीं से भी वामपंथी विचारों से प्रभावित नहीं थे, तथापि उन्हें वामपंथी विचारधारा के लोगों के साथ काम करने में कभी दिक्कत नहीं महसूस हुई। 1986 में जनवादी लेखक संघ की भोजपुर जिला इकाई का जब दूसरा सम्मेलन हुआ था तो उन्होंने उसकी स्वागत समिति के अध्यक्ष की भूमिका का सहर्ष निर्वाह किया था।

गुरुवर प्रो. श्याम मोहन अस्थाना जी के साथ मेरी अनंत यादें जुड़ी हुई हैं। उन सुखद और प्रेरणादायक स्मृतियों का सादर स्मरण करते हुए मैं उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

- डॉ. नीरज सिंह

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना की जन्म शताब्दी है।

इस शुभ अवसर पर उनके पुत्र नेत्र विशेषज्ञ डॉ. दीपक के आग्रह से मुझे कुछ कहने का अवसर मिला है, किंतु कठिनाई महसूस हो रही है क्योंकि प्रोफेसर अस्थाना का व्यक्तित्व इतना विशाल है कि उसमें चुन पाना बहुत कठिन है कि क्या कहूं और क्या ना कहूं।

वह बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न व्यक्ति थे।

वह एक अच्छे प्राध्यापक के साथ संगीत अनुरागी, खेल प्रेमी, साहित्यकार, नाटककार, समाजसेवी, अर्थात् बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व के धनी थे।

पूर्णतः संयमित तथा लोकसेवा के लिए जागरूक थे।
पूरा आरा नगर उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखता रहा है।

आरा का कोई भी सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक कार्यक्रम हो और वहां प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना की वाणी मुखरित ना हो ऐसा असंभव था।

अस्थाना जी समाज को, राष्ट्र को जो भी संदेश देना चाहते थे अपनी रचनाओं से, कविता, नाटक संस्मरण आलेख से, अपने व्यक्तित्व से, प्रकट करने में कभी संकोच नहीं किया।

सहज सरल शुद्ध भाषा में उनकी अभिव्यक्ति सबके अंतर मन को स्पर्श करने में पूरी तरह समर्थवान है तथा सर्वकालिक और सर्वग्राह्य है।

वे समाज और राष्ट्र के प्रति अगाध संवेदनशील थे, जिसके कारण ही लोकनायक जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति यात्रा की सहभागिता से हजारीबाग जेल में मीसा के कैदी होने का गौरव प्राप्त किया।

जन्म सती के शुभ दिन पर उनकी विभिन्न परिस्थितियों और मनःस्थितियों को स्मरण करती हुई
उन्हें नमन करती हूँ 🙏

- डॉ. जया जैन

सृजनशीलता, देश-प्रेम, अनुशासन और समाज सेवा की ऋषिवर्य मानवीय प्रस्तुति: स्मृतिशेष प्रो० श्याम मोहन जी अस्थाना

प्रो० (डा०) नलिन के० शास्त्री*

विपरीत पलों को अपने अंतस की गहराइयों में छिपा कर, जन-जन में खुशियाँ बांटने की कला की ऐसी साधना, जो हर पल, हर क्षण, दूसरों के गम को छाटें, हर किसी के लिए एक दीपक, जिससे सभी आस लगायें, एक ऐसा सृजनशील रंगकर्मी, जो अपनी नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से सभी को मुसीबतों से लड़ना सिखलाये, सबका हित रहता हो जिसके मन में, नित नई ऊर्जा जिसके तन को उर्जास्वित करती हो, काल की गति को जो पहचानने में हो प्रवीण, प्रति पल कुछ नया करने की ठानता रहता हो अपने अंतर्मन में, जिसके आवाहन पर पीछे-पीछे चल पड़े समाज- समर्पित भाव से और विश्वास से भी, जन हित से हो जिसे अनुराग/ प्यार, एक ऐसा पुरुषार्थी आलोक स्तम्भ, जो हर अधियारे पर पड़ता रहा हो भारी, बिना डरे, बिना झुके, सबके साथ खड़े होने की रही हो प्रतिबद्धता जिसमें अभिव्याप्त, जिसमें हर अन्याय के खिलाफ़, हर तूफान से टकराने की रही हो हिम्मत, धारा के विरुद्ध जो अपनी नाव चलाने का करता रहा हो पुरुषार्थ, हर हाल में जिसको आता हो मुस्कुरा कर जीना; वे और कोई नहीं, वे थे काशी के पूत, जिन्होंने भोजपुर की वीरभूमि को किया था अर्पित अपना प्रणाम और आरा की धरती ने बना लिया था उनको अपना लाल- वे कोई और नहीं, स्थापित कर्मवीर, रंगकर्मी एवं विद्यानुरागी आचार्यवर परम श्रद्धेय स्मृतिशेष प्रो० श्याम मोहन जी अस्थाना थे। मेरा उनसे आत्मीय नाता था, पारिवारिक प्रगाढ़ता थी, एक शब्दातीत आत्मीयता थी, असीम प्रेम था; जिसे शब्दों की सीमा में परिभाषित किया जाना संभव नहीं।

पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह उज्ज्वल और प्रकाशमान थे पूज्य अस्थाना जी, जहाँ मुझ जैसे अबोध को ज्ञान, शान्ति, भक्ति और योग की शक्ति के अंगीकरण का संप्रेरण देते रहते थे, पिता के असमय अवसान में ढाढ़स बंधाते-सक्रिय सहयोग के लिए तत्पर रहते, अज्ञान तिमिर का ज्ञानांजन शलाका-से निवारणकर देने को रहते थे सदैव तत्पर, मन के किसी भी कोने में बसे तिमिर के हर कतरे का विलोपन कर, प्रकाश की ओर उन्मुख कर देने को रहते थे आतुर, आत्म और परमात्म सत्य के मध्य, सेतुबंध बन कर प्रबोधित करते रहते थे और कर देते थे उन्मुख-अन्तश्चैतन्य के स्फुरण के लिए, सभी के लिए अपनी अहैतुकी कृपा बरसाते रहते थे – अपने उदात्ततम स्वरूप में; अहर्निश/प्रतिपल- ऐसे थे पूज्य प्रवर अस्थाना चाचा जी।

शिवत्व और शक्तित्व का अंतर्भाव जिस प्रकार लक्षित हो, परमशिव के प्रकाशविमर्शमय स्वरूप का दिग्दर्शन कराता है और आध्यात्मिक स्फूर्ति से सकल विश्व को स्पंदित कराता है, उसका उद्भासन, उनके कला-संसार के माध्यम से हुआ और चैतन्य के नए प्रकाश की किरणों, नवोन्मेषी

ज्ञान को अंतःस्थित कराते हुए, नव-अर्थतत्व को उन्मुख कर, नव-शक्ति का सृजन कर सकने में समर्थ हुई; आरा की धरा पर। यह प्रकाशन, अहंता से आच्छादित अस्फुट इदमंश की अवस्था से दर्शित शुद्धविद्यातत्व की प्रतिष्ठा कर, अहमिदम् से इदमहं और फिर अहं इदं च का सम्यक अवबोध कराने की भावभूमि को प्रशस्त कर सका, जो उनके रंगकर्म कौशल का वैशिष्ट्य बना और रहा उनके सृजन-संसार का उदात्तत्व भी।

वे अपने जीवन में संयम और सहनशीलता की युति के साधक थे और इनके माध्यम से अपनी इन्द्रियों को वश में कर, छोटे-छोटे संकल्पों के द्वारा अपने जीवन को तो निरंतर परिष्कृत करते ही रहे; प्रत्युत सारे समाज को झंकृत भी करते रहे अपने नाटकों के मंचन से। गांधी जी और जयप्रकाश जी के अनुयायी-अनुरागी थे और उनका सृजनधर्म चित्त अहिंसक ढंग से जन-जीवन में रूपांतरण कराने की भाव-भूमि को रचता था। रंगकर्म के अपने धर्म का पालन करने में वे कभी भी शिथिल नहीं होते थे और भरत मुनि के नाट्य-शास्त्र के प्रबोधन को आत्मस्थ हो कर गुनते थे, एवं रच देते थे अपनी कालजयी रचनाएं। वे आरा की गौरवशालिनी सांस्कृतिक परंपरा के महान संवाहक थे। अपने संकल्पों की शक्ति से स्फूर्त हो, प्रगति की ध्वजा उठाए, मुश्किल से मुश्किल बाधा को राह से हटा देने की अनुपम कला के बन गए थे वे साधक-पुरुषार्थ की आंच में तपते हुए। हर दम करते रहते थे वे काम, बड़े करीने से, सफाई से, कलात्मकता के साथ और चैतन्य होते रहते थे अपने चिंतन/मनन से। विश्राम नहीं था उनके चित्त के आँगन में, दिल में सदैव थी अटूट आस्था सृजन के दिव्य अभिधान के प्रति। परिस्थितियों के जहर का हर घूँट, हँस कर पिया करते थे और हो जाते थे आरूढ़, प्रगति रथ पर; कर देते थे अर्चभित/विस्मित सभी को, कर देते थे मजबूर सभी को सोचने पर कि कैसा है ये काशी की फक्कड़ अस्मिता वाला इंसान, किस मिटटी ने इसे बनाया, सारे विरोधों के बावजूद, निंदा को करते दरकिनार, मुस्कान सदा चेहरे पर रखते हुए, कर्म, धर्म और ज्ञान की उपासना में अभिसंलग्न रहते हुए, गंगा माई के सच्चे बेटे बन, अपने लक्ष्य की संप्राप्ति में यावज्जीवन रहता है तत्पर। संयम से अनुप्राणित ओजमय, तेजमय, अध्यात्म स्पंदित था उनके चित्त में; आत्म-समर में साहस का हाथ ले कर संबलित हो जूझते रहने के संकल्पी थे, वे देश-प्रेम, अनुशासन, समाज सेवा के लिए ऋषिवर्य मानवीय प्रस्तुति बन गए थे; उनकी संस्मृति में हैं सर्मापित विनम्र प्रणतियाँ, मुझ अकिंचन की।

वे महान देशभक्त थे। गांधी जी और जयप्रकाश जी के बताए मार्ग पर चलकर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वालों में उनका महत्वपूर्ण स्थान था। आपात काल के समय अहिंसक आन्दोलन में भाग लेने के कारण वे जेल भी गए, पर वे कभी भी झुके नहीं। उनके चरण अतिराम गति से गतिशील रहे, चलते रहे कर्म-पथ पर वे अथक, साहस के अनंत तेजोमय दीप जलते थे उनके अंतर्मन में। उनमें देशप्रेम, साहस और शौर्य तो था ही, कवि की कोमल भावनाएं भी थी। वे उच्चकोटि के कवि भी थे। उनकी रचनाओं में वीर और करुण रस का पुनीत संगम देखने को मिलता था। वे स्वयं प्रज्ञा, वीरता और करुणा की साक्षात् त्रिवेणी थे। वे बड़े सादे ढंग से रहा करते थे, कोई आडम्बर नहीं था, कोई परिग्रह नहीं था- न आंतरिक और न ही बाह्य। निश्चल हृदय के थे वे, दिल खोलकर

जोर-जोर से हंसा करते थे। उन्होंने विलक्षण प्रतिभा पाई थी। उनकी शिक्षा संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम में संपन्न हुई थी और उन्होंने राजनीति शास्त्र का गहन अध्ययन किया था। राजनीति शास्त्र के अतिरिक्त इतिहास, लोक प्रशासन, अंगरेजी साहित्य, समाज विज्ञान, अर्थ नीति आदि विषयों पर भी उनकी अभूतपूर्व पकड़ थी। आप अपने जीवन से, आचार से और विचार से एक ऐसे ज्योतिपुंज के रूप में आविर्भूत हुए कि स्वयं ही लक्ष-लक्ष जन-समूह के लिए श्रेय, आराध्य और उपास्य बन गए। आप सचमुच असाधारण थे, तभी तो उनके नाटकों के सफल मंचन के उपरान्त, सहस्रों लोग उन्हें बधाई देने हेतु समुत्सुक रहते थे। विचारों से असाधारण थे, तभी तो उनके मुखारविंद से युगो के पदचाप की आहट भी असंख्य जनवृन्द जानने, सुनने और समझने को लालायित रहते थे। वे निराले थे, अलौकिक थे, जन्मे भी महान बन कर, जीये भी महान बन कर और विचारों के उत्स से बन गए महान; शब्दों से--ऊपर, ध्वनि से दूर, आकृति से विलग- सूक्ष्म से भी सूक्ष्म।

महाराजा कॉलेज में राजनीति शास्त्र के सुविख्यात शिक्षक की भूमिका का उन्होंने सफल निर्वहन किया। वहीं अपने अंतर्मन के प्रेम का प्राकट्य उन्होंने एक नाटककार की भूमिका को जी कर किया। उन्होंने गांधी जी के सिद्धांतों में अपने आप को ढाल लिया था। क्षमा-भाव से, मित्र भाव से, सबको गले लगाने का सन्देश आपने दिया, विष के प्याले भी पी कर मुस्कराहट बनी रहती थी उनके चेहरे पर; क्योंकि उन्हें पता था कि उनका पथ है कठिन/ कठिनतम भी। वे अहिंसा, सच्चाई, सादगी, जन सेवा और विनम्रता की जीती जागती तस्वीर बन गए थे वे।

प्रारंभ से ही वे असाधारण प्रतिभा के धनी थे। श्रद्धास्पदा सावित्री जी के संग वैवाहिक जीवन का अथ कर दोनों ने हर कदम साथ उठाया, हर संघर्ष साथ झेला, आरा के सांस्कृतिक परिदृश्य को साथ-साथ समृद्ध किया। एक दूसरे के पूरक वे बने। उनकी पत्नी धार्मिक विचारों वाली थीं, जिनके जीवन में सादगी और सरलता की युति सदैव स्फूर्त हुआ करती थी। चाची जी हर कार्य में अपने पति की सहयोगी थीं। उनकी दृष्टि पैनी और मेघा सूक्ष्मग्राही थी, स्व-अनुशासित थीं, विनयशीला थीं और थीं पूर्णरूपेण मातृस्वरूपा। आरा शहर की हर रचनात्मक गतिविधि में उनका योगदान रहता था। विषय की गहराई में बैठ कर गंभीरता से किये गए विश्लेषण के साथ ज्ञान को स्वाभाविकता के संग अंगीकृत किया करती थीं।

वे लौह पुरूष थे। विरोधों के सामने झुकना उन्होंने सीखा नहीं था, वे सत्य के महान उपासक थे। वे मेरु और हिमशैल की तरह अडोल रहे। उनके पुत्र डा० दीपक और पुत्री कालिंदी एवं कावेरी के व्यक्तित्व को समग्रता में उनकी मौन प्रेरणा ने विकसित किया है और उनके चित्त में मानवीय संवेदनाओं की पकड़ को सफलता के साथ प्रवृत्त कराया है। मेरे पिता के असमय वियोग में अपने अन्दर आंसू पी कर मुझे और मेरी माँ एवं दादी को धीरज तो बंधाते ही थे, प्रतिपल अभिभावक के रूप में सजग रहते थे -हर उपक्रम में। संयोगों और वियोगों से अप्रभावित रहने की साधना वे करते रहते थे। इन सब स्थितियों ने उनके जीवन में एक अद्भुत सहिष्णुता, निर्भकता एवं स्पष्टवादिता

का विशेष संचार कर दिया था। सत्य को कड़े से कड़े रूप में प्रस्तुत करने में वे कभी नहीं हिचकिचाये। उन्हीं के मन के समीप राजस्थानी भाषा का वाक्य 'आत्मा राकारज सारस्यां मर पुरा देस्यां', रहा करता था, जो सत्य के प्रति उनके आगद्य संपूर्ण का सूचक है। मंजिल कितनी ऊँची है, कितनी है मार्ग की विषमता, यह तो कभी उनके चित्त में समाया ही नहीं और आरोहण बना रहा सदैव लक्ष्य; बिना किये परवाह अवरोहण की, साथी कितने साथ रहे, कभी झाँका नहीं आपने, देखा नहीं मुड कर, वायु वेग से बढ़ते रहे, बिना किये परवाह किसी दुर्वेग की, झुकाते हुए हर दुर्घष को, खिलाते हुए हर सुमन को, जिसे सींचते थे, प्यार से, दुलार से। सत्य की खोज में संलग्न रहते थे निरंतर, करते हुए साकार हर स्वप्न को; करते हुए पूर्ण हर प्रण को, रहते हुए तत्पर अपनी सारस्वत साधना में सदैव तत्पर। स्थितप्रज्ञ-सी सौम्य साधना थी, जो संयम की अविकलता से थी स्पंदित, प्रस्युत्पन्न मनीषा कभी नहीं होती थी विचलित, दिव्य ज्ञान की अविरल धारा थी प्रवाहित, नाट्य-शास्त्र के संबल से पिरोते थे मानवता के मोती, सघर्षों की अनल वृष्टि में भी अभिव्याप्त रहती स्मित मुस्कान से रहते थे जीवंत-सदैव।

अपने मौलिक चिंतन के आधार पर, नये मूल्यों का प्रतिपादन किया आपने। उनके नाट्य-साहित्य का प्रमुख विषय समसामयिक समस्याओं का निरूपण तो था ही, उनके सम्यक समाधान की संस्तुति भी हुआ करती थी। युग की प्राचीरों पर, आपने की अंकित नई दृश्य रेखा, रख दिया नये युग का सारभूत- अपनी वाणी से, अपने नाटकों से/ अपने प्रबोधनों से। वे जब तक जिए, ज्योतिर्मय बन कर जिए, उनके जीवन का हर पृष्ठ पुरुषार्थ की गौरवमयी गाथाओं से भरा पड़ा है। उन्होंने स्वयं को ऊपर उठाया, महनीय साधना की, गहन अनुभव प्राप्त किया और अपने अनुभव के वैभव के आधार पर, दुनियाँ को भी कुछ देने का प्रयास किया; संसार उनके अवदानों से उपकृत हो रहा है। विमल साधना से जीवन के कण-कण को आकीर्ण बना, घनघोर तिमिर के बीच, ज्योति किरण बन आपके प्रबोधनों के कण-कण ने नव आलोक जगाया। अतीत की अनुभूतियों को, वर्तमान में बाँध कर, भविष्य के धागों को अनुभूत कर, वर्तमान से साथ लिया और युग की हर उलझन को सुलझाया; सफलता के संग। जिस सूक्ष्म परख, ओजस्वी और निर्भीक विवेचन एवं उन्मुक्त चिन्तन के सतत साहचर्य का अवलंबन करते हुए उन्होंने सत्य को अभिव्यक्त किया। भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता और मानवीय मूल्यों के संरक्षण को, समर्पित आपका कर्मनिष्ठ जीवन तथा तदनु रूप आपकी सारस्वत साधना, संवाद और अक्षर यात्रा के माध्यम से, भारतीयता के तात्विक चिंतन एवं वेदों/उपनिषदों/आगमों के विषद एवं कालातीत ज्ञान के सामाजिक सम्प्रेषण की प्रतिबद्धता को, सकारात्मकता के साथ रेखांकित करता है; जो इस देश के बौद्धिक महायज्ञ में एक सुवासित समिधा है; ऐसा मेरा परम विश्वास है।

मेरा मानना है कि आपका कालजयी सारस्वत अवदान, भारतीय ज्ञान को, जन-जन के मध्य पुनर्चिंतन करने को संप्रेरित करता रहेगा और भारतीय जिज्ञासु चित्त के लिए एक नया आयाम खोलेंगा एवं देगा; एक नवोन्मेषी वैचारिक गहराई भी। आपकी अक्षर यात्रा के गहरे ब्रह्ममय रूप से सच कहने और सच के साथ जीने के साहस के भारतीय चिंतन को बल मिल सका है, सकारात्मकता की सृजनात्मकता संबलित हुई है और भारतीय मानस पुनर्व्याख्यायित हो सका है। उनके तिरोधान

के उपरान्त, एक लम्बे अरसे के बाद, उनके निमित्त सृजित हो रहे स्मृति ग्रन्थ के माध्यम से नई पीढ़ी को एक नए प्रबोधन से साक्षात्कार हो सकेगा, भारतीय मनीषा को नयी ऊर्जा मिल सकेगी – उनके बहुआयामी कृतित्व की अभिवन्दना से; ऐसा मेरा परम विश्वास है। इस ग्रन्थ के अभिशिल्पन करने का मंगल भाव मेरे अनन्य मित्र डा० दीपक, कालिंदी और कावेरी के मन में स्फुरित हुआ है, इस हेतु इन सभी को आदरपूर्वक अपना अभिवंदन अर्पित करते हुए, उनके सकारात्मक प्रयत्नों की अनुमोदना करता हूँ, उन्हें बधाई देता हूँ कि स्मृतियों के वातायन में झाँकने के एक प्रेरक निमित्त को सृजित किया है; इन सभी ने और उस महामना के प्रति भूल गयी आरा की समाज को थोड़ा सा झझोरने की भी कोशिश की है। पूज्य अस्थाना चाचा जी की पुण्य-स्मृति की पुनः-पुनः वन्दना है, एक महान सारस्वत की कोटि-कोटि अर्चना है, एक मूल्यनिष्ठ भारतीय की अभिवन्दना है, एक निस्पृह समाजसेवी के अवदानों की अभ्यर्थना है और एक सात्विक-कर्मनिष्ठ-पुरुषार्थी जीवन की आराधना है-मुझ अकिंचन द्वारा। उनकी स्नेहिल स्मृतियाँ मेरी पूंजी हैं, जो मेरे चित्त में सहेजी हुई हैं, बड़ी हिफाज़त के साथ और उनकी साज-समहाल हमेशा करता रहता हूँ, क्योंकि उनके बिम्ब मुझे हर अँधेरे को विलोपित करने में प्रेरणा के दीप ज्योतित करते हैं, मुझे रास्ता दिखाते हैं। उनके श्री चरणों में हैं अर्पित; श्रद्धा के संग, मेरे अनंत प्रणाम।

- डॉ. नलिन कुमार शास्त्री

Professor Shyam Mohan Asthana: A Luminary of Ara's Theatrical and Intellectual Landscape – Marking the Centenary of a Multifaceted Icon

In the culturally vibrant yet often overlooked corridors of Bihar's Bhojpur district, few figures have left an indelible mark on the realms of academia, theater, and social activism as Professor Shyam Mohan Asthana. As we observe the closing of his birth centenary year on October 29, 2024—a century since his birth in Varanasi on October 29, 1924— it is an opportune moment to reflect on a life that bridged the worlds of scholarly pursuit, dramatic artistry, and unwavering political conviction. Prof. Asthana, who passed away on December 24, 2015, at his residence in Mansarovar Colony, Ara, was not merely a resident of this historic town; he became its intellectual soul, embedding himself deeply in the fabric of Bihar's cultural and social narrative. His departure left a void in the hearts of family, colleagues, students, cultural enthusiasts, and admirers, but his legacy endures as a beacon of principled living and creative expression.

Born into an era of colonial subjugation and emerging nationalist fervor, Prof. Asthana's journey from Varanasi to Ara in 1956—where he joined Maharaja College as a Political Science professor—symbolized a profound shift. What began as a professional posting evolved into a lifelong commitment to the region, making him an adopted son of Bihar. His centenary year, celebrated with seminars, theatrical revivals, and tributes across Ara and beyond, underscores his enduring relevance. In a world increasingly dominated by digital distractions and fleeting fame, Asthana's life reminds us of the power of integrity, creativity, and social engagement. This article delves into his multifaceted persona: the erudite scholar, the revolutionary activist, the pioneering playwright, and the compassionate reformer. Drawing from personal anecdotes, historical records, and cultural analyses, it paints a comprehensive portrait of a man who lived by the unity of thought and action, leaving an imprint that transcends time.

Early Life and Formative Influences: From Varanasi's Scholarly Cradle to Intellectual Awakening

Shyam Mohan Asthana was born on October 29, 1924, in Varanasi, a city steeped in ancient wisdom, spiritual depth, and literary heritage. Varanasi, often called the spiritual capital of India, with its ghats along the Ganges and centers of learning like

Banaras Hindu University (BHU), provided a fertile ground for young Asthana's intellectual growth. His family background, though not extensively documented, appears to have been one of modest means with a strong emphasis on education—a common trait among the Brahmin communities of the region. From an early age, Asthana displayed a keen interest in literature, drama, and social issues, influences that would shape his later contributions.

His initial education took place at Queen's College and Harishchandra College in Varanasi, institutions renowned for fostering critical thinking and cultural awareness. These schools, established during the British Raj, exposed him to a blend of traditional Indian knowledge and Western liberal arts. It was during this period that Asthana's passion for acting emerged. As a child, he was drawn to the stage, participating in school plays and local theatrical events. Varanasi's vibrant cultural scene, with its Ramleelas (dramatic enactments of the Ramayana) and folk performances, ignited his love for drama. He often recalled how these early experiences taught him the power of storytelling to convey moral and social messages.

Asthana pursued higher education at Banaras Hindu University, where he earned a Master's degree in Political Science. BHU, founded by Pandit Madan Mohan Malaviya in 1916, was a hub of nationalist thought during the freedom struggle. The university's environment, buzzing with debates on Gandhi's non-violence, Nehru's socialism, and the Quit India Movement, profoundly influenced Asthana. His academic focus on political science was not merely theoretical; it was intertwined with a growing awareness of India's colonial plight and the need for social reform. Teachers at BHU emphasized the integration of theory and practice, a principle Asthana would embody throughout his life.

The 1940s were a turbulent time for India, with World War II raging and the independence movement gaining momentum. Asthana, in his early twenties, witnessed the Quit India Movement of 1942, which saw widespread arrests and protests. Although not directly involved at this stage, these events sowed the seeds of his later activism. His literary inclinations also blossomed here; he began writing short plays and poems, often inspired by social injustices like caste discrimination and women's oppression—issues that would recur in his works.

Post-graduation, Asthana's career took him across Uttar Pradesh and Bihar, but it was his appointment in 1956 as a Political Science professor at Maharaja College, Ara, that

anchored him. Ara, part of Bhojpur district, was a far cry from Varanasi's urban sophistication. Yet, Asthana embraced it, finding in its rural simplicity a canvas for his intellectual and creative endeavors. This move marked the beginning of his transformation from a Varanasi scholar to Ara's cultural icon, where he would spend the rest of his life contributing to education, theater, and social change.

Academic Excellence and Pedagogical Legacy: Shaping Minds in Ara

Upon joining Maharaja College, Prof. Asthana quickly established himself as a scholar of repute in Political Science. His lectures were not dry recitations of textbooks but lively discussions on democracy, governance, and ethics, often drawing parallels to India's ongoing struggle for true independence post-1947. Students recall his classes as transformative, blending rigorous analysis with real-world examples. He authored several papers on political theory, emphasizing the need for ethical leadership in a young democracy—a theme resonant in Bihar's turbulent politics.

Asthana's tenure as in-charge Principal was particularly noteworthy. In a bold move, he introduced co-education at Maharaja College, a pioneering step in a conservative region where gender segregation was the norm. Prior to this, only Jain College in Ara offered co-education, and Asthana's initiative faced resistance from traditionalists. However, he argued passionately for equality, citing constitutional values and the need for women's empowerment. This reform not only increased enrollment but also fostered a more inclusive academic environment, reflecting his belief in education as a tool for social justice.

His teaching philosophy was rooted in the unity of theory and practice. As a professor, he encouraged students to engage in debates, write essays on current affairs, and participate in college dramatics—a bridge to his own passions. Many of his students went on to become bureaucrats, academics, and activists, crediting Asthana for instilling critical thinking and moral courage. During his retirement on October 31, 1984, tributes poured in, highlighting how he had turned Maharaja College into a bastion of progressive thought.

Beyond the classroom, Asthana's academic life intersected with his activism. He viewed education as a weapon against oppression, often incorporating political discourse into his lessons. This holistic approach made him a mentor figure, guiding generations through Bihar's socio-political upheavals.

Political Activism and the JP Movement: A Life of Principled Resistance

Prof. Asthana's commitment to democracy extended far beyond academia into active political engagement, most notably during the JP Movement of 1974. Led by Jayaprakash Narayan (JP), this mass uprising against corruption, inflation, and authoritarianism under Indira Gandhi's government galvanized Bihar. Asthana, then a seasoned professor, stood at the forefront as an organizer, mobilizing students, intellectuals, and common folk.

The movement, sparked by student protests in Patna, escalated into a statewide call for "Total Revolution." Asthana's involvement was profound; he participated in rallies, delivered speeches critiquing government excesses, and coordinated logistics for protests in Ara. His eloquence and integrity made him a key figure in the movement's intellectual wing. However, this activism came at a cost. He was arrested multiple times under the Maintenance of Internal Security Act (MISA) and the Defence of India Rules (DIR), enduring imprisonment in Hazaribagh, Patna, and Ara jails. These stints, far from breaking his spirit, strengthened his resolve. Sharing cells with fellow activists, during the Emergency (1975–1977), Asthana maintained a disciplined routine of yoga, pranayama, and writing, embodying resilience.

Asthana's political philosophy was democratic to the core. Though not aligned with leftist ideologies, he collaborated seamlessly with communists and socialists, prioritizing common goals over doctrinal differences. In 1986, he chaired the reception committee for the Janvadi Lekhak Sangh's Bhojpur unit conference, demonstrating his inclusive approach. His arrests during the JP Movement—often without trial—highlighted the era's repression, but also his courage. Post-Emergency, he continued advocating for clean governance, influencing Bihar's political discourse.

This phase of his life exemplified the "unity of principle and practice" he espoused. As a political scientist, he didn't just teach theories; he lived them, risking freedom for a just society. His activism inspired students to view politics not as power play but as service, leaving a legacy in Bihar's ongoing fight against corruption.

Theatrical Contributions: The Playwright and Director Par Excellence

Prof. Asthana's true passion lay in theater, where he earned his reputation as a "suprasiddh natakakar" (renowned playwright). His interest in drama began in

childhood, acting in school plays. This evolved into writing for his wife's school annual functions at Jain Bala Vishram, Dr. Nemi Chandra Shastri Girls High School and Bhagini Nivedita Girls High School where she served as headmistress. These early scripts laid the foundation for a prolific career.

In Ara, Asthana founded the 'Kamayani' theater group, named after Jaishankar Prasad's epic poem, symbolizing cultural revival. Under his leadership, Kamayani staged dozens of plays, participating in All-India Drama Competitions and winning accolades for writing, direction, and performance. His first published play, *Purv aur Paschim* (East and West), explored cultural clashes, blending satire with social commentary. Over the years, he authored half a dozen books, including plays that critiqued societal norms, politics, and human follies.

Asthana was a master director, known for meticulous rehearsals and innovative staging. Kamayani's productions toured Bihar and beyond, earning praise for their relevance and artistry. He also contributed to cinema, scripting the Children's Film Society's *Jawab Ayega*, a film for young audiences that highlighted moral dilemmas—a testament to his versatility.

His theater was socially conscious, addressing issues like dowry, casteism, and women's rights. Plays often featured strong female characters, reflecting his advocacy for co-education. Asthana's work revitalized Bhojpur's theatrical scene, inspiring local artists and fostering a community of dramatists. Even in jail, he wrote scripts, turning adversity into creativity.

Social Reforms and Broader Contributions: A Crusader Against Evils

Asthana's legacy extends to social reform. He relentlessly fought societal ills like untouchability, dowry, and gender inequality. As Principal, his introduction of co-education at Maharaja College broke barriers, empowering women in a male-dominated society. This move, radical for 1970s Bihar, increased female enrollment and challenged patriarchal norms.

His involvement in anti-dowry campaigns and caste equality drives made him a vocal critic of social injustices. Asthana believed in action: He organized seminars, wrote articles,

and used theater as a tool for awareness. His life's motto—unity of theory and practice—manifested in these efforts, making him a role model for progressive change.

Personal Traits and Reminiscences: A Life of Discipline and Inclusivity

Asthana was a man of exemplary character: Disciplined, democratic, and inclusive.

Even in jail, he practiced yoga and wrote, inspiring inmates. The author, a former student and co-prisoner during JP Movement, recalls shared cells in Hazaribagh, Patna, and Ara, where Asthana's routine of pranayama and discussions on politics fostered learning. Though not leftist, he collaborated with communists, as seen in his support for Janvadi Lekhak Sangh in 1986.

Retiring in 1984, Asthana continued writing and directing until his death in 2015. His home in Mansarovar Colony was a hub for intellectuals, reflecting his warmth.

Tributes on the Centenary Closing

As we mark the end of Prof. Asthana's birth centenary, his contributions—to education, theater, activism, and reform—remain timeless. He was a bridge between intellect and action, inspiring generations. In humbly offering tributes, we honour a life that enriched Ara and Bihar, ensuring his spirit lives on in every stage, classroom, and fight for justice.

- Rajiv Nayan Agarwal

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना : राजनीति, कला एवं संस्कृति के संगम

डॉ० गांधीजी राय
पूर्व प्रधानाचार्य,
महाराजा कॉलेज, आरा

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना एक गंभीर एवं गतिशील व्यक्ति थे। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना भोजपुर जनपद के एक महान शिक्षाविद ही नहीं थे, वरन् राजनीति, कला एवं संस्कृति के वाहक भी थे।

एक सफल प्राध्यापक— महाराजा कॉलेज आरा की स्थापना 13 सितंबर 1954 को भोजपुर में शिक्षा के उन्नयन एवं विस्तार के लिए की गई थी। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए महाराजा कॉलेज की शासी निकाय ने प्रो. श्याम मोहन अस्थाना की नियुक्ति कॉलेज की स्थापना काल से ही राजनीति विज्ञान के एक व्याख्याता के रूप में की और तब से लेकर अपने अवकाश प्राप्त करने के समय तक प्रो० अस्थाना अपने विषय के ज्ञान से एक सफल प्राध्यापक की जिम्मेदारियों का निर्वहन निष्ठापूर्वक करते रहे।

नाट्यकला के संस्थापक— राजनीति विज्ञान के एक प्राध्यापक के साथ-साथ प्रो० श्याम मोहन अस्थाना कला एवं संस्कृति के भी संगम स्थल थे। भोजपुर जनपद और विशेष रूप से आरा में नाट्यकला को पुनर्जीवित करने में प्रो० श्याम मोहन अस्थाना का अद्वितीय योगदान रहा है। आज आरा में नाट्यकला का जो वजूद है, वह प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना की ही देन है।

डॉ० नेमीचंद्र शास्त्री कन्या उच्च विद्यालय के संस्थापक — एच० डी० जैन कॉलेज आरा में प्राकृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर नेमीचंद्र शास्त्री प्राच्य साहित्य के एक महान विद्वान थे। उनके अद्भुत विद्वतापूर्ण व्यक्तित्व से प्रभावित होकर प्रो० श्याम मोहन अस्थाना ने उनके नाम पर बाबू बाजार आरा में 'नेमीचंद्र बालिका उच्च विद्यालय' की स्थापना की। प्रो० अस्थाना की धर्मपत्नी स्वर्गीय सावित्री अस्थाना इस स्कूल की संस्थापक प्रधानाचार्या थीं।

उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर प्रो० श्याम मोहन अस्थाना की विद्वता ही हम सभी के लिए सिर्फ उत्प्रेरक नहीं है, उनकी सादगी, आत्मीयता, सामाजिक भ्रातृत्व की भावना और सामाजिक कार्यों के प्रति लगाव और समर्पण भी उनके गतिशील व्यक्तित्व के घुवतारे रहे हैं।

आगरा के लोचवृत्तिक अरातल के प्रकाश-सम अर्याणाजी।
 ब्रह्मआचार्यी ज्योतिष के चानी प्रो. 2 पात्र प्रोटन (अर्याणा)
 अपने आप में एक अंतर्भाव।
 आगरा के सांस्कृतिक अरातल पर अर्याणाजी एक प्रभावपूर्ण प्रकाश-
 इस्तरा थे। उनका व्यापक वृद्ध मोक्ष था। (कलौष) उन्हें प्रेम
 लक्ष्मी और प्रदीपित देवते 2 थे। एक उक्त भी उनकी
 उत्तमा विद्वान और शिक्षा तथा समाज सेवा में उन के
 प्रभाव के लिए भाव विभागत है। वे सामान्यतः कपलीज हैं,
 ये भेते उनसे उनके सीखा।
 अर्याणाजी के नानक आगरा में कले के लिए विशेष चिन्तित रहते
 थे और इस विद्या में उन्हें बहुत लफलता भी मिली/ उनके लिखे
 हुए नाटकों का समय परा-कडा होता रहता था।
 रेडियो नालक लिख लिख कर के अन्तरे संदेश दिया करते थे।
 आगरा के बुद्धिजीवियों में उनका सम्मान था। संगीत, नृत्य,
 इत्यादि उद्योग में युवावर्ग को प्रोत्साहन मिलता था। उनके
 चिन्तकता थी। इन्होंने इस क्षेत्र में ~~अनेक~~ उनका बहुत योग्य
 योगदान था।
 राजनीति-पर्यायों में उनकी उनका मन लगता था
 और उनसे राजनीतिक सच्य बहुत पुरख + हुआ करती थी।
 राजकीय दृष्टि उनसे पूछा था कि बिहार के विकास में
 कौन-कौन सी कृषि हैं? ~~उन्होंने~~ उन्होंने कहा कि
 बिहार के विकास में जाति और वर्ग मुख्य बाधाएँ बाधाएँ
 हैं। राजनीति के गिरते स्तर पर वे बहुत चिन्तित
 रहते थे। कई बार इस विषय पर ~~एक~~ एक लोगों ने
 उनसे व्याख्यान भी सुने थे। उनके ~~व्याख्यान~~ ~~के~~ ~~समय~~
~~समय~~ बेजानी विथाएँ के प्रहाराय अर्याणाजी
 के व्याख्यान सुनने के लिए लीला लाला पिते रहते
 थे। जनारस के ~~समय~~ अर्याणाजी ~~राष्ट्र~~
 शाखावाद के ही गये थे।
 - बलिराज 6/3/2

- प्रो. बलिराज ठाकुर

वाराणसी नगर में रईस दुर्गा प्रसाद वकील का निवास था.दुर्गा प्रसाद नामी गिरामी वकील थे. 29.10.1924 को दुर्गा प्रसाद की पत्नी भगवती देवी ककी गोद में एक बालक का जन्म हुआ.नाम रखा श्याम मोहन. उनकी शिक्षा हरिश्चंद्र उच्च विद्यालय,क्वींस कॉलेज और काशी हिंदू विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री के साथ संपन्न हुई. साथ ही उन्होंने LLB की डिग्री भी प्राप्त की.कुछ दिन कचहरी में भी गए. मगर ज़रा भी मन नहीं लगा.

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी बढ़ चढ़ कर भाग लिए.कुछ दिनों तक जेल में बंद रहे.

1950-1956 तक त्रिभुवन विश्वविद्यालय,काठमांडू (नेपाल) में राजनीति शास्त्र के विभागाध्यक्ष रहे. उसके बाद 1956 से 1984 में अवकाश प्राप्त करने तक महाराजा कॉलेज,आरा में राजनीति शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष रहे.

श्याम मोहन अस्थाना मिलनसार एवं सर्व गुण संपन्न थे.आरा नगरवासी होने के नाते उन्होंने कई संस्थाओं में अपना योगदान दिया जिनमें नगर रामलीला समिति और बाल हिंदी पुस्तकालय प्रमुख हैं .नाटक और संगीत इनके जीवन का प्रमुख अंग था. कला के विकास के लिए कामायनी संस्था कायम किये जिसमें बच्चे बच्चियाँ सीखते थे.देश के कई शहरों में विभिन्न प्रतियोगिताओं में नाटक प्रस्तुति देकर झंडे गाड़ दिए.भोजपुर जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष होने के कारणसाल में 365 दिन कभी तुलसी जयंती,कभी प्रेमचंद जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में नाटक भी प्रस्तुत करते थे.

1974 में प्रो अस्थाना ने जय प्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन का भोजपुर जिला में नेतृत्व किया और कई बार MISA और DIR में जेल गए.

आरा में डॉ नेमीचन्द्र शास्त्री कन्या उच्च विद्यालय और भगिनी निवेदिता कन्या उच्च विद्यालय की स्थापना की. साथ ही में उनकी प्रेरणा से नगर में महंत महादेवानन्द गिरी महिला महाविद्यालय की स्थापना हुई.

श्याम मोहन अस्थाना ने अनेक नाटक, कवितायें और सामाजिक, राजनीतिक निबंधों की रचना की. प्रकाशित पुस्तकें इस प्रकार हैं:-

1. पूरब और पश्चिम (1963): पूर्णकालिक नाटक
2. खरीदा हुआ चेहरा (1983):एकांकी संग्रह
3. नागफनी की डाल (1983):एकांकी संग्रह
4. धीरे बहो गंगा (1989):एकांकी संग्रह
5. आदिम अग्नि (1989): एकांकी संग्रह
6. रावण तेरे रूप अनेक (1989): एकांकी संग्रह
7. बीवियों की हड़ताल (1996): प्रहसनों का संग्रह
8. शापग्रस्त (1996):
9. नारदजी चुनाव के चक्कर में (1996) बाल नाटक
10. दूसरी सृष्टि (1996):
11. बुद्धम शरणम् गच्छामि (1996): नृत्य नाटिका
12. मुर्गियों को गुस्सा क्यों आता है (1996): I व्यंग्य नाटक

प्रो० श्याममोहन अस्थाना:

“ यथानामसम्मोहक व्यक्तित्व ”

बिधाता की सबसे खूबसूरत मूर्तिमान रूप रूप मानव, जो अपने विवेक से विश्व में जो कुछ भी देखता है उसे अपने अनुभव से अमिनय का स्वरूप प्रतिपादित कर प्रत्येक मनुष्य के मानस पटल पर अपनी छाप छोड़ जाता है। उसमें वह कला प्रकृति प्रदत्त होती है और वह “ यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते” परिभाषित करने लगता है। ऐसे लोग किसी परिचय के मुँहताज नहीं रहते। एक न एक दिन कुशल कलाकार के स्मरणार्थ न परिवार अछूता रहता हैं न उनके समर्पित लोग श्याममोहन अस्थाना जी का संस्मरण लिपिबद्ध करते हुए हर्ष और बिषाद दोनों की अनुभूति हो रही है। यशः शेषः पुण्यात्मा अस्थाना जी ने अपने कर्तव्य और व्यक्तित्व से आरा जनपद की बहुत सेवाएँ की है। वाराणसी से पधारे अस्थाना जी अपने कर्मों से इतना यश अर्जित किया है कि जनपद उन्हें कभी विस्मृत कर ही नहीं सकता। ठीक ही कहा हैं कीर्तिर्यस्य सः जीवति”

प्रो० श्याममोहन अस्थाना जी एक प्राध्यापक होने के साथ-साथ एक प्रख्यात नाटककार एवं कवि हृदय भी थे इनका जन्म 29 अक्टूबर 1924, वाराणसी में माध्यम श्रेणी परिवार में हुआ था। 1968 के सभी राष्ट्रीय आन्दोलनों में इन्होंने प्रखर भूमिका निभाई थी जहाँ तक मेरी जानकारी हैं इनकी सात रचनाएँ प्रख्यात हैं।

- (1) पूरब और पश्चिम
- (2) यमराज का बीमा
- (3) खरीदा हुआ चेहरा
- (4) होटल खजुराहो।
- (5) नागफड़ी की डाल
- (6) मेरा नाम माथुर है।
- (7) कोई जगह खाली नहीं।

प्र० अस्थाना जी के बहुआयामी व्यक्तित्व में वाराणसी (काशी) नगरी का विशेष अवदान है क्योंकि यह उनकी जन्मभूमि रही है। वही काशी जो देश की संस्कृति की राजधानी है। तीन लोक से न्यारी विश्वनाथ के त्रिशूल पर स्थित पुण्य सलीला भगीरथी के पश्चिम तट पर अवस्थित तीर्थ गुरु के नाम से प्रसिद्ध हैं यह विविध कलाओं का केन्द्र भी रही है। नटराज की नगरी में नाटरी नाटक मंडली विद्यमान हैं जिससे निकले कलाकार सिने जगत् में छाये हुए हैं।

कलाकार के क्षेत्र में ही ले लिये वाद्य संगीत में भारत रत्न पं० रविशंकर (सितार) श्री विसमिल्ला खान (शहनाई) जैसी विभूमियाँ काशी की ही देन हैं।

कण्ठ संगीत में श्रीमती गिरिजा देवी, श्रीमती वागेश्वरी देवी, पं० महादेव मिश्र, राजन-साजन श्री छून्नु लाल मिश्र इत्यादि का नाम विश्वविख्यात है। नृत्य संगीत में सितारा देवी और शंकर बन्धुओं का नाम स्वर्णांकित हैं।

साहित्य—सृजन की दृष्टि में भी काशी अग्रणी है। यह संस्कृत वाङ्मय की रचना स्थली है। हिन्दी साहित्य की निर्मातृ भी है। मुंशी प्रेमचन्द्र, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जय शंकर प्रसाद, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल जैसे मूधन्य विद्वानों का भी यही नगर है।

ऐसी ही आबोहवा में प्रदुर्भूत नाट्य साहित्य, संगीत आदि कलाओं में निष्णात प्र० स्थानाजी की कर्म भूमि आरा जो बिहार में भोजपुर जिले में अवस्थित है। यहाँ आकर उन्होंने महाराजा महाविद्यालय, आरा में राजनीतिशास्त्र के प्रध्यापक पद को सम्भालते हुए नाट्य साहित्य संगीत आदि मनमोहक प्रदर्शन से वे सबका मन जीत लेते थे। सास्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेना उनका शौक था। उनका विश्वास था कि —

साहित्य संगीत कला विहीनः

साक्षात् पशु पुच्छ विषाणहीनः।

यानी साहित्य संगीत कलारहित व्यक्ति बिना सिंह पूछ के पशु तुल्य है। इसीलिए इन्होंने इस कलाओं को अपने आप में आत्मसात कर लिया और जन जागरण के रूप में परिवार के साथ-साथ जनापद के अन्य लोगों को भी जोड़ने का सफल प्रयास किया।

जहाँ तक परिवार की बात है इनका परिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन बहुत सुखमय था। सपलीक दो सुपुत्रियों का एवं एक सुपुत्र का वरदान प्राप्त हैं और उन सबों का भी भरा पूरा परिवार है।

इस इतिवृत्त के विश्लेषण के पीछे मेरी जानकारी का कारण है कि आरा मेरी जन्म भूमि एवं कर्म भूमि रही है। इनकी धर्म पत्नी श्रद्धेया स्व० सावित्री अस्थाना मेरे विद्यालय श्री जैन बाला विश्राम की प्रधानाध्यापिका थी। कालान्तर में मैं भी स्थानीय महिला महाविद्यालय आरा से प्रधानाचार्य पद से अवकाश प्राप्त किया। मेरे व्यक्तित्व के निखार में अस्थाना दम्पति का विशेष योगदान रहा है। जिसके लिए यावत् जीवन अनवरत श्रद्धा सुमन अर्पित करती रहूँगी।

श्रद्धावनतः

कमल कुमारी सिंह

अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्या

म०म०महिला महाविद्यालय,आरा

- डॉ. कमल कुमारी सिंह

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना का नाम भोजपुर जिले के प्रोफेसर में शीर्ष पर लिया जाता है।उनका जन्म बनारस में 1930ईस्वी में संभ्रांत कायस्थ परिवार में हुआ था। स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक नाटकों और लेखों ने राष्ट्रभक्ति की ज्वाला को प्रज्वलित करने में घी का काम किया।उनके आलेखों और नाटकों को पढ़कर लोग जागृत करते। स्वतंत्रता की अलख जगाई और हजारीबाग जेल में बंद भी हुए। प्राचीन काल से ही अन्य क्षेत्रों की भांति कला एवं संगीत के क्षेत्र में भी बिहार की धरती अत्यंत उर्वरा रही है। इसने एक से बढ़कर एक कलाकारों को पैदा किया है।

जिन्होंने अपने कला के बल पर देश -विदेशों में लोगों को बिहार का लोहा मानने पर बाध्य कर दिया है। भारतीय नाट्यकला के क्षेत्र में ऐसे ही एक कलाकार थे -प्रो श्याम मोहन अस्थाना। बिहार के इस प्रौढ़ कलाकार ने 87 वर्ष की आयु में अब तक अनेक बार बिहार से बाहर जाकर अपने राज्य का प्रतिनिधित्व किया और सम्मानित भी हुए। दर्जनों बार आकाशवाणी और रंगमंच पर कार्यक्रम पेश कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने वाले प्रो श्याम मोहन अस्थाना बिहार के नामी-गिरामी कलाकारों के साथ भी कई कार्यक्रमों में संगत कर चुके हैं।

मसूरी, शिलांग में भी इनके नाटकों की प्रशंसा हुई। ये लड़के और लड़कियों की टोली लेकर उनका समुचित ख्याल रखने का भी कार्य बखूबी किया करते।इनके पिता स्वर्गीय दुर्गा प्रसाद एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। मां धार्मिक विचारों की महिला थी।आज भी उनके घर में संगीत का उचित माहौल है। इनके घर में ही संगीत का विद्यालय इनकी सुपुत्री कावेरी मोहन चलाती है।जो उस विद्यालय की केंद्राधीक्षक भी है। बचपन से ही उनकी रुचि गायन और नाटकों के प्रति है।इनकी प्रारंभिक शिक्षा बनारस में ही हुई थी।

फिर M.A.,ph.D की डिग्री ग्रहण किया।वे मुझे बहुत प्यार और सम्मान दिया करते थे। मेरे श्वसुर जी के बाद इस जिले के वे प्रथम व्यक्ति थे जो मुझे अपनी बहू जैसा प्यार करते थे। मैं ऐसे महाजानी, विद्वान पुरुष के चरणों में कोटिश प्रणाम निवेदित करती हूँ कि ऐसे महामानव बहुत कम अवतरित होते हैं।वे कहते थे कि-ममता! सफल जीवन के दो रास्ते हैं।पहला पुरुषार्थ और दूसरा कष्ट सहने की क्षमता। पुरुषार्थ में जिसका विश्वास होता है वह कठिन से भी कठिन काम करने में भी नहीं झिझकता। उन्नति k शिखर पर वहीं पहुंच सकता है जो पुरुषार्थ को जीना जानता है। सहिष्णुता की कमी के कारण इंसान चलते-चलते रुक जाते हैं और असफलता, कुंठा और निराशा के शिकार हो जाते हैं। आधुनिक मानव अगर ये बातें सीख लें तो वह ऊंचे-ऊंचे लक्ष्य तक बहुत जल्द पहुंच सकता है।

पुरुषार्थ और कष्ट सहिष्णुता का विकास करने के लिए प्रत्येक मनुष्य में नई आस्था, श्रद्धा एवं विश्वास का संचार होना जरूरी है। श्रद्धाहीन व्यक्ति ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता और ज्ञान के बिना वह आचारवान नहीं बन सकता।ये सारी ज्ञानवर्धक बातें आज विलुप्त प्रायः घरों से होती जा रही है।समय के वे बहुत पाबंद थे। अगर आप उनके द्वारा आयोजित कार्यक्रम में लेट जाते तो वे हंसते-हंसते कहते "एजी-एजी तुम पांच मिनट लेट हो" तुम पर पांच रुपए फाइन लगेंगे।

बड़े ही प्यार और सम्मान के वे शब्द होते थे।कभी भी किसी को ऊर्जावान बनाए रखने की टिप्स देते। इनकी धर्मपत्नी सावित्री अस्थाना नेमिचन्द्र शास्त्री की प्रधानाध्यापिका रह चुकी हैं। वे बहुत ही विदुषी महिला थी। उनकी पुण्यतिथि हर साल मनाते थे। चाची जी की मृत्यु के बाद काफी विचलित हो गए थे परंतु पुत्र डॉ दीपक कुमार और पुत्री कावेरी मोहन के देखरेख से संतुष्ट हो पुनः इनकी जिंदगी शुरू हो गई।

इनकी तमन्ना नाटक के क्षेत्र में विश्व कीर्तिमान स्थापित करने की थी।वे कहते थे कि हर कलाकार की हसरत होती है कि उसे प्रोत्साहन मिले।उसका सम्मान हो।

बिहार की माटी सदैव कलाकारों को मुकाम पर पहुंचाने का प्रयत्न करती रही है।इन दिनों कला यहां पर अपनी अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है और कलाकार श्रीहीन महसूस कर रहे हैं। यहां आज सम्मान मिलने की जगह दर्द एवं ठोकरें मिल रही है। भ्रष्टाचार के वे सख्त विरोधी थे। वे कहते थे कि -ममता! भ्रष्टाचार एक ऐसा जादू है, जो सरकारी दफ्तरों में चुपचाप काम करता है।यह बाहर से बुरा दिखता है परन्तु अंदर से बहुत काम का होता है।यह अफसरों को थकान से बचाता है तो बाबुओं को मुस्कुराने की वजह भी देता है। मैं उनकी बातों पर हंसती थी।मुझे पटना रेडियो स्टेशन ले जाकर मेरा परिचय सभी से करवाया और आरती कार्यक्रम में कहानी का प्रसारण करवाई।फिर तो रेडियो स्टेशन से आरती कार्यक्रम के तहत मेरी कहानियों का प्रसारण आरंभ हो गया।

उनका अधिकांश समय नाटकों को लिखने में बीतता।वे नाटक के क्षेत्र में आज भी सूर्य और चांद की भांति चमक रहे हैं।उनके नाटक और एकांकी हिंदी साहित्य की अमूल्य संपत्ति है।इनका पहला नाटक -"आखिरी रात" है।इसी से इनकी पहचान साहित्य जगत में हुई। इसके बाद तो नाटकों को लिखने का सिलसिला चल पड़ा और ये बिहार के सुप्रसिद्ध नाटककारों के श्रेणी में आ गए। नाटकों की तो जैसे झड़ी लग गई। इनके कई नाटक राष्ट्रीय श्रृंखला में प्रसारित हुए।जब ये हास्य नाटक प्रस्तुत करते हैं तो हंसी के झरने फूट पड़ते हैं। शुरू से ही विद्रोही प्रवृत्ति के होने के कारण 1942 के राष्ट्रीय आंदोलन से 1974-1975 के जन आंदोलन तक इनकी सक्रिय भूमिका रही।इनकी अनेक रचनाएं हैं जो निम्न हैं-

1. पूर्व और पश्चिम
2. खरीदा हुआ चेहरा
3. नागफनी की डाल
4. धीरे बहो गंगा
5. आदिम अग्नि
6. रावण तेरे रूप अनेक
7. बीबियों की हड़ताल।

इनके अलावा भी कई नाटक इनके अप्रकाशित हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रो श्याम मोहन अस्थाना समाज में व्याप्त कुरीतियों का पर्दाफाश किया है।इनकी सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक है। इनकी दो पुत्रियां और एक लड़का हैं जो अस्थाना चाचा जैसे हैं। जो वाराणसी में नेत्र चिकित्सक हैं और अपने नाम दीपक कुमार को सार्थक कर रहे हैं। मैं इन्हें दीपक भैया कहती हूँ। बहुत ही मिलनसार हैं और टुन्नी दी का क्या कहना। वो तो मेरा बहुत खयाल रखती है।इस तरह से देश, धर्म और राष्ट्रीयता के स्वर बुलंद करते हुए अस्थाना चाचा 2000 में चल बसे। उनके नाटकों को आज भी आरा शहर में मंचन किया जाता है।ऐसे महामानव के प्रति मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

धन्यवाद

- डॉ. ममता मिश्रा

"ॐ श्रीगणेशाय नमः" "जय ज्योतिषाचार्य"

Page No.
 Date: / /



श्री. श्याम मोहन अस्थाना
जन्म शताब्दी वर्ष

गुरु परम्परा की शृंखला में पूज्य गुरुदेव आदरणीय श्री. श्याम मोहन अस्थाना अग्रणी माने जाते हैं। एक गुरु की मंति वे सदैव व्यक्तित्व-निर्माण, चरित्र-निर्माण एवं राष्ट्र के नव-निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। वे ~~के~~ ~~उन्होंने~~ न सिर्फ समाज का निर्माण किया बल्कि अपने प्रिय शिष्यों के जीवन की मजबूत छड़ आधारशीला रखी और ~~अ~~ उचित दिशा-निर्देशन में कार्य करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित की किया। स्व. श्री. श्याम मोहन अस्थाना ~~जी~~ का व्यक्तित्व और कृतिव्य शैली सरल और ~~व्यक्त~~ व्यापक है कि कोई भी व्यक्ति उनसे एक बात मिल लेता था, वे उस व्यक्ति पर ~~अपनी~~ अपने विचारों और सरल सुमधुर व्यवहार से गहरी ~~आभा~~ छाप छोड़ देते थे।

1924 श्री. श्याम मोहन अस्थाना का जन्म 29 अक्टूबर, ~~सिद्ध~~ ई. में वाराणसी में एक महत्त्वपूर्ण परिवार में हुआ था। पूज्य नगरी भगवान शिव की नगरी वाराणसी में जन्म होना एक परम सौभाग्य था। कहे हैं कि जिस पर शिव की कृपा होती है वही व्यक्ति आगे चलकर महान व्यक्ति होता है। कहा गया है - "छैनहार वीरवां के होत चिकित्त पात।" श्री. अस्थाना जी जन्म से ही परम तेजस्वी छैनहार और विद्विही प्रकृति के थे। यही कारण था कि स्कूल और कॉलेज की शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने राजनीति में भी भाग लेना शुरू किया और 1942 के राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई थी। महात्मा गांधी का ~~इस~~ ~~बाद~~ ~~गहरा~~ प्रभाव था। अतः आगे चलकर स्वतंत्रता आन्दोलन का हिस्सा बने और जब 8 मार्च आजाद हुआ तो ~~अपनी~~ ज.पी. आन्दोलन 1974-77 में जो बिहार ~~के~~ से शुरू हुआ था - उसमें उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पुलिस की लाठीचार्ज खाती उंगली हुई और ~~वे~~ जेल भी गये। एक महान स्वतंत्रता सेनानी के साथ-साथ वे ज.पी. सेनानी भी रहे। वे ~~के~~ राजनीति शास्त्र के प्रौ. थे। बनारस यूनिवर्सिटी से उनका तत्कालीन आरा के महाराज कॉलेज में हुआ था।

प्रौ. श्याम मोहन अरुणाना से मेरी मुलाकात मेरी जी-एच.डी. करने के दौरान 1998-99 ई. में हुई थी। मेरी साहित्यिक रुचि के कारण उन्होंने मुझे भोजपुर जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन का उपाध्यक्ष बनाया था। इस प्रकार मेरी हमेशा साहित्यिक गोटिठपी और विभिन्न मंचों पर उनसे मिलकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। उन्होंने न सिर्फ मुझे साहित्य लेखन के लिए प्रेरित किया बल्कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित भी किया। महेश महादेवानंद महिला महाविद्यालय में 1999 से पहले का सुअवसर हिन्दी-विभाग में तदर्थ व्याख्याता के रूप में मिला। लगभग 2 डवर्षों से ~~अध्ययन~~ ^{सिखा} अध्यापन कार्य कर रही। इसी दौरान प्रौ. श्याम मोहन अरुणाना ~~की~~ ^{के} विभिन्न साहित्यिक सांस्कृतिक मंचों पर उनका विद्वान् पूर्ण ~~वक्तव्य~~ ^{सुनी} सुनी थी। लगता था जैसे वाणी में मैं सरस्वती विश्व रही थी। सचमुच प्रौ. अरुणाना जी मां सरस्वती के वरद-पुत्र थे।

प्रौ. श्याम मोहन अरुणाना ~~का~~ ^{का} व्यक्तित्व बहुत आत्मीय व्यक्तित्व के चर्चनी थी। न सिर्फ ~~के~~ ^{के} सामाजिक क्षेत्र में बल्कि साहित्यिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में भी कई कतिमान स्थापित किया। उन्होंने कई साहित्यिक ~~का~~ ^{के} ऐतिहासिक, समाजिक और हल्क-व्यापारिक ~~नाटकों~~ ^{नाटकों} की स्वच्छ रचना की। न सिर्फ नाटकों की रचना की ~~बल्कि~~ ^{बल्कि} उनका मंचन भी करवाया। वे सिर्फ आरा में ही नहीं बल्कि अपने शिष्य मंडली के साथ दूर-दूर देशों और ~~के~~ ^{के} और विदेशों में भी गये और नाटकों का सफल मंचन करवाया। उनके नाटकों को देखने के लिए लाखों पी की भीड़ जमा होती थी। उनके ~~का~~ ^{का} आरा के मानसरोवर कॉलेजी स्थित आवास में प्रतिदिन नाट्य रिहर्सल होना था। उनके आवास पर शास्त्रीय नृत्य और संगीत की भी शिक्षा दी जाती थी जो 'शकुंतल संगीत विद्यालय' के नाम से जाना जाता था, आज वही है 'सावित्री-श्याम संगीत विद्यालय' के नाम से जाना जाता है। जिनके प्रौ. अरुणाना जी की सुपुत्री श्रीमती कवेरी मोहन ~~इस~~ ^{इस} संगीत विद्यालय की निर्देशिका हैं। वे स्वयं शास्त्रीय नृत्य की शिक्षिका भी हैं। उनके निर्देशन में संकी ~~हान-हान~~ ^{हान-हान} संगीत की शिक्षा प्रण कर रहे हैं।

स्व. प्रो० राम मोहन स्वामी जी की पत्नी का नाम स्व. सावित्री स्वामी है। उन्हीं के द्वारा आरा में बालिकाओं के लिए सर्वप्रथम बालबाजार स्थित 'महिनी निवेदिता कला विद्यालय' की स्थापना की गई थी जो आज भी लड़कियों की शिक्षा के लिए अग्रणी स्थान माना जाता है।

स्व. स्वामी जी ने न सिर्फ नाटकों की पुस्तकें लिखीं बल्कि कहानियों, संस्मरण, लेख और कविताएं भी लिखीं। एक नाटककार के साथ-साथ वे एक सृष्टि उदार व्यक्तित्व के कवि भी थे। कई रचनाओं का पाठ हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में विभिन्न साहित्यिक मंचों पर किया करने से। प्रो० राम मोहन स्वामी जी की साहित्यिक कृतियाँ

- नाटक : —
1. पूरब और पश्चिम — प्रकाशन काल — 1963 ई. (पूर्व कालिक)
 2. खरीद हुआ चेहरा — 1983 ई.
 3. नागफनी की डाल — 1983 ई. (रंका की संग्रह)
 4. चारों बही बाँगा — 1989 ई. (रंका की संग्रह)
 5. रावण तेरे रूप अनेक — 1989 ई. (पूर्व कालिक)
 6. बिक्रियों की हड़ताल — 1996 ई. (प्रबन्ध संग्रह)
 7. दूसरी सृष्टि
 8. नारद जी चुनाव के चक्कर में — (बाल नाटक)
 9. लुहूम शरणम् गन्धामि,
 10. मुठियों को क्यों गुलसा आता है?

सम्पर्क : — मानसरोवर कॉलोनी, अल्पताल रोड आरा राबिहा।

निश्चय ही स्व. प्रो० राम मोहन स्वामी जी का नाम नाट्य क्षेत्र में चरममुनी की परम्परा में लिखा जाता है। महान हिन्दी के साहित्यकार जयशंकर प्रसाद जी की नाट्य कृतियों की प्रेरणा में स्व. प्रो० राम मोहन स्वामी जी का नाम अग्रगण्य है। प्रो० स्वामी जी की मृत्यु के बाद उनके आरा स्थित मानसरोवर कॉलोनी में अपने आवास में ही गभीर निश्चय ही वे एक महान विद्वान मनीषी साहित्यकार एक एवं कुशल सहज एक सरल व्यक्तित्व थे। उनका स्वर्गीय होने एक साहित्यिक व्यक्तित्व का दर्शन नहीं जाना जा सकता है। परन्तु वे मर नहीं सकते जिनकी कृतियाँ अमर होती हैं, और स्व. स्वामी जी की कृतियाँ अमर हैं और सदा रहेंगी।
उन्होंने हम सभी को शिक्षा नमन करने हैं।

महा अल्पन्त हर्ष की बात है कि प्रो० श्याम मोहन अल्हाना जी की जन्म शताब्दी वर्ष मनाती के उपलक्ष्य में एक स्मृति ग्रंथ निकालने की योजना चल रही है। इस योजना के लिए प्रो० श्याम मोहन अल्हाना जी के सुपुत्र डॉ. दीपक कुमार एवं उनकी चर्मपत्नी जी की बच्चा के पालन हैं। जिनके द्वारा बहुप्रतिष्ठित कार्य संपन्न होने जा रहा है। डॉ. दीपक जी नेत्र-रोग विशेषज्ञ हैं जो बनारस में रहते हैं, लेकिन प्रत्येक शनिवार को आता आते हैं और उच्च मंगलसरोवर कॉलोनी स्पाताल रोड आटा के अपने आवास पर नेत्र-रोगियों को देखते हैं और अपनी सेवा देते हैं। डॉ. दीपक जी की अपनी स्व-पूज्य पिताजी की तरह सरल सद्बुध एवं सुसंयुक्त व्यवहार के व्यक्ति हैं। इनका पूरा परिवार सामाजिक, सांस्कृतिक और शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाता है। कष्ट

कहा जाये तो आरा को लोग हीरा सांस्कृतिक नगरी बनारस कहते हैं। यहां की सांस्कृतिक अंकुश और गतिविधियाँ पूरे देश में गूंजती हैं। स्व. श्याममोहन अल्हाना जी का परिवार नैन सिफ़ आरा में अपनी नाट्य प्रस्तुतियों की वलिक वाराणसी से लेकर दूसरे देश में और विदेशों में जाकर अपना परचम लहराया है।

संक्षेप में कहा जाये तो स्व. प्रो० श्याम मोहन अल्हाना एक महान व्यक्तित्व थे। वे दूसरी के हित के लिए, समाज के कल्याण के लिए और राष्ट्र की सेवा के लिए जीते जी और उन्होंने अपना पूरा जीवन लोक कल्याण के लिए समर्पित कर दिया।

महाकवि श्री स्वामी तुलसीदास के शब्दों में - अल्हाना जी का मानना था - "परहित सारिस चर्म नहीं भाई, पर-पीड़ा सम नहीं अधिभाई"। निरासंदेह आज आरा शहर अपनी सांस्कृतिक नाट्य प्रस्तुतियों के बिना शून्या ही गया है। कई-कई पुर्णों के बाद ऐसी महापुरुष (अल्हाना) का आगमन इस धरा-धाम पर होगा है। मैं पुनः एक बार ऐसी महापुरुष प्रो० श्याममोहन अल्हाना जी की कौशल, लक्ष्यपूर्वकता है। जिनकी महाकवि जगन्नाथ प्रसाद के शब्दों में - उनकी आकांक्षी पंक्ति - समस्त नै जड़ मा न्येन, सुन्दर साकार वनी था नैतनता एक विलसती, आनन्द अखण्ड धना था।

- डॉ. किरण कुमारी

अद्वितीय नाटककार स्व. प्रो. श्याम मोहन अस्थाना

शाहाबाद के मुख्यालय, आरा शहर के ख्याति-प्राप्त, चर्चित और बहुमुखी प्रतिभा के धनी स्व. प्रो. श्याम मोहन अस्थाना राजनीति शास्त्र के आचार्य होते हुए भी अपनी रचनात्मकता के माध्यम से नाट्य-जगत में अमिट छाप छोड़ गए। उनका नाट्य-साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज की चेतना को जागृत करने का सशक्त माध्यम था। जब भी उनके किसी नाटक का मंचन होता, उसकी गूँज दिनों तक लोगों के हृदय और मस्तिष्क में बनी रहती। वे न केवल एक उत्कृष्ट लेखक थे, बल्कि एक संवेदनशील और कुशल निर्देशक भी थे।

मेरा प्रथम परिचय उनसे 01 जनवरी 1975 को हुआ। उस समय उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती सावित्री अस्थाना जी ने एक उच्च विद्यालय की स्थापना की थी जिसका नाम डा० नेमीचंद शास्त्री कन्या उच्च विद्यालय है। विद्यालय की आधारशिला रखने से लेकर उसे ऊँचाइयों तक पहुँचाने तक, वे स्वयं प्रधानाध्यापिका के रूप में अग्रणी रहीं। उसी विद्यालय में मुझे सहायक शिक्षिका के पद पर कार्य करने का अवसर मिला। विद्यालय की उन्नति में जहाँ श्रीमती सावित्री अस्थाना जी की कर्मठता और निष्ठा थी, वहीं स्व. प्रो. श्याम मोहन अस्थाना जी की लगन और रंगारंग कार्यक्रमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। विद्यालय शीघ्र ही उस शिखर तक पहुँचा, जिसकी कल्पना भी कठिन थी।

नाटक के क्षेत्र में उनका योगदान अनुपम था। कामायनी के बैनर तले हिंदी नाटकों को व्यवस्थित रूप देने की अद्भुत कला उनमें विद्यमान थी। उनकी नाट्यशैली समयानुकूल और समाजोपयोगी थी। उनके नाटक राजनीतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को गहराई से उजागर करते थे। उनमें केवल नाटकीयता ही नहीं, बल्कि मौलिकता और जीवनदर्शन भी झलकता था। वे समाज की जटिल समस्याओं को सहजता से प्रस्तुत कर, एक नई दिशा प्रदान करते थे।

उनके नाटकों में नवरस का पूर्ण सामंजस्य दिखाई देता। कहीं रानी लक्ष्मीबाई की अदम्य वीरता का चित्रण मिलता, तो कहीं बुद्ध शरण गच्छामि और संघं शरणं गच्छामि के माध्यम से अस्पृश्यता पर गहन प्रहार होता। उन्होंने कस्तूरबा जैसे आदर्श चरित्रों का स्मरण कराते हुए गांधीजी के तीन बंदरों की प्रेरणादायक शिक्षा को भी मंच पर जीवंत किया।

उनका नाट्य-साहित्य प्रगतिशील और सर्वसमावेशी था। उनके नाटकों में समस्याओं का समाधान, सांस्कृतिक चेतना का प्रवाह, सरल और सजीव भाषा, हास्य-विनोद और अभिनय की सहजता का अनूठा समन्वय मिलता है।

वे मंच के सच्चे साधक थे, जिनकी साधना ने अनेक पीढ़ियों को प्रेरित किया। उनका हर नाटक समाज के दर्पण की भाँति था, जिसमें लोगों ने स्वयं को पहचाना। उन्होंने कला को केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि जनजागरण का साधन बनाया। उनकी रचनाएँ समय की सीमाओं को लांघकर आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। उनका जीवन और साहित्य हम सबके लिए सदैव प्रेरणा-स्रोत बने रहेंगे।

आज भी उनका रचनात्मक व्यक्तित्व स्मृतियों में जीवित है। नाट्य-जगत और समाज उनके अवदान के लिए सदा कृतज्ञ रहेगा।

अंत में, मैं इस महान नाटककार, दूरदर्शी चिंतक और उत्कृष्ट निर्देशक को हृदय से शत-शत नमन करती हूँ।

सर्वप्रथम अस्थाना अंकल को शत-शत नमन हमारा परिवार और डॉक्टर दीपक का परिवार बचपन से ही हम लोग क्लोज रहे हैं।

पुराना मेरा घर गोला मोहल्ला में था और डॉक्टर दीपक का घर राजेंद्र नगर में था हम लोग प्रायः हमेशा एक दूसरे के घर जाया करते थे।

और बहुत क्लोज संबंध रहा है बाद में जब राजेंद्र नगर शिफ्ट किया तो भी बराबर जाया करते थे और आस्थाना अंकल हिंदी के बहुत ही बड़े ज्ञानी और साथ-साथ रंगमंच के बहुत बड़े कलाकार थे और हमेशा कोशिश करते थे कि यहां के जो भी कलाकार रंगमंच में भाग लेना चाहते थे वह चाहते थे कि हमेशा आगे बढ़े और हमेशा गाइड करते थे कि वह अच्छे कलाकार बने और अच्छे जगह पर पहुंच पाए।

बाद में जब वह हॉस्पिटल रोड शिफ्ट किये और वहा डॉ. के. बी. सहाय uncle के साथ में मिलकर किसी न किसी बात पर उन लोगों को कोशिश थी कि जो भी समाजसेवी संस्थाएं हैं और उनके साथ रंगमंच मंच पर पार्टिसिपेट करें।

उन्हें आगे बढ़ाने की प्रेरणा दें उनको हमेशा कोशिश थी कि वह आरा को नेशनल से इंटरनेशनल पर यहां पर लोगों को पहचान बन पाए उन्हें शब्दों से मैं उनको शत-शत नमन और प्रणाम करता हूँ।

- डॉ. मधुकर प्रकाश

मानसरोवर कोचिनी की निम्नसी हमें के नमो मेरा यह सौभाग्य रहा कि प्रो० श्याम प्रोहन अस्थाना जैसी असीम प्रतिभाशाली ~~स्वयंसेवा~~, साहित्यकार गद्य लेखक और निर्देशक, सहृदय व्यक्तित्व का ~~व्यक्ति~~ साहित्य प्राप्त हुआ जिस दिन मुहल्ले में एक पहला फ़ैम स्क्वैर का घर से आती हुई श्रीमती संगीता की धुन, फ़ामी नाटक के संवाद भुर्भ आकृष्ट करते रहते थे, श्रीमती जी ने भुर्भ बताया कि आरा जैसी प्रगतिशय शहर में समासामयिक विचारधारा रखने वाले ~~सेवा~~ सेवानिवृत्त प्रो० अस्थाना का निवास है, हमने आंक कर देखा एक छोटा सा कच्चा और उसके पीछे दायों से बनी कलात्मक रंगोमी से सजा घर, ~~कैतुलव~~ कैतुलवश हमने दरवाजे पर पहुँच कर Bell दबा दिया, अंदर से प्रो० साहेब ने खुद ही दरवाजा खोला चोहर पर शशीमता, व्यवहार में अपनापन, और बाणी में विद्वता। हमारे भँडुखे ही हमने उतारजगत स्टाइस और मेडलर्स को सजा पाया, इस तरह काकाशनी संस्था के संस्थापक से यह मेरी पहली मुलाकात थी। जो अमन भी हो था है।

उसके बाद शहर के हर बड़े कार्यक्रमों में उनकी सहभागिता देखी, उन्होंने अनेकों बच्चों को संगीत, नृत्य, नाट्य में निपुण बनाया, सेवानिवृत्त होने के बाद ~~जहाँ~~ ^{वहाँ} उन्होंने करीब 20 वर्षों तक समर्पित भाव से कला के प्रचार में लगे रहे, हमने उन्हें हमेशा ही- उर्जावान, प्रसन्न और व्यस्त पाया। उनकी यह अमन भी हमारे दिलों पर अंकित है, और उनके व्यक्तित्व का प्रभाव हमारे जीवन में शामिल है।

डा० R.K. Sinha ~~समस्त परिवार~~ ^{समस्त परिवार} की तरफ से श्रद्धांजलि अस्थाना जी को अकृत जड़ेंजिति।

बुद्धम शरणं गच्छामि के २२ बंद
आज भी कानों में गुंजावट है
में मनुष्य है कि वह कल्प भाव
आज भी अस्मक आत्मा को छूते हैं

या वह कौन कुशल चित्त
जितने इन निजी कि रसों में
अभिरे रंग भए

या वह कौन ~~कुछ~~ अनुपम जोदूग
जिसने मनु मानस में नारकों का
जादूई एग भए

कही, जो कहता या स्वयं को
"मेरा नाम तो अस्मान है"
जिसका नही कोई स्मरण है
पाए सब जानते हैं

डा० श्याम मोहन अस्माना को
हर स्मृति, हर हृदय ही स्मरण है।

र एक निरूपे व्यक्ति जो जीता था

केवल साहित्य साधना, नारय साधना स्व संगीत
जो ~~हर~~ पल लीन था अनंतमेल को साधना में

जीवन के हर सुख दुख में सम था (2)
 जीवन के प्रति इन्साफ एवं ललक नहीं
 ना ही चेष्टा या कभी कोई जम था ।
 दुनिया के कारोबार से अलग
 पूर्ण समर्पण या साधकत्व, जीवन ~~संकीर्ण~~ ^{संकीर्ण} ~~संकीर्ण~~
 को ~~समर्पण~~ करता था अर्पण की पीड़ा को भी ।
 जो नाट्य रस का रसिया था
 रस लेता था ~~सर्व~~ ^{नाट्यपत्रों} की पीड़ा को भी
 ऐत अक्षमातक जब अस्विकार को नमन
 उनके जीवन व्यत आँ ।
 उनके जीवन के तस के प्रति समर्पण को ~~सम~~
 नमन

हार्दिक
 आँ
 25/01/25

It's an honour to pen reminiscences for Asthana uncle. Nostalgia brings flurry of emotions. I have chosen two incidents.

1. The first impression-

It was the early sixties when my father announced that the next day we are going to watch a drama at Rupam Cinema. Such outings were not very common. Our joy was compounded when he revealed that Asthanaji (Deepak' father) is the hero.. Next morning our whole family went to Rupam Cinema in our best attire. Ultimately the drama "Usne Kaha Tha" unfolded. Wide eyed we saw Deepak's Papa acting in army uniform as Lehna Singh the main protagonist. I remember him doing some intense physical activities and.. finally dying muttering "Usne Kaha Tha" .Instantly, our respect for him increased many fold and proportionately Deepak's standing in the friend circle.

2. JP movement 1974-

Asthana uncle practically led the JP movement of Bhojpur District for which he was arrested also under MISA.

All colleges were closed including mine so I was at home. My parents were also quite active in the movement and naturally I also got motivated to join it.

Asthana uncle used to organise corner meetings (Nukkad Sabha) at strategic locations. One such evening he called me to join him at the round platform under a big peepal tree at the tri junction of hospital road , shivgung ant sheetal tola. Those days there used to be a daily kirtan performance with dholak and majira in the evening.

There was always a congregation of people at that spot.

First he gave a rousing speech which ended with thunderous applause. Thereafter suddenly he asked me to deliver the next speech. I became jittery being the first such occasion for me but he calmed my nerve assuring he will stand behind me and once i start the words will automatically come. He caringly introduced me to the public along with my father's name. I spoke for about 5-7 minutes was somehow able to grab the crowd's (more than hundred) attention- which generously clapped once it was over.

Now I reflect that the clap was less because of my speech but more due to my father and Asthana uncle as it was largely a students gathering.

But, this incident instilled immense confidence in me and I remain indebted to Asthana uncle for mentoring me to public speaking.

Apart from these two events other things which bonded us was my service as army doctor and my father in law who was his colleague during his tenure at Tribhuvan University Kathmandu. He treated my wife very affectionately.

Whenever I visited Deepak he used to ask about my experiences in the army especially during Srilanka operations with LTTE militants.

Till very late in life he was quite active in the cultural activities whether it was Chitragupta puja or any bigger events. The credit of putting Arrah ahead on the cultural map of Bihar is largely his.

We all miss him dearly. A heartfelt thanks to Deepak for giving me a chance to write an eulogy to the great soul Prof Shyam Mohan Asthana who happens to be his father.

With profound regards

- Col (Dr) Rajesh Sahay (Retd)

स्व श्याम मोहन अस्थाना नाम ही काफी है

नाम लेते ही एक ऐसी छवि सामने आ जाती है जो बहुयामी प्रतिभा के धनी थे। रंगकर्मी साहित्यकार नाटककार एयं अन्य कई गुणों से संपन्न व्यक्तित्व था उनका। वाराणसी की पावन भूमि में जन्मे असीम प्रतिभा के धनि ,आरा में महाराजा कॉलेज में राजनीति शास्त्र में प्राध्यापक के रूप में लम्बी अवधि तक सेवा देते हुए रास्ट्रीय स्तर पर रंगमंच के छेत्र में अपनी पहचान बना चुके थे। भोजपुर के कई प्रतिभाशाली रंगकर्मी को इन्होंने उचित मंच दिया।

"मेरा नाम मथुरा है" "बुहम शरणम् गच्छानी" "पूरब और पश्चिम" अश्वत्थामा हतो नरो" इत्यादि कई नाटक उनके द्वारा रचे गए जिनको पीढ़ियों तक लोग याद करते रहेगें।

अपनी संस्था "कामायनी" के जरिये उन्होंने हिंदी रंगमंच की शोभा बढ़ाई। शांत चित, मृदुल स्वभाव के कारण हमेशा अभिभावक की भूमिका में रहते थे।

उनके सुपुत्र प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डा० दीपक कुमार से घनिष्ठता के कारण मुझे उस परिवार में हमेशा विशेष स्थान प्राप्त था।

उनकी जन्म शताब्दी पर मेरे श्रद्धा सुमन अर्पित है।

- डॉ. सुशील कुमार रंगटा

पता है हम सबसे बड़ा बिचा दवा विनयम पर ही आयताकार है
 है कि वर लेले साक्ष्यकार का साक्षात्कार किया है। एक लेले साक्ष्यकार
 जलने वन मन और चान-ले साक्ष्य की सेवा की बिना भी-
 समान और फुलका की सिलाई है। आज जब लोग एक ही
 फुलक की रचना का ही समझने के युक्तियोग्य समझने के
 तहत बड़े फुलका और समान की समझने का लेते हैं वहीं
 जो उद्यम मोहन समझने के लिए ही समझने की समझने की
 और समझने ही साक्ष्य समझने में समझने रहे - लेले समझने-
 साक्ष्य सेवा की समझने की समझने में समझने - समझने-
 है ही समझने ही,

www.speedmedicalcentre.com

- डॉ. विजय लक्ष्मी शर्मा

When I got a request from Dr Deepak Kumar to send a write-up on his father late Prof Shyam Mohan Asthana on the occasion of the centenary celebration , a flashback of his persona started coming to my mind. All the past memories started flowing quickly. His residence in Rajendra Nagar locality, his enormous contribution to the cultural upliftment of our Ara town, his reputation as a fine teacher and a strict disciplinarian were vivid.

He was deeply involved in the cultural activities that whenever any event was upfront in the town or even at the state level he was always invited.

He was very close to our own late Dr K B Sahay with whom he spent almost all his years. Their houses were also adjacent. My clinic was at a stone throw distance from his house and that made our association even more closer and thicker. I used to visit there quite frequently either to meet him or Dr Deepak or Bhabhi or Tunni. The atmosphere there was as homely as our own.

I saw him busy whenever I went there, either with some literary work or his plays. His drawing room was always agog with excited people discussing almost anything.

His physical fitness was very good. I used to see him walk down our lane to get a rickshaw on the main road and if could not find any he used to walk to his destination. A prominent figure of our Ara town he always attended any function when he was invited. All cultural activities were incomplete without his presence and guidance.

One anecdote I remember when the state level conference of Eye surgeons was organised in our Ara town. My father was the president of the organizing committee. Professor Asthana and Dr KB Sahay were given the responsibility of the cultural evening hosted in honour of the delegates.

And what an amazing event it turned out to be!!! It was thoroughly enjoyed and appreciated by one and all. They had prepared a satirical drama on the prevailing situation of our society and both the daughters of Dr Sahay uncle gave a memorable performance. It is still etched in our memory.

We are still very close to this family and whenever we meet his reminiscent memories are always talked about.

I wish this effort of Dr Deepak Kumar to bring a memorable souvenir to be a great success.

- Dr. Vineet Sinha

वह जब याद आए बहुत याद आए!

यादों का दर्पण भी अजीब होता है। समय की धूल से भले ही धुंधला जाये लेकिन अगर उस धूल को हटा दिया जाए तो अनगिनत चेहरे उसमें से झांकने, बोलने और मुस्कराने लगते हैं। बल्कि खुशी से झूम उठते हैं कि किसी ने उसे याद किया।

पिछले दिनों जब भैया (डॉ. दीपक कुमार) का फ़ोन आया कि तुम्हारे अंकल की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में एक स्मृति ग्रंथ निकाला जा रहा है और इसमें तुमको भी शामिल होना है तो मैं खुशी के साथ-साथ असमंजस में पड़ गया कि अंकल के बारे में मैं क्या कह सकता हूँ। वह मेरे पिता के चंद घनिष्ठतम मित्रों में से एक जरूर थे लेकिन मेरे लिए तो वह गार्जियन समान थे। और अपने पिता तुल्य व्यक्तित्व के बारे में कुछ कहना मैं ही क्या, किसी के लिए भी आसान नहीं होगा। फिर भी हिम्मत जुटा कर जब मैं ने यादों का एल्बम पलटना शुरू किया तो मैं खुद उसमें खोता चला गया। भैया ने कहा था कि समय कम है, अपने संस्मरणों को जल्द से जल्द भेज दो और मेरा यह हाल की कई दिन तो यह सोचने में ही गुजर गया कि कहां से शुरू करूं। इसलिए कि अंकल के बहुआयामी व्यक्तित्व को लफ़्जों में व्यक्त करना "सागर को गागर में समोने जैसी बात होगी। फिर भी अंकल की आत्मा से क्षमा मांगते हुए अपनी यादों के सहारे उन तस्वीरों की कुछ झलक दिखाने की हिम्मत कर रहा हूँ जिसे मैं ने अपनी आंखों से देखा है।

वैसे तो आरा शहर की कई मायेनों में बड़ी खासियत रही है लेकिन यह भी बहुत अहम बात है कि एक ही समय में काशी जैसी पवित्र नगरी की दो दो जीती जागती रूहों ने अपने व्यक्तित्व और अपनी कलाकृतियों के जरिया आरा शहर का भारतवर्ष में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी नाम रौशन किया। इनमें एक तो मेरे पिता स्वर्गीय प्रोफ़ेसर हफ़ीज़ बनारसी और दूसरे अंकल यानी स्वर्गीय प्रोफ़ेसर श्याम मोहन अस्थाना जी थे। और जब दो-दो बनारसी एक समय में एक जगह इकट्ठा हो जाएं तो फिर वह महफ़िल कैसी होगी, अगर आप बनारस जैसे अलबेले शहर की आब व हवा, इसके वातावरण और इसके निराले पन से वाकिफ़ होंगे तो खुद अंदाजा लगा सकते हैं। जी हां, उस समय इन दोनों नौजवान बनारसियों ने आरा को अपनी कर्मभूमि बनाकर जीवन की जो शुरुआत की तो आरा की फ़िज़ा भी बनारसी रंग में रंग गई। पठन पाठन के अलावा चाहे वह धार्मिक हो या राजनीतिक, साहित्यिक हो या खेलकूद से संबंधित, कोई भी महफ़िल हो, इन दोनों के बग़ैर पूरी हो ही नहीं सकती थी।

और मैं भाग्यशाली हूँ कि मैंने इन महफ़िलों को अपनी आंखों से देखा है और अपनी यादों के सहारे अंकल के बारे में कुछ कहते हुए खुद को गौरावित महसूस करता हूँ। चूँकि अक्सर हम दोनों परिवारों का एक दूसरे के यहां आना-जाना होता था, दोनों बनारसी, दोनों एक ही कॉलेज में अध्यापक, दोनों साहित्य के पुजारी, प्रेमी और सेवक, इसके अलावा दोनों का पारिवारिक संबंध इतना घनिष्ठ था कि अंकल को मुझे बचपन से और बहुत करीब से देखने का मौका मिला।

बचपन में जब मैं आरा के हर प्रसाद दास जैन स्कूल में पढ़ता था तो मेरे घर और स्कूल के रास्ते में एक मोहल्ला आता था जिसे महादेवा मोहल्ला कहा जाता है। मुझे उसके पहले का तो नहीं मालूम लेकिन तब अंकल उसी मोहल्ले में किराए के एक मकान में रहा करते थे। और स्कूल आते जाते खुद-ब-खुद

मेरी निगाह उस मकान की ऊपरी मंजिल की तरफ उठ जाती थी जहां हम अपने मम्मी पापा के साथ यूं भी और खास खास मौकों पर तो जरूर आया जाया करते थे। वह बचपन का जमाना था। उस वक्त ना तो मुझे साहित्य का कुछ ज्ञान था ना शेरों शायरी और साहित्य की अन्य विधाओं का। लेकिन पापा के साथ ऐसी महफिलों में आते जाते इन बातों का ज्ञान होने लगा। और तब मैंने जाना कि पापा की तरह अंकल भी पेशे से शिक्षक हैं लेकिन उनकी एक अलग पहचान भी है।

पापा कवि और लेखक तो अंकल जाने माने ड्रैमेटिस्ट जिनकी शोहरत बाद में आरा की सरहदों को पार करके पूरे भारत वर्ष में फैल गई। मुझे याद आ रहा है कि मैंने उनके यहां कुछ पेंटिंग्स भी देखी थीं। अब वह किसकी कलाकृति थी यह तो बताना मेरे लिए मुश्किल है लेकिन उनका ड्राइंग रूम पूरी तरह कला का संगम था। एक तरफ तबला और हारमोनियम तो दूसरे कोने में इसी तरह के कुछ और Musical Instruments.

फिर जब मैं महाराजा कॉलेज आरा में इंटर का छात्र बना तो तकरीबन रोजाना ही अंकल से मुलाकात होने लगी। "कैसे हो?" मुझे देखकर उनका स्नेह भरे अंदाज में पूछना आज भी मुझे नहीं भूलता। इस बात पर मेरे बहुत से सहपाठियों को ईर्ष्या होती कि यार तुम्हें अस्थाना जी इतना मानते हैं। अब मैं उन्हें क्या बताता की अंकल से मेरा क्या रिश्ता था। हालांकि मैं उनका शिष्य नहीं था, मैं साइंस का विद्यार्थी और वह पॉलिटिकल साइंस के विभागाध्यक्ष और प्रोफेसर थे। लेकिन मेरे लिए उनका यह स्नेह एक गार्जियन जैसा था। कॉलेज में भी एक बड़ा खूबसूरत सा मंच था जिस पर आए दिन साहित्यिक व सांस्कृतिक प्रोग्राम हुआ करते थे। और उनमें अंकल के ड्रामों का मंचन एक खास आकर्षण होता था।

कॉलेज का मंच ही क्या शहर के दूसरे सारे मंच जैसे नेमीचंद शास्त्री स्कूल या नागरिक प्रचारिणी सभा का मंच, अंकल के ड्रामों की प्रस्तुति के बगैर सूने लगते थे। तब अंकल महादेवा रोड वाले मकान को छोड़कर कॉलेज के बगल में ही एक मकान में रहने लगे थे। यह मकान ग्रांड फ्लोर पर था और ज्यादा कुशादा भी। अतः अब वहां पूरी महफिल जमने लगी। मैं जब भी उनके यहां गया तो हमेशा किसी न किसी ड्रामा की रिहर्सल होती देखी। कई बार ऐसा भी हुआ कि किसी पात्र की वेशभूषा अगर कुर्ता, पजामा, टोपी यानी मुस्लिम स्टाइल की होती तो वह मेरे यहां से जाती।

हालांकि अंकल एक नाटककार के रूप में ज्यादा मशहूर हुए मगर वह एक बहुत अच्छे कहानीकार भी थे। उनकी कहानियों का संग्रह भी प्रकाशित होकर पाठकों के द्वारा बेहद पसंद किया गया। यही नहीं, मैं ने उनकी ज़बानी उनकी कविताएं भी सुनी हैं। यानी वह एक कंप्लीट साहित्यकार थे।

यह तो उनके व्यक्तित्व का एक पहलू था लेकिन उनको एक खिलाड़ी के रूप में कम लोगों ने देखा होगा। दरअसल महाराजा कॉलेज आरा में साल में दो मौकों पर-- एक तो स्वतंत्रता दिवस पर और दूसरे गणतंत्र दिवस पर प्रोफेसर्स वर्सिज ऑफिसर्स क्रिकेट मैच हुआ करता था। इस तरह मैंने अंकल को क्रिकेट खेलते हुए भी देखा।

एक रोज मैं कहीं से आ रहा था कि आरा के गोपाली चौक पर बड़ी भीड़ देखी। बार-बार ताली की गूंज से मेरी जिज्ञासा जागी कि देखा जाए आखिर क्या हो रहा है। लाउडस्पीकर से जो आवाज़ आ रही थी मुझे लगा कि यह तो अंकल की आवाज़ है। फिर क्या था। मैं भी भीड़ को चीरता हुआ मंच के करीब जा पहुंचा।

और फिर मैंने देखा कि वाकई वह अंकल ही थे जो शहर की दुर्दशा और शहर वासियों की कठिनाइयों को महसूस करते हुए उनकी पीड़ा को एडमिनिस्ट्रेशन और सरकार तक पहुंचा रहे थे।
इस तरह उस दिन मैंने अंकल को एक लोकप्रिय समाजसेवी के रूप में भी देखा।

आज अंकल हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उन्होंने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व से जो छाप छोड़ी है वह हमेशा जिंदा रहेगी।

- डॉ. अख्तर मसूद

प्रो. श्याम मोहन अस्थाना के प्रति भावांजलि

बिन गुरु ज्ञान कहां से होई

एक चिर शाश्वत पंक्ति, बिना गुरु के ज्ञान की परिकल्पना अधूरा है। गुरु दुनिया का सबसे बड़ा सम्मानित पद है जिसके महत्व को भगवान भी स्वीकार करते हैं। सर्वप्रथम एक अच्छे शिक्षक विचारक राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत, महाराजा कॉलेज स्थापना काल से राजनीति शास्त्र विभाग में सेवा देने वाले आचार्य स्मृति शेष प्रो श्याम मोहन अस्थाना को शत शत नमन। आपके परिश्रम व स्मृतियों को सदा संस्कारी शिष्य प्रेरित होते रहेंगे। जीवन के अनेक संस्मरणों को फिर से संजोने का कार्य आपके पुत्र डॉक्टर दीपक कर रहे हैं। मृत्यु लोक में आना जाना तो लगा रहता है लेकिन रचनाओं को संकलित कर ऐतिहासिक स्वरूप देना एक शिक्षक के प्रति नैतिकता और सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रवासी जीवन को बिहारीपन में बदला

श्याम मोहन अस्थाना नाम ही बताता है कि ये मूल रूप से भोजपुर या बिहार के वासी नहीं है। अस्थाना टाइल उत्तर प्रदेश से जुड़े कायस्थ परिवार की रही है। इन लोगों की वेशभूषा और रहन-सहन श्रीवास्तव परिवार से अलग रहती है। सही मायने में इनका मूल परिवार उत्तर प्रदेश का निवासी रहा और ये प्रवासी बनकर नौकरी की तलाश में आए। और नौकरी के बाद भोजपुर की मिट्टी से रंग गए और बिहारीपन का एहसास कराया। अब शैक्षिक जगत में एक अच्छे शिक्षक के रूप में अपनी पहचान बनाई।

समस्यगत अनुभूतियों पर चलाई लेखनी

भोजपुर का इतिहास लड़ने भिड़ने का रहा लेकिन विकास के दौर में काफी पीछे रहा। समाज में उच्च नीच, जाति पाति, बड़े छोटे का भेद, मजदूरी करना, मौसम पर आधारित खेती यही मुख्य पेशा रहा। इन तमाम परिस्थितियों पर हृदय व्यथित होकर नाटकों का रूप लिया। नाटक लेखन के प्रति लगाव बढ़ता गया और एक नाटककार के रूप में इन्हें ख्याति बढ़ने लगी। नाटकों की दुनिया में इन्होंने एक इतिहास बनाया। चर्चित नाटकों में मेरा नाम मथुरा है, तीन सौ सीसी खून, नागफनी की डाल, बाजार भाव, कोई जगह खाली नहीं है, यह भी सच है, आदि हैं जो समाजिक आर्थिक विषमता के भावनाओं पर लिखी गई हैं। जिसे साहित्यकारों ने सराहा और राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली। वैसे अन्य नाटकों की श्रृंखला में जिंदा लाश औरंगजेब बनाम शिवाजी आम्रपाली अंगारा मदर पंडित मदन मोहन मालवीय महाराणा प्रताप बर्बर औरंगजेब चक्रवी वीर अभिमन्यु आदि हैं जिसकी चर्चा कम है।

अभ्यास को बनाया आधार

पुस्तकों की रचना के बाद नाटक को मूर्त रूप देना उसे समय एक टेढ़ी थी। नाटक के लिए इन्हें इष्ट मित्रों के घरों से जाकर उनके माता-पिता एवं लड़के-लड़कियां को काफी मशक्कत के बाद बुलाना पड़ता था। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था में नाच गान नाटक को लोग निम्न कोटि की स्तर में देखते थे। ऐसी व्यवस्था केवल कोठे या राजघराने तक सीमित थी। कभी-कभी नाटक पात्रों की कमी, खासकर महिला कर्मी से काफी निराशा होती थी। कभी-कभी एक ही पात्र से पुरुष और महिला का नाटक खेलने पड़ता था। समय के विरुद्ध चलना काफी दूरूह, महंगा और तिरस्कारपूर्ण रवैया था। जिसके लिए इन्हें काफी फजीहत का सामना भी करना पड़ता था। नाटकों की तैयारी तो और भी मुश्किल का काम था। देर समय तक अभ्यास करना परिवार को चिंता में डाल देता था। लेकिन करत करत अभ्यास थे जडमति

होता सुजान वाली कहावत युवाओं को प्रेरित एक योग्य रंग कर्मी का दर्जा दिलवाया। प्रो अस्थाना नाटक की ज़िद से कभी समझौता नहीं किए कर्म पथ पर चलकर नाटक के दुनिया का बेताज बादशाह बने रहे।

जे पी आंदोलन में जेल गये

छात्र आंदोलन की सुगबुगाहट 1971 से प्रारंभ हो गई थी। मंहगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, दमनात्मक कार्रवाई आदि से छात्रों द्वारा आंदोलन प्रारंभ चल रहे थे। 1974 में जय प्रकाश नारायण के जुड़ने से संपूर्ण क्रांति राष्ट्रीय आंदोलन बन गया। परिणामस्वरूप आपातकाल ला गाकर देश को कारागार बना दिया गया। राजनेता से लेकर तमाम आंदोलनकारी जेल में बंद किए गये जिसमें प्रो श्याम मोहन अस्थाना प्रमुख रहे। लेकिन अपने विचार और नाटक को कभी नहीं छोड़ा, अगर सच कहें तो जीवनपर्यंत नाटक प्रहसन के लिए जीते रहे। जयंती व पुण्यतिथि के समर्थक रहे सामाजिक कार्यकर्ता होने के कारण लगभग सभी महापुरुषों और साहित्यकारों के नाम पर स्कूली बच्चों के साथ भाषण, रंग भरो, या तात्कालिक प्रतियोगिता कराता था। जिसका ये पूर्ण समर्थन करते थे और यदा कदा उपस्थिति भी रहते थे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रवल सहयोगी

हिंदी साहित्य से गहरी रुचि थी जिसके कारण हिंदी साहित्य सम्मेलन, भोजपुर जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन आदि संगठन अपने बल और आर्थिक सहयोग से चलते रहे। जिसका सारा खर्च स्वयं वहन करते थे। कार्यक्रम लघु नाटक, प्रहसन से आच्छादित रहता था।

दहेज रहित व अंतर्जातीय विवाह के रहे समर्थक

यद्यपि मुझसे इनका लगाव बिल्कुल अपनापन जैसा रहा लेकिन अभिभावक के रूप में बराबर इस बात का विरोध करते थे की जातीय संगठन राष्ट्र की प्रगति में बाधक और महापुरुषों का कद छोटा करने वाला होता है। वौधिक लोगों को इससे दूर रहना चाहिए। तुम दहेज विरोधी युवाओं का सम्मेलन करो, समरस समाज स्थापना के लिए जातिविहीन शादी करावो, इसके लिए मैं जहां चलना होगा चलूंगा। बड़े गर्व से कहते थे मेरे भी घर में सभी शादियां अंतर्जातीय हुई हैं।

सुबह का दौर रोज रोमांचक होता था

वैसे तो डा के बी सहाय प्रसिद्ध चर्म रोग विशेषज्ञ थे लेकिन कहीं से भी साहित्य साधना, रचना, बोलचाल व मधुर वाणी किसी भी चर्चित साहित्यकार को पछाड़ने की अदभुत क्षमता थी। हास्य-व्यंग्य की कविताएं स्तरीय और मंच को गौरवान्वित करती थी। डा सहाय के पास आया उनका होकर रह गया। सुबह में प्रतिदिन सेविंग, अखबार और मेरा आगमन बैठकर बातचीत और चाय विस्किट। तब तक अस्त-व्यस्त शर्ट पायजामा पहने प्रो श्याम मोहन भी पहुंच जाते थे। गुड़ मौरनिंग और चाय की चुस्की। फिर शुरू होता था शब्दों का व्यंग्य बाण। डा के सहाय भी बोलचाल में भाईसाहब को चिढ़ाने में कभी पीछे नहीं रहती थी। दोनों लोग भाई साहब को चाय के साथ पानी पिला देते थे। हंसी विनोद की फूलझड़ियों से मन आह्लादित होता था। वो अब घड़ी कभी नसीब नहीं होगी, न वो लोग रहे ना दिनचर्या। ऐसे नेक पड़ोसी जिसे लोग एक ही परिवार मानते थे।

राष्ट्रीय स्तर पर हुआ नाटकों मंचन

नाटकों की रचना और उनका मंचन करने में कई दशक लगे तब जाकर कहीं नहीं नाटकों की दुनिया का बादशाह निकल गया। कई नाटकों की पटकथा संवाद संयोजन और पात्रों की प्रतिभा ने इन्हें नाटककार बनने में अहम भूमिका अदा की। इन उनके कई शिष्य उनके कठिन श्रम और रिवीजन को याद अपने आप को एक बेहतरीन कलाकार मानते हैं। देश के लगभग कई राज्यों में सफलतापूर्वक उनके नाटकों का मंचन पुरस्कार गजल का विषय है।

- दिनेश प्रसाद सिनहा

श्याम एक रंगमंच

अजी- अजी तुम भी कुछ कर सकते हो, से लेकर तुम भी करो ना! एक ऐसी शख्सियत की आवाज जो आज भी मेरे कानों में गूँजती रहती है! क्योंकि आज भी मेरे कान और मेरी आंख इस बात की गवाह है कि जब भी मैं उस आर्य धरती के मानस पुत्र के समक्ष बैठा कुछ न कुछ नई बातें मेरे कानों को सुनने को मिलती, आंखों से कुछ नए अंदाज देखने को मिलते थे।

अर्थात मैं यूँ कहूँ कि उनके हर एक अंदाज या उनकी उपस्थिति जिन जगहों पर होती थी, एक रंगमंच बन जाता था। जिसमें समाहित होता था, एक रंगकर्मी का डायलॉग, एक्शन और रंगकर्मी का दृढ़ निश्चयी हौसला। कैसे कहूँ या लिखूँ, उनके हर एक अंदाज को जिसे देखने के लिए मेरी आंखें ललायित रहती थी।

मुझे याद है 1996 का वो कामायनी नाट्य संस्थान की नाटक "बुद्ध शरणं गच्छामि" जिसका निर्देशन वे स्वयं कर रहे थे और कलाकार डॉक्टर नमोनारायण शास्त्री कन्या उच्च विद्यालय के रंगमंच पर अपनी निजी जिंदगी की तरह नाटक को लोगों समझ रखते जाते थे। जिसमें समाहित था उस समय की समाज में फैली हुई कुरितियों छुआछूत जैसे भेदभाव। एक अछूत की लड़की एक राजा की लड़के से प्रेम कर बैठी है और जब पता चलता है कि वह अछूत है तो उसके प्रति समाज में फैली कुरितियां प्रदर्शित होती रही थीं, और उसे बड़े बारीकियों से अपने पिता तुल्य अभिभावक रंगमंच के आगे पीछे होकर हर एक दृष्टि से निहार रहे थे।

वैसे तो कोई सोच भी नहीं सकता था कि उत्तर प्रदेश के बनारस जिले में 1924 अवतरित हुए पुरोधा एक दिन बिहार के भोजपुर जिले के आरा शहर के बेटा बनकर रह जाएंगे! जहां लगाएंगे एक विशाल वट वृक्ष रंगमंच का...! मेरी जानकारी प्रोफेसर श्याम मोहन अवस्थाना जी के बारे में बहुत कम होगी क्योंकि मेरी उम्र उनके पुत्र-पुत्री से काफी कम है!

हो जहां तक मेरी जानकारी है या जितना दिन मैं साथ रहा हूँ! उसमें जो मुझे ज्ञात है। थोड़ी सी चर्चा आप लोग के साथ करना चाहता हूँ लेकिन इस शर्त के साथ की आप मेरी जानकारी एवं लिखने के कला को भावनात्मक दृष्टि से देखेंगे।

निश्चित रूप से 1951 का वर्ष आरा के इतिहास के लिए स्वर्णिम वर्ष होगा। जिस दिन प्रोफेसर श्याम मोहन अवस्थाना परिणय सूत्र बंधन में बंधे थे, आरा की एक विद्युत बेंटी सावित्री से.....

अगर सच में हृदय से पूछा जाए तो जितने आरा रंगमंच के लिए वरदान साबित हुए, प्रो. श्याम मोहन अवस्थाना तो वहीं नारी शिक्षा के क्षेत्र में आरा के लिए श्रीमती सावित्री अवस्थाना भी सावित्री बाई फुले साबित हुई आरा के बेटियों के लिए।

अब दौर था 1956 का अर्थात प्रोफेसर श्याम मोहन अवस्थाना के महाराजा कॉलेज में बतौर राजनीति शास्त्र के व्याख्याता रूप में आरा आगमन का जहां उस दौर में भ्रष्टाचार, दहेज प्रथा, छुआ-छूत जैसे अनेक सामाजिक कुरितियां व्याप्त थीं तो वहीं दूसरी ओर नारी शक्ति में व्याप्त अशिक्षा के कारण स्त्रियों को घर की शोभा एवं भोग विलास की वस्तु समझा जाता।

ये वो क्रांति का दौर था जहां से शुरू हुआ सामाजिक कुरितियों पर प्रोफेसर श्याम मोहन अवस्थाना के नाटकों का प्रसार तो वहीं दूसरी ओर स्वर्गीय सावित्री अवस्थाना के द्वारा नारी शिक्षा उत्थान के लिए नए-नए विद्यालयों एवं शिक्षा मंदिरों का निर्माण का सिलसिला जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण आरा शहर के जैन कन्या पाठशाला हो या फिर जैन बाला विश्राम हो, चाहे आज के दौर में डॉ. नेमिचंद्र शास्त्री कन्या उच्च विद्यालय और भविनी निवेदिता कन्या विद्यालय हो।

अगर पिता तुल्य स्वर्गीय प्रो. श्याम मोहन अवस्थाना के कृतियों का संग्रह किया जाए तो एक बहुत बड़ा काव्य संग्रह बन सकता है। उनके द्वारा लिखित लघु नाटिका, नृत्य नाटिका, नाटक, हास्य नाटक, एवं व्यंग्य नाटक आदि न जाने कितने प्रकार के किताबों का एक बहुत बड़ा समूह उपलब्ध है। जिसमें महत्वपूर्ण हैं — *नाटक मुर्गियों को गुस्सा क्यों आता, मुकदमा, कोई जगह खाली नहीं, बुद्ध शरणं गच्छामि* आदि।

कलाकारों या रंगकर्मियों के प्रति उनका व्यवहार इतना संवेदनशील था कि वे उनके साथ पारिवारिक व्यवहार करते थे। रिहर्सल के दौरान अगर कोई कलाकार उपस्थित न हो और उनको सिर्फ पता चले कि किसी कलाकार का तबीयत खराब है तो उसके बारे में या उसका कुशल क्षेम पूछने उसके घर तक जाने का कार्य अविस्मरणीय है।

अगर सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में देखा जाए तो उनके यहां किसी प्रकार के छुआछूत का भेदभाव नजर नहीं आता है। इनके द्वारा मेरी जानकारी में अनेक को असहाय गरीब लड़के-लड़कियों का शादी भी कराया गया है।

इनके द्वारा मंचित नाटकों का रंगमंच आज भी उनके नाटकों का इंतजार करता है। चाहे वह शिमला का रंगमंच हो, चाहे पटना का, चाहे नागपुर का, या देश भर के जितने भी मंच हैं, जहां पर इन्होंने अपनी नाटकों के प्रस्तुतियों में भाग लेकर भागीदारी निभाई है। आरा में महिला पात्र की भूमिकाएं पुरुष ही निभाते थे। इनके द्वारा महिला पात्र के लिए आरा रंग मंच पर पहली बार अपनी बहन सत्या अस्थाना एवं छंदा सेन जैसी महिलाओं को नाटकों में आगे लाने का अद्भुत एवं सराहनीय प्रयास किया गया।

ऐसा नहीं की प्रो. श्याम मोहन अस्थान सिर्फ रंगमंच तक ही सीमित रहे। इनमें एक क्रांतिकारी जुनून भी भरा हुआ था। इनके द्वारा जेपी आंदोलन 974 में भाग लेकर जेल जाने का काम किया गया। मेरे लिए जीवन का अविस्मरणीय पल 200 का था। ऐसा इसलिए कि उनके पुत्र-पुत्रियों का यह मानना था कि जब पापा और मां अर्थात प्रो. श्याम मोहन अस्थान और श्रीमती सावित्री अस्थान की शादी हुई थी, तो उस समय आरा और बनारस का माहौल, व्यवस्था, परिवेश या फिर यूँ कहे की उस समय की आर्थिक सक्षमता आज के परिवेश की तरह नहीं था। अर्थात उस समय के अंधरे रह गए कुछ शादी के रस्मों को इस समारोह में पूर्ण करने का प्रयास किया गया था। सौभाग्य से मुझे भी इस समारोह में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

यह सुनहरा पल था उनके परिणय सूत्र बंधन दिवस के 50वें वर्षगांठ समारोह का..... जिसमें गीत संगीत के साथ-साथ उनके द्वारा लिखित पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद पर नाटक का मंचन हुआ और इस नाटक में उनकी पोती वसु वत्सला जो आज डॉक्टर हैं राबड़ी देवी की बखूबी भूमिका निभाई थी।

इस समारोह में आधुनिक समय के अनुसार सभी व्यवस्थाएं की गई थी। चाहे वह रिंग शिरोमणि का कार्य हो या फिर जयमाल का या फिर उन दोनों दंपतियों के द्वारा केक काटे जाने का....!

अभी रंगमंच पर नाटकों का सिलसिला चल ही रहा था। की संयोग देखिए 1951 में परिणय सूत्र बंधन में बंधे और ठीक उसके विपरीत की 2015 में प्रो. श्याम मोहन अस्थाना ने लगभग 91वें वर्ष पूर्ण कर 92वें वर्ष में अपनी आंखें मूंद ली। अब तो ना वहां उस तरह कह कहे लगते हैं और ना ही किसी तरह के ठहाको की गूंज उठती थी। ऐसा लगा की अचानक रंगमंच की दुनिया में एक अंधकारमय युग आ गया। लेकिन नहीं इतिहास गवाह है! जब-जब धरती पर संकट मंडराया है कोई ना कोई पौरुष सामने आया है। जी हां मैं बात कर रहा हूँ।

उनके बट वृक्ष के तीन पौधे बड़े पुत्र डॉ. दीपक कुमार (वरिष्ठ आंख सर्जन), दो पुत्रियां क्रमशः श्रीमती कालिंदी मोहन एवं कावेरी मोहन की जो आज बड़े हो कर बरगद हो गए हैं। जहां बड़े पुत्र डॉक्टर दीपक कुमार एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीणा सहाय के द्वारा पिता के चरण चिन्हों पर चलते हुए कामायनी नाट्य संस्था को और अधिक मजबूत एवं बेहतर ढंग से आरा और वाराणसी शहरों के साथ-साथ पूरे भारत के रंगमंचों पर लाने का प्रयास किया जा रहा है। तो वहीं दूसरी ओर आरा में सावित्री श्याम संगीत विद्यालय स्थापित कर स्वर कोकिला श्रीमती कावेरी मोहन द्वारा शास्त्रीय संगीत, नृत्य का प्रशिक्षण देखकर अनेकों बच्चियों एवं बच्चों के प्रतिभा को लोगों के समक्ष लाने का प्रयास निरंतर किया जा रहा है।

और अंत में मैं उस महान व्यक्तित्व के प्रति अपनी लेखनी के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, जिनके बगैर हर रंगमंच अधूरा सा प्रतीत होता है। साथ ही मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ, की हे! ईश्वर आप शक्ति प्रदान करें, उनके उत्तराधिकारियों को जो आज भी उनके चरण चिन्हों पर चल कर अपने दायित्व को संपूर्ण जिम्मेवारी के साथ निर्वहन कर रहे हैं।

- हरिशचंद्र

प्रो. श्याम मोहन अस्थाना नाटक के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर इनकी पहचान है रंगमंच के क्षेत्र में इन्होंने नाट्य क्षेत्र में काफी काम की है इन्हीं के प्रयास से महिला कलाकार के रूप में अपनी बहन सत्या अस्थाना को मंच पर स्थापित 1957में किया धीरे धीरे महिलाओं का प्रवेश रंगमंच पर प्रारम्भ हुआ।

इनका जन्म धार्मिक नगरी वाराणसी में 19 अक्टूबर 1934 में हुआ, छात्र जीवन से ही वे सांस्कृतिक गति विधियों में सक्रिय हिस्सा लेने लगे। स्वतंत्रता संग्राम में इन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ काफी संघर्ष किया। एवं जेल गए, बाद में 1951 में विवाह के बंधन में श्रीमती सावित्री अस्थाना के साथ बंधन में बंधे।

रोजगार के तलाश नेपाल के त्रिचन कॉलेज में राजनीति शास्त्र के प्राध्यापक के रूप में कार्य करने लगे, कुछ कारणवश उन्हें नेपाल छोड़ कर स्वदेश आना पड़ा, फिर 1956 में आरा के महाराजा कॉलेज में राजनीतिक शास्त्र के प्राध्यापक के रूप में नौकरी करने लगे, रंगमंच जेपी, आंदोलन में सक्रिय भूमिका रही। उनका प्रमुख नाट्य-मेरा नाम मथुरा है, ये भी सच है, नागफली का डाल, तीन सौ सीसी खून काफी लोकप्रिय रही। दो बार जेल गए जेल प्रवास के दौरान जय प्रकाश नारायण ,लालू प्रसाद यादव इत्यादि नेताओं के साथ इनका मिलना-जुलना रहा।

इनका रंगमंच जीवन काफी लोगों के प्रेरणा का स्रोत रहा, इन्होंने कामायनी आरा संस्था की नींव डाली, जिसके माध्यम से पूरे भारतवर्ष में अपने कलाकारों के साथ नाटक का मंचन किया एवं कई सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार जीते हैं। प्रो. श्याम मोहन अस्थाना एवं उनकी धर्मपत्नी स्व. सावित्री अस्थाना के द्वारा आज का गौरव डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री बालिका उच्च विद्यालय का निर्माण किया, इसके अलावा कला एवं शिल्प महाविद्यालय, भगिनी निवेदिता कन्या विद्यालय, एवं महिला कॉलेज के निर्माण में अग्रणी भूमिका रही।

- डॉ. कुमार निर्मल

हिंदी नाटक के आकाश में सूरज

हम अपने जीवन में रोजाना ही कभी आम कभी खास लोगो से मिलते हैं। उनके साथ बिताए पल याद रह जाते हैं। उनकी प्रतिभा से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। ऐसे ही मैं साहित्यकार प्रो. श्याम मोहन अस्थाना जी से नेत्र संस्थान के निदेशक डॉ. दीपक कुमार के यहां कामायनी संस्था की मीटिंग में मिली। प्रो. श्याम जी डॉ.

दीपक कुमार के पिता जी हैं। वहां डॉ. दीपक जी की पत्नी रंगकर्मी वीणा सहाय जी भी रही। वीणा जी भी साहित्य में रुचि रखती हैं। मेरी रुचि साहित्य में रही इसलिए मैं अक्सर प्रो. श्याम जी से मिलती रहूँ। वो नामी रचनाकार हैं, मध्यवर्गीय परिवार में जन्में अस्थाना जी ने बताया कि उन्होंने कविता, नाटक, सामाजिक और राजनीतिक निबंध लिखे हैं रंगकर्मी होने के कारण उन्होंने नाटक रचनाएं अधिक लिखे हैं जिसमें पूर्व और पश्चिम, धीरे बहो गंगा, खरीदा हुआ चेहरा, नागफणी की डाल, आदिम अग्नि (एकांकी संग्रह), रावण तेरे रूप अनेक, बीवियों की हड़ताल (प्रहसन संग्रह) दूसरी दृष्टि, शापग्रस्त, प्रमुख रहे। अस्थाना जी बच्चों से अधिक प्यार करते थे उन्होंने बाल नाटक भी लिखे। प्रहसन रचनाएं भी की जिसमें नारद जी चुनाव के चक्कर में, बुद्धम शरणम् गच्छामि, मुर्गियों को गुस्सा क्यों आता है। माने उनकी सभी किताबें तो नहीं पढ़ है खजुराहो कीयक्ष्णी पढ़ने का अवसर मिला। मे हिन्दुस्तान अखबार में रिपोर्टर रही इसलिए मुझे साहित्य में रुचि रही मैं उनसे मिलती रहती थी। उनसे साहित्यक चर्चाये होती रहती थी। मैं कह सकती हूँ कि अस्थाना जी हिंदी नाटक के आकाश में सूरज की तरह चमक रहे हैं। उनकी पुत्रवधु भी रचनाकार और रंगकर्मी है इसलिए उनके घर पर साहित्यक चर्चाये होती थी।

प्रो. श्याम मोहन जी कविता भी बहुत सुन्दर लिखते थे उन्होंने अपनी पोती बसु की शादीकाई को काव्यात्मक तरीके से लिखा था जो मुझे बहुत पसंद आया था वह मुझे आज भी याद है। प्रो. श्याम जी आज भी याद आते हैं।
। ऐसे साहित्यकार भुलाए नहीं जाते हैं।

मैं कह सकती हूँ कि प्रो. श्याम मोहन जी कि लेखिनी ने अमित छाप छोड़ी है। कह सकती हूँ कि अस्थाना जी हिंदी नाटक की आकाश में सूरज की तरह चमक रहे हैं।

- डॉ. प्रभा रानी

पृष्ठ-1

रुक्मिणी प्रो. श्यामा सोहन अस्थाना

एक छोड़े शिक्षा विद रुक्मिणी साध-

नाथनाथ साहककार थे

जन्म 1903-04 में लखनऊ में

1963-64 के दशक में आता

शहर के स्थानीय सिनेमाघर

में स्वरूप में लिखे जाते थे उनका

प्रसिद्ध साहक पूर्व और परि-

यस देखा रंगमंच पर

प्रस्तुत कर लहुत प्रसिद्धि

के बल पर ही यह प्रसिद्धि कर

दिमा कि वे देश के एक
बड़े रंगकर्मी हैं।

स्व अस्थाना
साक्षात् अपने पारिवारिक अभि-
भावक थे।

सो बड़ा होकर साधाराजा कान्हेज
आरा में पारिवारिक लिमा रखने
उनके राजनितीशास्त्र की पढ़ाई
की।

सो जब कान्हेज
में पढ़ाई करने आया तब सो

3

समाप्ता की प्रो. अखाना

सक साहान प्रोफिलर, राज-

नितिस, देशकन खक रंजाक-

सी से ।

जब देश में

आपातकाल की घोषणा हुई

तो प्रो. साहब ने एक

कदर देशकन होकर राज

प्रकाश जाहाना के अखान

पर "जे. पी. आन्दोलन" में

शामिल हो गए ।

4

1. मानस्यवरूप उन्हे सरकार के
 काले अहसादेश "सीसा" के
 तहत गिरफ्तार कर जेल
 भेजा गया।

2. आज जीवन बिना किसी लोभ
 के समाज स्वयं देश की
 सेवा करते रहें।

3. प्रो. शाहबा जंभीर मुद्रा से
 भी नहरा लभ करके से
 साधारण रहते थे।

एक बार हमलेवा उनके पास
 लेते थे | उन्होंने बताया कि
 मैं एक बार फारसिया
 था | वहाँ से मैंने बहुत

मैंने एक मुसलमान राजा

लेते थे | उन्होंने उनका नाम

पूछा तो उन्होंने अपना नाम

S. M. Nisethan बताया |

उन्होंने एक मुसलमान राजा

की ने सैयद मोहम्मद समझा

एक मुसलमान संबंधी बात

करने लगा। प्रो. मोहन
 को जे. ए. ए. में कि पूरे अफार
 वे शहा - हूँ कह कर पूरा
 किया।
 सोही ओर से
 पिता तुलम प्रो. शमान मोहन
 अस्थान को शता-शत
 श्रद्धांजलि
 वे हमेशा अमर
 रहेगे।
 ऋतुराज वर्मा
 आरा

- ऋतुराज वर्मा

प्रो० ग्र्याम मोहन अस्थाना, आराके एक ऐसे अतुलनीय व्यक्तित्व का नाम है जिन्होंने अपनी नाट्य अभिनय व निर्देशन के साथ साथ अन्य सामाजिक गतिविधियों में द्वारा समाज के हर वर्ग को प्रभावित किया और प्रेरणादायी बने रहे। एक सच्चे उत्तरदायी नागरिक के रूप में वे शहर सम्बंधी समस्याओं पर अपने विचार पूरी निडरता से प्रशासन से साफा करने से चूकते नहीं थे। महात्मा गाँधी जन्मोत्सव या रोटरी क्लब द्वारा जब भी कोई कार्यक्रम आयोजित होने को होता में उनकी सलाह लेने आवश्यक पहुंच जाया करता। वहाँ हमें 70 के 0 बी० सहाम भी मिल जाया करते थे। इस प्रकार मुझे दो-दो प्रबुद्ध विचारों से अवगत होने का लाभ मिल जाता था। मुझे देखकर वे खुश इसलिये हो जाते थे क्योंकि वे सम्झ जाते थे कि जरूर कोई कार्यक्रम होने वाला है। "लो एक अस्थाना तो पहले से थे ही - एक और आगरा" उनकी यह बात मुझे आज भी याद है। शहर के प्रख्यात समाज सेवी व रोटरी क्लब के स्तंभ कहे जाने वाले आरिकाधीश प्रसाद जिन्हें काकाजी के नाम से बुलाते थे - उनके अनुसार अस्थाना साहब सच्चे अर्थ में एक अच्छे इन्सान थे। यही कारण है कि शायद ही कोई होगा जो इनसे मिलकर खुशी महसूस न करता हो। अर्थ समाज मंदिर के सचिव के रूप में तथा रामलीला कार्यक्रम के आयोजन के लिए लोग अब भी याद करते हैं। उनकी लोकप्रियता का लाभ मुझे भी 'अस्थान' होने के चलते मिल जाया करता था। शहर से प्रगाढ़ लगाव तथा सामाजिक कार्य कलाओं में उनकी संलग्नता अंत तक बनी रही। मेरा मानना है कि समाज के लिए उनका जो भी योगदान था, उनकी बराबरी करने वाला शहर में दूर-दूर तक कोई नहीं।

- राकेश कुमार अस्थाना

Tribute to Late (Prof) Shyam Mohan Asthana on his birth centenary by K. Raman

Late (Prof) Shyam Mohan Asthana was an iconic personality. He was a teacher, a prolific writer, a source of inspiration, an influencer, a role model all rolled into one. With utmost ease he would keep shifting from one hat to another without much ado. For us, the kids of the 60s and 70s he was like our periscope to the outside world almost akin to the present day wikipedia. We would update our general knowledge and perception especially on social, cultural and contemporary political issues. A very well informed person, he was always spreading pearls of wisdom to all the generations alike. His interactions with my father Late (Prof) Kalika Prasad Srivastava and other colleagues would be our intellectual fertiliser for forming our opinions and views of the larger societal issues. Opinion of Asthana chacha was full and final on any debatable issue and to young minds his inputs were nothing less than a boon to us.

He was our window the movie world through his lovely work "Jawab Aayega", a Children Film Society movie targeted for the younger generation was written by him. He rubbed shoulders with legends like Salil Chowdhary who wrote the music of the film and Ismat Chughtai who directed the movie. Honestly unaware of their stature, we flocked to watch it and kept getting goosebumps over its lovely storyline.

At the drop of hat he would be ready with a new script for staging a play. "Ashwatthama Hato, Naro wa Kunjararo wa (अश्वत्थामा हतो, नरो वा कुं जरो वा)", a play in which, Neelam, my sister played the lead role of Ashwatthama, was my first hand introduction to 'Mahabharat' and the perpetual conflict facing the humans between right and wrong, just and unjust and dharm and adharma and the adverse consequences of one's choice. Notably, she also played the lead role of an untouchable in the play अश्वत्थामा हतो, नरो वा कुं जरो वा "Achoot Kanya", another masterpiece by him. My elder sister, Poonam and brother Amar were all involved in the dramatic creations.

Very naturally, he was the force behind sustained staging of the Ramlila in Arrah, which would draw huge crowds from across all corners.

He was our only exposure to the first hand political process by contesting an election of the local body. He would be setting the tone for any positive action during the JP movement. He would be ready with his in depth analysis on any of the political movements. My mother Late Bimla Srivastava participated in the JP movement and so did my sisters.

To sum it up, Late (Prof) Shyam Mohan Asthana, played an important role in the lives of my parents, my elder siblings who directly participated in his social, cultural and political activities under his guidance. To me, he was instrumental in formulating my intellectual faculties, my ideals and my thinking process.

Our humble tributes to Late (Prof) Shyam Mohan Asthana aka Asthana Chachaji.

- Raman Kalika Srivastava, IFS (Retd)

सांस्कृतिक

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना : मेरे सांस्कृतिक गुरु और आरा के रंगमंचीय पुनर्जागरण के शिल्पी – एक व्यक्तिगत और वैश्विक दृष्टिकोण

सारांश

यह लेख प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना (1924-2015) के जीवन और कार्यों का एक गहन व्यक्तिगत और अकादमिक अन्वेषण है, जो हिंदी रंगमंच, शिक्षा और सामाजिक सक्रियता के क्षेत्र में एक महान हस्ती थे, जिन्होंने बिहार के भोजपुर जिले के आरा के सांस्कृतिक और बौद्धिक परिदृश्य को बदल दिया। 1984 में मेरे एनसीसी के मित्र मनोज कुमार सिंह के माध्यम से हुई उनकी मुलाकात से शुरू होकर, यह अध्ययन मेरे उस यात्रा को चित्रित करता है, जिसमें मैं एक शर्मिले कॉलेज छात्र से उनके मार्गदर्शन में एक आत्मविश्वासपूर्ण रंगमंच कलाकार, निर्देशक और पत्रकार बना। एक पत्रकार के रूप में, मैं उनके क्रांतिकारी नाटकों, जेपी आंदोलन में उनकी भूमिका, शहीद भगत सिंह की मूर्ति को बचाने के उनके नेतृत्व, और सामाजिक सुधारों का विश्लेषण करता हूँ, तो उनकी तुलना बर्टोल्त ब्रेख्त, आंगस्तो बोआल और एथोल फुगर जैसे वैश्विक रंगमंच दिग्गजों से किये जाने को जरूरी मानता हूँ। उनके प्रकाशित नाटकों की व्यापक सूची उनके बेरोजगारी, जातिवाद और लैंगिक असमानता जैसे सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह लेख प्रोफेसर अस्थाना की विरासत को मेरे सांस्कृतिक गुरु के रूप में स्वीकारता है, जिन्होंने न केवल मेरी कलात्मक पहचान को आकार दिया, बल्कि आरा को भारत में रंगमंच का एक प्रतीक बनाया, जिसने अनुशासन, समावेशिता और परिवर्तनकारी कला के माध्यम से सांस्कृतिक पुनर्जागरण को प्रज्वलित किया।

मेरे सांस्कृतिक गुरु के साथ एक जीवन-परिवर्तनकारी मुलाकात

1984 की गर्मियों में, आरा के एचपीडी जैन कॉलेज में एक छात्र के रूप में, मैं एक शर्मिला युवा था, जो बिहार के भोजपुर जिले के छोटे-से शहर के लय में जी रहा था। मेरा विश्व सीमित था, पर मेरा आत्मविश्वास मेरे अंतर्मुखी स्वभाव की परतों में छिपा था, जिसके बारे में मेरी माँ अक्सर कहा करती थीं, "ई मुस्कायेला ना" (वह मुस्कराता नहीं)। पर मेरी माँ राम आनंदी देवी, जो आज मेरे घर के दीवार पर पोस्टरों की तरह नहीं, बल्कि मेरे सीने न कभी नहीं मिटने वाले गोदने की तरह गुदी है, ये पंक्तियाँ अक्सर गुनगुनाया करती थीं "मेरा नाम करेगा रौशन, जग में मेरा राज दुलारा"। माँ के ये शब्द मेरे अंदर आणविक हलचल मचाया करते थे, और उसी अणु की क्षमता को पहचान प्रोफेसर अस्थाना ने मुझे थियेटर की अभिव्यक्ति से जोड़कर सृजन की तरफ मोड़ दिया।

बात 1984 की रही होगी। मैं जैन कालेज से स्नातक कर रहा था। तभी मेरे एनसीसी के मित्र मनोज कुमार सिंह, जो महाराजा कॉलेज में पढ़ते थे, ने उत्साह के साथ सर (एक प्रोफेसर) के बारे में बात की, जो केवल शिक्षक नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी थे, जिनका रंगमंच एक आंदोलन था। उत्सुकता जागी, और मैंने प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना से मिलने का फैसला किया। मैं और मनोज अपनी साइकिलों पर सवार होकर उनके मानसरोवर कॉलोनी स्थित खूबसूरत किंतु सादगी भरे घर की ओर बढ़े। तब कहाँ अंदाज़ा था कि यह मुलाकात मेरे जीवन को नया आकार देगी।

हमने देखा कि सर, जैसा हम उन्हें सम्मानपूर्वक बुलाते थे, अपने बरामदे में बैठे थे, एक नाटक की पांडुलिपि में डूबे हुए, उनकी कलम सटीकता से संवादों को संशोधित कर रही थी। वह दृश्य रचनात्मकता का एक

जीवंत चित्र था—कागज बिखरे हुए, हवा में प्रदर्शन की संभावनाएँ तैर रही थीं।

उनके ड्राइंग रूम में प्रवेश करते ही उनकी पत्नी, जिन्हें हम प्यार से आंटी कहते थे, ने हमारा स्वागत किया और फिर अंदर चली गईं। उनकी बेटी टुन्नी (कावेरी मोहन) और डॉ. केबी सहाय की बेटियाँ, कजरी और कविता (तितली), वहाँ मौजूद थीं, जो उनके परिवार की रंगमंच में गहरी संलग्नता रखती थीं। कमरा स्क्रिप्ट्स, रिहर्सल की आवाज़ों और नृत्य के लिए आती युवा लड़कियों के पावों में बंधी घुंघरुओं की ऊर्जा से गूँज रहा था।

सर ने मुझे एक संवाद पढ़ने को दिया, उनकी तीक्ष्ण निगाहें मेरे उच्चारण का आकलन कर रही थीं। उन्होंने सुना तो कहा ठीक है, ठीक है। लेकिन तब मेरे आश्चर्य की सीमा न रही जब उन्होंने पहली ही बार में मुझे अपने नृत्य-नाटक बुद्धं शरणं गच्छामि में महात्मा बुद्ध की भूमिका की पेशकश की। मगर शर्त ये थी कि मुझे अपने सिर और दाढ़ी के बाल मुंडवाने होंगे। पहले तो मैं शरमाया और हिचकिचाया, लेकिन रातभर सोचने के बाद मैंने सोचा, "ये तो अपनी खेती है, फिर से आ ही जाएगी" (यह मेरे ही बाल हैं, फिर उग आएंगे)। युवा उत्साह के साथ मैंने भूमिका स्वीकार कर ली, और एक ऐसी यात्रा शुरू हुई जिसने मुझे बदल दिया।

बुद्धं शरणं गच्छामि का रिहर्सल और इलाहाबाद में
मंचन मेरे लिए एक सफल फिल्म के शो की तरह थ्रिलर एनर्जी दे रहे थे।

सर का निर्देशन बारीक था—हर इशारा, हर ठहराव, हर स्वर को समता और करुणा के संदेश को व्यक्त करने के लिए तराशा गया था। नाटक की शानदार सफलता ने मुझे सामाजिक रूप से जागरूक रंगमंच की शक्ति से परिचित कराया, और मुझे मेरी सृजनात्मक शक्ति से भी। मैंने उनके अन्य नाटकों—मेरा नाम मथुरा है, अग्निपरीक्षा, और नो मैन्स लैंड—में प्रमुख भूमिकाएँ निभाईं, जो मेरे शर्मिलेपन को चुनौती देती थीं और मेरे कौशल को निखारती थीं। सर ने मेरी आवाज़ में संभावनाएँ देखीं, जो मुझे मेरे पिता, श्री राम सुरेश पांडेय, एक सेवानिवृत्त डिप्टी एसपी, से विरासत में मिली थी, लेकिन यह उनका मार्गदर्शन था जिसने मुझे स्वर का उतार-चढ़ाव, शारीरिक हाव-भाव और रंगमंच की व्याकरण सिखाईं।

माँ मेरे बारे में कहती थी, "ई हंसे मुस्कायेला ना"।

शायद सर को भी लगा होगा। उन्होंने मेरे चेहरे की सूक्ष्म अभिव्यक्तियों पर काम किया, मेरे अंतर्मुखी स्वभाव को भावपूर्ण प्रदर्शन का एक साधन बनाया। और फिर जब मैंने आइने में खुद को देखा, तो मुझे वह मुस्कान दिखी जो मेरी माँ के अनुसार मुझमें नहीं थी, कम से कम मंच पर तो आ ही गयी थी।

प्रोफेसर अस्थाना प्रत्येक कलाकार को निखारने में असीम धैर्य और असाधारण क्षमता का परिचय देते थे। मेरे बचपन के मित्र विजय मंजुल, जो एक बार मेरे कहने पर बड़े संकोच के साथ यह देखने आए थे कि क्या वे भी अभिनय कर सकते हैं, उनके मार्गदर्शन में एक आत्मविश्वासपूर्ण कलाकार बन गए। प्रो अस्थाना का समावेशी दृष्टिकोण सभी को अवसर देता था जो समर्पण दिखाते थे। उनकी मंडली में मुरली सर, जियाउल्लाह साब, राम कुमार भैया, संजय भैया (गोबर), जीपी सिंह, अनुपमा शंकर, निरुपमा शंकर, निसार अहमद (अब स्वर्गीय), सुधेन्दु भैया, मनोज सिंह, भुजंग भूषण, रजनीश, स्वयंवरा, और प्रियंवरा जैसे कलाकार शामिल थे, जिन्होंने विभिन्न नाटकों में योगदान दिया। उनकी बेटियाँ, कावेरी मोहन और सहाय बहनें, कजरी और कविता के अलावा अनुपमा और निरुपमा समेत अनेक लड़कियाँ

सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए मंच पर चमकीं, जो 1980 के दशक के बिहार में एक क्रांतिकारी कदम था।

वीणा भाभी और भैया (डॉ. दीपक कुमार, प्रो अस्थाना के पुत्र) ने कभी-कभी भले ही अभिनय किया, लेकिन हमेशा बड़े भाई-भौजाई की तरह हमारा समर्थन प्रोत्साहन किया। डॉ. केबी सहाय, शहर ही नहीं जिले और प्रदेश के नामचीन डाक्टर व उनकी पत्नी, हमारे प्रिय अंकल और आंटी, हमारे लिए माता पितातुल्य मार्गदर्शक और प्रेरक थे, जिन्होंने हमें गर्मजोशी और बुद्धिमत्ता से प्रोत्साहित किया।

प्रो अस्थाना का अनुशासन अनुकरणीय था। समय की पाबंदी के प्रति उनकी सख्ती ने हमें पेशेवर बनाया। एक दिन, जब मैं रिहर्सल के लिए थोड़ा देर से पहुँचा, तो उनके स्नेहपूर्ण डॉट ने मुझे सिखाया: "एजी एजी... ऐसे कैसे होगा? जब तुम्हीं लेट आओगे!" (ऐसे कैसे चलेगा अगर तुम ही देर से आओगे?)। उनके शब्दों ने मुझमें समय के प्रति आजीवन सम्मान पैदा किया, जो उनके रंगमंच और जीवन के दृष्टिकोण का आधार था।

एक उत्साही पाठक के रूप में, मैंने उनके नाटकों, रूपकों, कविताओं के स्क्रिप्ट्स को ध्यान से पढ़ा, जो सरल लेकिन गहन थीं, सामाजिक बुराइयों को संबोधित करने के लिए डिज़ाइन की गई थीं। मेरे समर्पण ने उनका भरोसा जीता, और मैंने अग्निपरीक्षा (राजगीर में) और नो मैन्स लैंड (बोध गया विश्वविद्यालय और धनबाद के इंडियन स्कूल ऑफ माइन्स में) जैसे प्रमुख मंचनों में निर्देशन में सहायता की। मैंने मगध विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक उत्सव में धनबाद में थिएटर डायरेक्टर के रूप में किया। और इस विश्वविद्यालय में डेढ़ सौ कालेज थे। हालाँकि आयोजक दल के स्पष्ट धोखे के कारण हमें धनबाद में पहला पुरस्कार नहीं मिला, पर हमारी प्रमुख अभिनेत्री कल्पना सिंह ने सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार जीता। पर हमारा प्रदर्शन एक तूफान की तरह था, जिसने इंडियन स्कूल ऑफ माइन्स के कैम्पस में सनसनी मचा दी। इसके बाद तो हमने मेरठ, रामनगर, बड़ौदा, कालका, और शिमला में अखिल भारतीय नाट्य समारोहों में शीर्ष पुरस्कार और सम्मान प्राप्त करके अपनी प्रतिष्ठा को और मजबूत किया। मुझे व्यक्तिगत रूप से शिमला में द पीपुल्स नेशनल अवार्ड और मेरठ में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला, जो प्रो अस्थाना के परिवर्तनकारी प्रभाव को दर्शाता है।

मेरे व्यक्तिगत विकास से परे, प्रो अस्थाना के रंगमंच ने आरा में एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण को प्रज्वलित किया। यह छोटा-सा शहर बिहार का रंगमंचीय केंद्र बन गया, जिसने पटना के मीडिया को आश्चर्यचकित कर दिया, जिन्होंने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि "आरा जैसे छोटे कस्बाई शहर से आधा दर्जन से ज्यादा महिला कलाकारों को उगाहना" एक उपलब्धि थी। उगाहना शब्द का पटना के अखबार में प्रयोग इन महिलाओं पर साफ लांछन और अपमानजनक था। इसकी व्यापक रूप से निंदा हुई। प्रो अस्थाना ने इसमें भी अग्रणी भूमिका निभाई, जो उनके क्रांतिकारी प्रभाव को रेखांकित करता है। उनके नाटक, जैसे मेरा नाम मथुरा है में उन्होंने मुंशी प्रेमचंद के दृष्टिकोण से सामाजिक पतन को दर्शाते हुए या नो मैन्स लैंड में विस्थापन के दर्द को चित्रित करते हुए, भारत के संघर्ष का आईना प्रस्तुत किया। अभिनय के साथ मेरी गायन की कला को निखार भी यहीं मिला, जब मुझे कावेरी, कजरी, और कविता के साथ उपशास्त्रीय प्रस्तुतियों में स्वर देने का अवसर मिला। खासकर बुद्ध शरणं गच्छामि जैसे नाटकों में पार्श्व गायन ने संगीत के साथ भावनात्मक गहराई जोड़ी।

मेरी संगीत के प्रति रुचि को सर ने एक कौशल के रूप में अपने मार्गदर्शन में निखारा।

जब मैं एक पत्रकार के रूप में उनकी शख्सियत का विश्लेषण करता हूँ, तो उनकी तुलना वैश्विक रंगमंच के दिग्गजों के समकक्ष पाता हूँ, जिससे उस गुरु के प्रति मेरा सम्मान और बढ़ जाता है, जिसने मेरी पहचान और आरा की सांस्कृतिक विरासत को आकार दिया। मेरा लेख प्रोफेसर अस्थाना के साथ मेरे जीवन की व्यक्तिगत यात्रा के अलावा जब उनके योगदानों के शैक्षिक अन्वेषण को भी जोड़कर देखता है, तो उनके व्यक्तित्व की विशालकाय छवि उभरकर आती है, जो उनकी जन्म शताब्दी को उनकी स्थायी दृष्टि के उत्सव के रूप में प्रस्तुत करती है।

प्रारंभिक जीवन और बौद्धिक निर्माण

श्याम मोहन अस्थाना का जन्म 29 अक्टूबर, 1924 को वाराणसी में हुआ, जो भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत का एक जीवंत केंद्र है। एक साधारण ब्राह्मण परिवार में पले-बढ़े, जहाँ शिक्षा को सर्वोच्च महत्व दिया जाता था, वे वाराणसी के घाटों, मंदिरों और विद्वतापूर्ण परंपराओं के बीच पनपे। क्वीन्स कॉलेज और हरिश्चंद्र कॉलेज में उनकी प्रारंभिक शिक्षा ने उन्हें भारतीय और पश्चिमी विचारों के मिश्रण से परिचित कराया, जिसने उनकी आलोचनात्मक सोच को तीक्ष्ण किया। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में, जहाँ उन्होंने राजनीति विज्ञान में मास्टर डिग्री हासिल की, अस्थाना ने 1940 के दशक के राष्ट्रवादी उत्साह, विशेष रूप से भारत छोड़ो आंदोलन, का अनुभव किया। पंडित मदन मोहन मालवीय जैसे व्यक्तित्वों से प्रेरित बीएचयू का बौद्धिक माहौल ने उनकी सामाजिक सुधार और रंगमंच के प्रति जुनून को प्रज्वलित किया। वाराणसी के रामलीला प्रदर्शन और लोक नाटकों ने उन्हें मंच की ओर आकर्षित किया, जिसने उनके जीवनभर के रंगमंच प्रेम की नींव रखी।

उनके शुरुआती लेखन—छोटे नाटक और कविताएँ—जातिगत भेदभाव और महिलाओं के उत्पीड़न जैसे सामाजिक अन्यायों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को दर्शाते थे। उत्तर प्रदेश में संक्षिप्त शिक्षण कार्यकाल के बाद, अस्थाना 1956 में आरा के महाराजा कॉलेज में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर के रूप में शामिल हुए, और इस शहर की ग्रामीण सादगी को अपने बौद्धिक और कलात्मक प्रयासों के लिए एक कैनवास के रूप में अपनाया। यह कदम उन्हें वाराणसी के विद्वान से आरा के सांस्कृतिक प्रतीक में बदलने का प्रतीक था, जहाँ उन्होंने अपने जीवन का शेष समय शिक्षा, रंगमंच और सक्रियता को एक परिवर्तनकारी विरासत में बुनने में बिताया।

शैक्षिक उत्कृष्टता और शिक्षण विरासत

महाराजा कॉलेज में, अस्थाना की कक्षाएँ एक रहस्योद्घाटन थीं, जो राजनीतिक सिद्धांत को भ्रष्टाचार और शासन जैसे वास्तविक मुद्दों के साथ जोड़ती थीं। प्रभारी प्राचार्य के रूप में, उन्होंने 1970 के दशक के बिहार में सह-शिक्षा शुरू की, जो एक क्रांतिकारी कदम था, जिसने महिला नामांकन को बढ़ाया और पितृसत्तात्मक रूढ़ियों को चुनौती दी। नैतिक नेतृत्व पर उनके शैक्षिक पत्रों ने बिहार के बौद्धिक प्रवचन को प्रभावित किया, जिसने छात्रों को शिक्षा को सामाजिक न्याय के साधन के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया। उनकी कक्षा आलोचनात्मक सोच का मंच थी, जहाँ मेरे जैसे छात्रों को भारत की लोकतांत्रिक चुनौतियों पर बहस करने और उनमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था।

राजनीतिक सक्रियता और सामाजिक आंदोलन

1974 के जेपी आंदोलन में अस्थाना की सक्रियता एक निर्णायक अध्याय थी। आरा में एक आयोजक के रूप में, उन्होंने छात्रों और बुद्धिजीवियों को संगठित किया, मीसा और डीआईआर के तहत कई बार गिरफ्तारी का सामना किया। पुलिस की लाठीचार्ज में उनकी उंगलियाँ टूट गईं, जो उनकी साहस का प्रतीक थी, फिर भी उन्होंने हजारीबाग, पटना और आरा की जेलों में योग और लेखन की दिनचर्या बनाए रखी। वैचारिक मतभेदों के बावजूद, कम्युनिस्टों के साथ उनकी समावेशी सहभागिता 1986 में जनवादी लेखक संघ के भोजपुर सम्मेलन की अध्यक्षता में स्पष्ट थी।

जेपी आंदोलन से परे, अस्थाना ने आरा के महिला कॉलेज के पास शहीद भगत सिंह की मूर्ति को बचाने के लिए एक आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसने समुदाय को प्रतिरोध के प्रतीक को संरक्षित करने के लिए एकजुट किया। उनका रंगमंच शांति, सांप्रदायिक सद्भाव और विकास को बढ़ावा देने का मंच बन गया, जो उनकी सक्रियता को कला के माध्यम से जारी रखता था।

रंगमंचीय योगदान: एक क्रांतिकारी नाटककार

अस्थाना की कामायनी रंगमंच मंडली, जिसका नाम जयशंकर प्रसाद के महाकाव्य पर आधारित था, एक सांस्कृतिक शक्ति थी, जो बिहार और भारत भर में नाटकों का मंचन करती थी। उनके सटीक निर्देशन और सामाजिक रूप से जागरूक स्क्रिप्ट्स ने बेरोजगारी, जातिवाद और लैंगिक असमानता जैसे मुद्दों को संबोधित किया। उनकी ज्ञात रचनाओं की व्यापक सूची निम्नलिखित है:

पूर्व और पश्चिम – सांस्कृतिक टकरावों का एक व्यंग्यात्मक अन्वेषण, हास्य के साथ सामाजिक समालोचना को मिश्रित करता हुआ।

कोई जगह खाली नहीं – बेरोजगारी और भ्रष्टाचार पर टिप्पणी, उनकी शताब्दी के लिए 2024 में मंचित।
अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो वा – महाभारत की पुनर्व्याख्या करने वाला एक पौराणिक नाटक, वाराणसी में मंचित।

बुद्ध शरणं गच्छामि – अस्पृश्यता को संबोधित करने वाला एक नृत्य-नाटक, कावेरी मोहन द्वारा निर्देशित, जिसमें मैंने बुद्ध की भूमिका निभाई।

मेरा नाम मथुरा है – मुंशी प्रेमचंद के दृष्टिकोण से सामाजिक पतन को दर्शाने वाला नाटक, जिसमें मैंने प्रमुख भूमिका निभाई।

अग्निपरीक्षा – रजगीर में एक विशाल प्रोडक्शन, जो अस्थाना की निर्देशन क्षमता को प्रदर्शित करता है।

नो मैन्स लैंड – विस्थापन के दर्द का एक मार्मिक अन्वेषण, बोध गया और धनबाद में मंचित।

जवाब आएगा – चिल्ड्रन फिल्म सोसाइटी के लिए एक स्क्रीनप्ले, जो युवा दर्शकों के लिए नैतिक दुविधाओं को संबोधित करता है।

अस्थाना का प्रत्येक कलाकार को निखारने में धैर्य असाधारण था। उन्होंने विजय मंजुल जैसे संकोची नवागंतुकों को आत्मविश्वासपूर्ण कलाकारों में बदला, और समर्पण दिखाने वालों को अवसर दिए।

उनकी मंडली, जिसमें मुरली सर, जियाउल्लाह साब, राम कुमार भैया, संजय भैया (गोबर), जीपी सिंह, अनुपमा शंकर, निरुपमा शंकर, निसार अहमद (अब स्वर्गीय), सुधैन्दु भैया, मनोज सिंह, भुजंग भूषण, रजनीश, स्वयंवरा, और प्रियंवरा शामिल थे, ने विभिन्न नाटकों में उनकी दृष्टि को जीवंत किया। उनकी बेटियाँ, कावेरी मोहन और अन्य, साथ ही सहाय बहनें, काजरी और कविता, सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए मंच पर चमकीं। वीणा भाभी और डॉ. दीपक कुमार ने कभी-कभी अभिनय किया, लेकिन हमेशा बड़े भाई-बहन की तरह समर्थन किया, जबकि डॉ. केबी सहाय और उनकी पत्नी ने हमें गर्मजोशी और बुद्धिमत्ता से मार्गदर्शन किया।

प्रो अस्थाना की समय की पाबंदी गैर-परक्राम्य थी। उनकी डॉट ने हमें पेशेवर बनाया। उनके नाटक, राष्ट्रीय समारोहों में मंचित, ने मेरठ, रामनगर, बड़ौदा, कालका, और शिमला में शीर्ष पुरस्कार अर्जित किए।

मेरी पृष्ठभूमि गायन, जिसमें कावेरी, काजरी, और कविता के साथ अर्ध-शास्त्रीय प्रस्तुतियाँ शामिल थीं, ने बुद्धि शरण गच्छामि जैसे नाटकों में भावनात्मक गहराई जोड़ी। धनबाद के पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक उत्सव में, जहाँ हमारा प्रदर्शन एक तूफान की तरह था, लेकिन आयोजक दल के धोखे के कारण हमें पहला पुरस्कार नहीं मिला, हमारी अभिनेत्री कल्पना सिंह ने सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार जीता, और हमने बाद में राष्ट्रीय मंचों पर अपनी प्रतिष्ठा को और मजबूत किया।

वैश्विक तुलनाएँ

अस्थाना का रंगमंच स्थानीय दृष्टिकोण के साथ वैश्विक विषयों को प्रतिबिंबित करता है:

बर्टोल्ट ब्रेख्त: उनका व्यंग्यात्मक पूर्व और पश्चिम ब्रेख्त के द कॉकेशियन चॉक सर्कल की तरह है, जो सामाजिक खामियों पर चिंतन को प्रेरित करने के लिए अलगाव का उपयोग करता है। ब्रेख्त ने कहा, "कला वास्तविकता का दर्पण नहीं है, बल्कि एक हथौड़ा है जिससे इसे आकार दिया जाता है," जो अस्थाना के सामाजिक रूप से जागरूक नाटकों में साकार हुआ।

ऑगस्तो बोआल: अस्थाना का महिलाओं और ग्रामीण दर्शकों को शामिल करना बोआल के थिएटर ऑफ द ओप्रेसड की तरह है, जो हाशिए पर पड़े लोगों को सशक्त बनाता है। बोआल के शब्द, "रंगमंच एक हथियार है, और इसे लोगों को चलाना चाहिए," अस्थाना के सामाजिक परिवर्तन के लिए रंगमंच के उपयोग को प्रतिबिंबित करते हैं।

एथोल फुगर: बुद्धि शरण गच्छामि फुगर के सिज़वे बान्सी इज़ डेड के समान है, जो मानवीय कहानियों के माध्यम से प्रणालीगत उत्पीड़न को संबोधित करता है। फुगर का यह विश्वास कि "रंगमंच वह स्थान हो सकता है जहाँ आवाज़हीन अपनी आवाज़ पाते हैं," अस्थाना की समानता की वकालत के साथ सानंदित सप्रमाणित है।

सामाजिक सुधार

महाराजा कॉलेज में सह-शिक्षा की शुरुआत और देहज व जातिवाद के खिलाफ अभियान अस्थाना के क्रांतिकारी कदम थे। उनके नाटक, जो महिलाओं के अधिकार और सांप्रदायिक सद्भाव की वकालत करते थे,

सामाजिक परिवर्तन के साधन थे, जो उनके सिद्धांत और व्यवहार की एकता के आदर्श को दर्शाते थे। शहीद भगत सिंह की मूर्ति को बचाने का उनका नेतृत्व आरा के समुदाय को प्रतिरोध के प्रतीक को संरक्षित करने के लिए एकजुट करने का प्रतीक था।

व्यक्तिगत गुण और विरासत

अस्थाना का अनुशासित जीवन, यहाँ तक कि जेल में भी, और उनका लोकतांत्रिक स्वभाव उन्हें एक पूजनीय व्यक्तित्व बनाता था। उनका घर एक सांस्कृतिक केंद्र था, जहाँ कावेरी मोहन, काजरी, कविता और अन्य उनकी देखरेख में पनपे। 2024 की शताब्दी समारोह, जिसमें कोई जगह खाली नहीं और अश्वत्थामा के प्रदर्शन हुए, उनकी स्थायी प्रभाव को रेखांकित करते हैं। आरा का रंगमंचीय केंद्र के रूप में उदय, राष्ट्रीय पुरस्कारों और मान्यता के साथ, उनकी स्थायी विरासत है, जो व्यक्तियों और समुदायों को कला के माध्यम से बदलने की उनकी क्षमता का प्रमाण है।

निष्कर्ष

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना मेरे सांस्कृतिक गुरु थे, जिनके मार्गदर्शन ने मुझे एक शर्मिले छात्र से एक आत्मविश्वासपूर्ण कलाकार और निर्देशक में बदला।

उनका रंगमंच, जो बिहार की वास्तविकताओं में निहित है, वैश्विक दिग्गजों के साथ संनादति है, जो उन्हें एक सार्वभौमिक व्यक्तित्व बनाता है। उनका अनुशासन, समावेशिता और सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता प्रेरणा देती है। एक पत्रकार के रूप में, मैं उनके कार्य को अन्याय, विभाजन और उदासीनता के खिलाफ कार्रवाई का आह्वान मानता हूँ। उनकी शताब्दी हमें उनकी दृष्टि को आगे बढ़ाने की याद दिलाती है—कला को सद्भाव और परिवर्तन की शक्ति के रूप में, जो उनके द्वारा छुए गए हर मंच, कक्षा और दिल में जीवित रहती है।

- आंकारेश्वर पांडेय

स्मृत्यालेख

संदर्भ : स्मृतिशेष श्रद्धेय प्रो० श्याम मोहन अस्थाना सर

विषय प्रवेश:-

सर्वप्रथम टुन्नी (श्रीमती कावेरी मोहन, कनिष्ठ पुत्री- प्रो० श्याम मोहनअस्थाना) द्वारा दिनांक 27/06/2025 को कामायनी, आरा के व्हाट्सऐप ग्रुप में एक फॉरवर्डडमैसेज के माध्यम से हम सबको यह सूचित किया गया जो निम्नवत है:-

“प्रो० श्याम मोहन अस्थाना की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एकडिजिटल स्मृति ग्रंथ विकालने की योजना है। आपसे अनुरोध है कि आप अपने संबंधित उद्गारनिम्नलिखित ईमेल आईडी पर ३१ अगस्त २०२५ तक अवश्य भेजें। साथ में अपनी फोटो और कुछसंबंधित फोटो भी अवश्य साझा करें।”

उपरोक्त मैसेज को पढ़ते हुए अच्छा लगा कि चलो भई अपना कामायनीग्रुप में एक सार्थक मुद्दों पर एक सार्थक बहस होगी क्योंकि इससे पहले ग्रुप में सिर्फ निरर्थक मुद्देही छाये रहते थे, जो या तो आत्ममुग्धक होते या या फिर राजनैतिक बहसबाजी से ओतप्रोत (निरुक्त मैसेज को छोड़कर, क्योंकि उसके मैसेज किसी न किसी सूचना को निरूपित करते थे, यह अलगबात है कि कभी-कभार किसी न किसी के बचाव की फ़िराक में राजनैतिक मैसेजों से रूबरू होनापड़ा है)

दीपक भैया (डा० दीपक कुमार, पे० प्रो० श्याम मोहन अस्थाना) ने फोनकरके मुझे अपने क्लिनिक बुलाकर उपरोक्त सूचना को मौखिक रूप से मुझे बताया गया, जिसकीतश्दीक मेरे द्वारा पूर्व में ग्रुप के माध्यम से ज्ञात होने की सूचना से कर दी गई। उसके बाद प्रत्येकदिन मैं ग्रुप में उक्त तथ्य पर विचार अथवा बहस की प्रतिक्षा करता रहा परन्तु हाथ में लगा सोन्नाजबकि ग्रुप में दू का दू आ दू दूनी चार तो हो ही रहा था। आज समझ आया कि हमारे सभी मित्रबहुत बड़े हो गए हैं शायद उनके पास समयाभाव हो। बात सही भी है, सबके बावजूद समय तोचौबीस घंटे का ही तो है।

दीपक भैया द्वारा भी मेरे व्यक्तिगत नंबर पर उक्त मैसेज को यदाकदारिमांडर स्वरूप भेजा जाता रहा, जिसको मैं इग्नोर करता रहा।

परन्तु आज 21/08/2025 को मैं स्वतः लिखना शुरू कर रहा हूँ यदिकिसी भी बंधु-बंधव को मेरे द्वारा उद्धृत किसी भी परिदृश्य या टिप्पण आहत करती है तो मैं पूर्व मेंही क्षमा प्रार्थना कर रहा हूँ क्योंकि किसी भी स्थिति में मेरी मंशा किसी को भी आहत करने की नहीं है।

नाटक से सर्वप्रथम मेरा परिचय :-

मेरी प्रारम्भिक शिक्षा इलाहाबाद में ही सम्पन्न हुई है। बात उन दिनोंकी है जब मैं चाचा नेहरू शिशु विद्यालय का छात्र था, (हमारा आवासन सुलेमसराय में था औरआवास के नज़दीक ही अग्रसेन इण्टर कॉलेज था। आवास के एक तरफ मिलिटरी कैंटोनमेन्ट) 1971 युद्ध के बाद तो चौतरफा सिर्फ और सिर्फ श्रीमती इंदिरा गाँधी ही थी। कहीं तारीफ तो कहींआलोचना का समुह मुखर था। इन सबके बावजूद हर स्कूल अपने-अपने स्तर से वार्षिकोत्सव हेतुबाध्य था, जो वहाँ की संस्कृति थी। उन्हीं वार्षिकोत्सव में मैं अपने विद्यालय के प्रहसनों आदि मेंभाग लेने वाला नियमित विद्यार्थी रहा, जो अग्रसेन इण्टर कॉलेज में होने वाले नाटक अन्धर नगरी केप्रत्येक रिहर्सल का दर्शक भी। नाट्य प्रदर्शन के समय तक तो मैं ग्रीन रूम से लेकर दर्शकदीर्घा तकप्रकाश व्यवस्था से लेकर मेकअप व्यवस्था तक

सबसे परिचित हो चुका था यानि मैं उसवक्त तक एक कामयाब टेलहा बन चुका था। संभवतः यही वह क्षण थे जब नाटक अथवा स्टेज संबंधित बीजका रोपण मेरे बालमन के अंदर हुआ होगा।

श्रद्धेय प्रो० श्याम मोहन अस्थाना नाम से सर्वप्रथम परिचय :-

मेरी माँ समाज कल्याण बोर्ड, बिहार सरकार की एक कर्मचारी थीं, जो उन दिनों चाईबासा के मंझगाँव प्रखण्ड से स्थानांतरित होकर भोजपुर जिले के उदवंतनगरप्रखंड आयीं थीं। स्थानांतरण के क्रम में आवासन एवं पदस्थापन पियनियों ग्राम में ही रखा गया था। उस वक्त भोजपुर जिले अथवा संबंधित प्रखंड की समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमती सावित्री अस्थाना एवं उपाध्यक्ष पद पर श्रीमती के० सहाय नामित थीं।

माँ के स्थानांतरणोंपरान्त गर्मी की छुट्टियों में आने पर इन दोनों से परिचित होता रहा। इसी क्रम में मुझे राजेन्द्रनगर स्थित उनके आवास पर इन दो शिष्यियों से रूबरू होने का मौका मिला, वहीं मेरी माँ द्वारा मुझे जानकारी दी गई कि सावित्री मौसी के पति प्रो० श्याम मोहन अस्थाना जी हैं जो आरा के बहुत बड़े नाटककार हैं और सहाय मौसी के पति डा० के० बी० सहाय बहुत बड़े डाक्टर हैं, फिर यँ ही आई-गई बात हो गई ।

नाटक अथवा स्टेज से संबंधित बीज का आरा आगमन के पश्चात अन्तर्मन में प्रस्फुटन :-

एक समय आया कि कतिपय कारण वश इलाहाबाद से मुझे आरा शिफ्ट होना पड़ा । आरा आगमन के पश्चात मेरा नामांकन हरप्रसाद दास जैन स्कूल, आरा में हुआ जहाँ मेरा आवासन जैन स्कूल के ही हॉस्टल में रहा। जहाँ मैं इलाहाबाद के आबोहवा एवं आराके आबोहवा में तारतम्यता बैठाने की स्थिति से जूझ रहा था, जो मेरे लिए एक दुरूह कार्य रहा। इसी क्रम में जैन स्कूल के प्रांगण में ही मुझे प्रो० राणा जी द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाटक "कागज के जंगल" हॉस्टल में आवासित छात्र के नाते देखने का मौका मिला, उस नाट्य प्रदर्शन ने मेरे बालमनमें यह छाप तो निश्चित रूप से छोड़ा कि, अन्तर्मन में बसा इलाहाबाद आरा से ज़्यादा दूर नहीं है । उसके ठीक बाद प्रो० जगदीश पाण्डेय, तत्कालीन प्रचार्य जैन कॉलेज, आरा द्वारा लिखित "स्वर्ग में काव्य गोष्ठी" के मंचन का रिहर्सल प्रत्येक दिन देखा करता अपने जैन स्कूल के हॉस्टल में ही, परन्तु अत्यधिक बिमार हो जाने के कारण मंचन नहीं देख पाया, जिसका मलाल मुझे आज तक है, क्योंकि मेरे कई मित्रों के उपनाम आज तक उन्हीं पात्रों के नाम पर हैं जिस पात्र का अभिनय उन्होंने उस वक्त किया था। यकीन मानिए आज भी मुझे "कागज के जंगल" के पात्र और संपूर्ण नाटक एवं "स्वर्ग में काव्य गोष्ठी" का रिहर्सल अक्षरशः याद है।

ग्रामीण नाटकों में प्रवेश :-

एक समय वो भी आया कि मेरे अभिभावक द्वारा परिवार के दबावमें मुझे जैन स्कूल के हॉस्टल से निकाल कर शिवगंज एक किराए के मकान में शिफ्ट कर दिया गया, कारण शायद आर्थिक तंगी हो सकती है। लेकिन समस्या एक बार फिर वही..... शिवगंज की आबोहवा में तारतम्यता बैठाने की जुगत में आन्तरिक ऊर्जा का हास। इसी क्रम में मेरी मुलाकात आसपास के लॉज में रह रहे ग्रामीण क्षेत्रों से आये लड़कों से हुई। उनके गाँवों में किसी न किसी पूजन महोत्सव में नाटक किए जाने का विधान था। मुझे मौका मिला, नतीजन मैं ग्रामीण क्षेत्रों में पाँपुलर हो गया। लोग मुझे हायर करने लगे। परिस्थितियों ने मुझे हास्य कलाकार बना दिया।

धीरे-धीरे मैं शहर की लोकल ऑर्केस्ट्रा में भी पाँपुलर हो गया, आमदनी भी अच्छी खासी हो रही थी।

श्रद्धेय प्रो० श्याम मोहन अस्थाना सर का प्रथम दिग्दर्शन :-

स्कूली शिक्षा समाप्त कर मैं अब इण्टर का छात्र था और अपनेकॉलेज की हॉकी टीम का सदस्य भी, इसी क्रम में मैंने उन्हें महाराजा कॉलेज के ग्राउंड में क्रिकेट खेलते देखा। उनके चौकों-छक्कों की बरसात ने मुझे हतप्रभ कर दिया। उसके बाद महाराजाकॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत नाटक शरद जोशी द्वारा लिखित और प्रो० श्याम मोहन अस्थाना द्वारा निर्देशित "एक गदहा अल्लादाद खान देखने को मिला"। अब मैं 'सर' का जबरा फैन बन चुकाथा।

इधर अपने प्रोफेशनल हास्य कलाकार होने का गुमान भी मेरे सर पर नांच रहा था। कभी-कभी तो ऐसा लगता कि ये कैसे लोग हैं जो मुझ जैसे महान कलाकार को पहचान भी नहीं पा रहे हैं। तबमुझे मेरी माँ की कहीं बातें याद आईं। उसके बाद माँ मेरे निवेदन पर 'सर' से मिलाने उनके नयेआवासन मानसरोवर कॉलोनी ले गईं।

सावित्री मौसी की आवाज से ही मुझे डर लगा करता था, जोकि अंत तक लगा परन्तु सर से मैं कभी नहीं डरा। मौसी जी के हटते ही सर द्वारा पूछे गए प्रश्नों काप्रतिउत्तर देने लगा। सर ने कोई खास तवज्जो नहीं दिया मुझ पर। मुलाकात के अंत में मुझे एकनाटक का अंश पढ़ने को दिया (सर द्वारा लिखित नाटक "दावत" का अंश था) सर को अच्छा नहींलगा। जो बात मुझे चुभ गई।

स्नै:-स्नै: मैं जूलाँजी ऑनर्स का छात्र था साथ ही अब मगध विश्वविद्यालय के हॉकी टीम का सदस्य भी, एक गुमान अलग से कि हास्य कलाकार भी हूँ, इलाहाबाद रहने से आरा शहर में रहने वालों से हिन्दी भी अच्छी है। तात्पर्य यह कि मैं गुमान से भरागुब्बारा हो चला था। एक समय आया कि 23अप्रैल कुंवर सिंह जयन्ती समारोह में महाराजाकॉलेज आरा में सांस्कृतिक आयोजन प्रत्येक वर्ष की भाँति होने वाला था, अन्तर सिर्फ इतना था कि कॉलेज के संस्थापक डुमरांव महाराज महाराजा कमल सिंह भी पधार रहे हैं। अस्थाना सर नाटक के लिए कलाकारों का चयन कर रहे हैं, पता चलते ही मैं भी ऑडिशन में चला गया। नाटक वही, सरद्वारा लिखित "दावत"। मैं पुनः उस ऑडिशन में असफल रहा। परन्तु आयोजन समिति द्वारा मेरानाम स्टैण्डअप कॉमेडी के लिए हास्य कलाकार के रूप में चयनित करते हुए मुझे उस आयोजन मेंप्रदर्शन हेतु चयन कर लिया गया। लिस्ट में अपना नाम देख कर मेरी बाँछें खिल गईं। मैंने उसीवक्त ठान लिया कि इसबार इस व्यक्ति को सबक जरूर सिखाना है। उपरोक्त कॉमेडी के लिए मैंनेएक स्क्रिप्ट तैयार की जिसके इर्द-गिर्द प्रो० श्याम मोहन अस्थाना हो। अब मैं घर पर ही अस्थाना'सर' की मिमिक्री करने लगा। प्रदर्शन के दिन तक कॉलेज एवं सर द्वारा संचालित रिहर्सल में मेरेद्वारा भनक नहीं लगने दी गई कि, प्रदर्शन के दिन मैं क्या करने वाला हूँ।

आयोजन के दिन वही किया जो मैंने सोचा था, दर्शक पेटपकड़ कर हंस रहे थे। खुब सारे तालियाँ बटोर कर सीना चौड़ा कर ग्रीन रूम में आया तो, हमारेजूलाँजी विभाग के प्राध्यापक प्रो० अजीत सिंह मेरे ऊपर बरस पड़े। मुझे तो काटो खून नहीं। स्थिति ऐसी आ गई कि दो-चार लोग अजीत सर को समझाने भी लगे। उस माहौल में वहाँ पहली बार स्मृतिशेष प्रो० श्याम मोहन अस्थाना सर ने मेरी पीठ थपथपाई और कहा कि तुम्हारी प्रस्तुति अच्छी रही, परन्तु दुख मात्र इसी बात का रहा कि तुमने रिहर्सल के दरम्यान ये सारे कृत्य क्यों नहीं प्रदर्शितकिए.... मैं तुम्हें दो-चार और अच्छे टीप दे सकता था, जो तुम्हारे प्रदर्शन में चार चाँद लगा देते। इसी क्रम में कामायनी के वरिष्ठतम सदस्य श्री राम कुमार भैया भी ग्रीन रूम आ गए। 'सर' ने उनकेसामने ही मुझे घर पर मिलने का न्यौता भी दिया। फिर राम कुमार भैया मुझे अलग ले जाकर हडकाने लगे कि तुमको आरा की सबसे अनुशासित टीम कामायनी द्वारा न्यौता मिला है..... टीम मेंतभी जगह मिल पायेगी जब तुम अनुशासित रहोगे, क्योंकि तुम उस अनुशासित टीम में पहले सदस्यबनोगे जो अपनी अनुशासनहीनता के बल पर प्रवेश पाओगे। इसलिए तुम्हें सिर्फ और सिर्फ अपनेअनुशासन पर काम करना होगा, क्योंकि जो तुमने किया है किसी की मजाल नहीं है कि वो करसके।

घर आ कर मैं आत्मग्लानि से भर गया। उस दिन मैंने व्यवसायिकमंच को दिल के अन्तःकरण से अलविदा कर दिया। राम कुमार भैया एवं 'सर' द्वारा बुलाये तिथि कोनियत जगह पहुँचा।

वहाँ मेरी मुलाकात श्री वृजबिहारी मिश्र एवं श्री सुरेश पाण्डेय भैया से हुई जो मास्टर्स के छात्र थे साथ ही श्री प्रसुन आनन्द से भी (प्रसुन आनंद भाई से ये मेरी दूसरी मुलाकात थी, उनसे मेरी पहली मुलाकात जिला स्कूल, आरा में हुई थी जहां मैं अपनी व्यवसायिक मंचीयता केतहत एक नामी-गिरामी जादूगर के साथ जादू दिखाने आया था)।

यकीन मानिए बेहद ही संजीदा एवं सुशिक्षित टीम से मेरी मुलाकात हुई। अब मुझे अपनी कमियों का अहसास होने लगा। मैं अपने सामने खड़े हर कलाकार के आगे डिमोर्लाइज रहता, सभी सर की उस मिमिक्री का मजाक उड़ाते। अब मुझे अहसास होने लगा कि मैं एक बेहूदा किस्म का व्यक्ति हूँ। मेरी बहुत सारी कमियाँ थीजिसे 'सर' ने धीरे-धीरे दूर किया और इस तरह नाटक के क्षेत्र के वो मेरे पहले मेन्टर बनें। सर की खासियत रही कि वो शब्द प्रच्छालनों पर एक सधा हुआ काम करते थे। इस तरह मैं एक अनुशासित दायरे में रहते हुए "कामायनी, आरा" का स्थायी सदस्य बनने की ओर अग्रसर होता चल रहा था साथही कई प्रदर्शन का हिस्सेदार भी बन रहा था। अब मैं आरा शहर के रंगकर्मियों के बीच एक अव्यावसायिक रंगकर्मी की हैसियत से अपनी जड़ें भी जमाता चल रहा था।

इसी बीच आरा के जैन समाज द्वारा राजगीर के समारोह में प्रो० श्याम मोहन अस्थाना सर द्वारा लिखित नाटक जो जैन समाज पर ही आधारित था के मंचन कीजवाबदेही कामायनी, आरा को सौंपी गई।

जिसमें बहुत सारे कलाकारों की आवश्यकता थी क्योंकि वह समारोह एक अन्तरराष्ट्रीय समारोह था (एक बहुत ही सुन्दर जैन मंदिर का उद्घाटन), उस उद्घाटन समारोह में वॉल्यूड के दिग्गज संगीतकार श्री रविंद्र जैन जी, श्रीमती हेमलता जी एवं अपनी टीम के साथ पधारने वाले थे।

नाटक के लिए रामकुमार भैया-भाभी, वृजबिहारी भैया, सुरेशपाण्डेय भैया, सुरेश गुप्ता जी सपत्नीक, प्रो० मुरली मनोहर प्रसाद सर सपत्नीक, बच्चन जी भैया, प्रसुन भाई, शंकर बहनें सपरिवार, एवं कवयित्री श्रीमती उर्मिला कॉल पूर्व से ही चयनित थे, चूँकि टीम में अधिकाधिक कलाकारों की आवश्यकता थी इसलिए तितली के थू एक एन०सी०सी० एवं होमगार्ड, आरा द्वारा संचालित टीम में चयनित कलाकार जो अपनी जड़ों को मजबूत करने के लिए काफी प्रयासरत थे का समावेश कामायनी, आरा में हुआ जिसके मार्फत श्री मनोज सिंह, श्री गणेशकुमार सिंह, श्री निसार अहमद, श्री ओंकारेश्वर पाण्डेय, श्री नागेंद्र पाण्डेय, सुश्री रेणु, सुश्री चेतना, सुश्री निमिषा आदि कलाकार समाहित थे और इस तरह एक मजबूत कामायनी, आरा टीम का आगाज़ हुआ साथ ही प्रदर्शन भी लाजवाब।

परन्तु दुर्भाग्य वश राजगीर में ही एक अनुशासनहीनता की घटनाघट गई। उस घटित घटना के उपरांत रामकुमार भैया अपने आचरणानुरूप वरिष्ठतम कामायनी सदस्य के नाते आगबबुला हो उठे, जो बाहर से आई पुरी टीम को नागवार गुजरी, और इस तरहरामकुमार भैया की सदस्यता कामायनी, आरा में खतरे में पड़ गई। रामकुमार भैया से संबंधित व्यक्तियों को भी बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। चूँकि मेरा संबंध कामायनी, आरा से एक तरहसे पारिवारिक था इसलिए मेरे और प्रसुन भाई को छोड़ शेष पूर्व के सदस्यों को कामायनी, आरा से निकाला मिल गया, इन सबके बावजूद भी अब मेरी स्थिति कामायनी, आरा में ठीक आया राम गयाराम की तरह हो गई। फिर भी मैंने इस नयी कामायनी, आरा के साथ कई प्रदर्शन में सम्मिलितहुआ। इस नयी कामायनी टीम ने अपने प्रदर्शन से देश में आपना परचम लहराया, जिसे सर सहितसभी कामायनी के गोल्डेन एरा के नाम से भी जानते हैं।

वह समय जब मैं और श्रद्धेय प्रो० श्याम मोहन अस्थाना सर को- आर्टिस्ट बनें :-

मैं उन चुनिंदा लोगों में शामिल हूँ जिसे प्रो० श्याम मोहन अस्थाना सर के साथ मंच पर एक साथ काम करने का मौका मिला वो भी एक-दूसरे के अपोज़िट,

सर द्वारा लिखित नाटक "तुफान" में, जिसका प्रदर्शन नागपुर, शिमला एवं सोलन में किया गया था। पात्र निम्नवत थे- प्रो० श्याम मोहन अस्थाना, श्री अशोक सिंह, सुश्री स्वयंवरा, सुश्री प्रियंवरा एवं मैं, संगीत कावेरी मोहन का था। प्रदर्शन के दरम्यान ही नागपुर में सर से मेरी हॉट डिस्कशन भी हुई थी, कारण कि नाटक शुरू होते ही स्टेज के सारे माईक ऑफ होने के कारण हो हल्ला होने लगा, प्रतिक्रिया स्वरूप सर अपना कैरेक्टर छोड़ हो हल्ला देखने लगे, जिस क्रम में सेट पर लगा चेस स्टेजपर बिखर गया, अन्ततः नाटक दोबारा शुरू करना पड़ा चेस की गोटियों को पुनर्स्थापित करने के उपरांत।

श्रद्धेय सर के साथ कामायनी टीम में मेरा अंतिम प्रदर्शन :-

सर द्वारा लिखित नाटक "मुजाहिद" का प्रदर्शन, जोशिमला में प्रदर्शित हुआ। उस टीम में मेरे साथ, श्री श्रीधर शर्मा, श्री संजय शास्वत, श्री दविजेन्द्र सिंह किरण, श्री हरेश्वर सिंह, श्री भैय्या जी, सुश्री स्वयंवरा, सुश्री प्रियंवरा, सुश्री बबीता, सुश्री अनुराधा शंकर, श्री निसार अहमद आदि कलाकार समाहित थे। सर द्वारा इस टीम को सबसे अनुशासनहीनटीम घोषित किया गया। मेरे द्वारा भी सभी सदस्यों में वरिष्ठ होने के नाते अपनी अनुशासनहीनता स्वीकार किया गया।

श्रद्धेय प्रो० श्याम मोहन अस्थाना सर का मेरे जीवन पर प्रभाव :-

श्रद्धेय सर का डिक्शन के प्रति समर्पण एक अदभुतप्रयोग था। वाक्यांशों पर एक मजबूत पकड़ उनकी फितरत थी। जिसका प्रभाव राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रवेश परीक्षा के दरम्यान देखने को मिला जब मेरा चयन मेन्स परीक्षा हेतु हुआ। सरकारी सेवा में भाषाई पकड़ को मजबूत बनाये रखने में श्रद्धेय सर बहुत बड़ा योगदान रहा मेरेजीवन में। पुस्तक के प्रति समर्पण भी सर का आदेशित फलाफल रहा। सर, जाते-जाते जीवन में रंगमंच और रंगमंच में जीवन का अर्थ समझते गए। यह बात अलग है कि मैं एक उम्दा कलाकार कभी नहीं रहा, परन्तु एक सफल रंगकर्मी बना गये सर।

फौरी तरीके से देखा जाए तो मैं अपने जीवन से प्रो० श्याम मोहन अस्थाना नामक शब्द हटा दूँ आज भी तो निश्चित रूप से शून्य पर आ जाऊँगा। आज मैं जहां भी हूँ, जो भी हूँ उसमें श्रद्धेय प्रो० श्याम मोहन अस्थाना का योगदान शतप्रतिशत रहा है।

वर्ष 2025 श्रद्धेय सर का जन्मशती वर्ष :-

श्रद्धेय सर के जन्म शताब्दी वर्ष में उनके जन्मदिन परसर द्वारा लिखित नाटक "कोई जगह खाली नहीं" का नुक्कड़ शैली में मेरे द्वारा प्रदर्शन किया गया, साथ ही वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा परिसर में भी श्रद्धेय सर का जन्मशताब्दी वर्ष बड़े हीधुम-धाम से भोजपुरी एवं हिन्दी विभाग द्वारा मनाया गया, जहां हमसब यानि मेरे द्वारा नवगठित टीमके द्वारा सर द्वारा लिखित नाटक "कोई जगह खाली नहीं" को नुक्कड़ शैली में प्रदर्शित किया गया। उपरोक्त नाटक की सभी आगांतुक विद्वान प्राध्यापकों द्वारा काफी प्रशंसा की गई साथ ही लेखनशैली की भी कि, छः दशकों पूर्व लिखित यह नाटक आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

चलते-चलते :-

मरहूम मीना कुमारी की गज़ल के साथ ही उपरोक्तस्मृत्यालेख को समाप्त करने की कोशिश कर रहा

हूँ-

टुकड़े-टुकड़े दिन बीता है
धज्जी-धज्जी रात मिली
जिसका जितना आँचल था
उतनी ही सौगात मिली
जब चाहा दिल को समझें
हंसने की आवाज़ सुनीं
जैसे कोई फिर कहता हो
ले फिर तुमको मात मिली
मातें कैसी घातें क्या
चलते रहना आठ पहर
दिल सा साथी जब भी पाया
बेचैनी भी साथ मिली

- चन्द्रभूषण पाण्डेय

एक थे यायावर प्रो० श्याम मोहन अस्थाना

साल 1956 आरा रेलवे स्टेशन पर 32 वर्षीय एक नौजवान ट्रेन से हाथो मे पेट्टी उठाये उतरता है। अपनी नौकरी की बुलावे के पत्र के साथ महाराजा कॉलेज मे अपने आँखो मे बहुत सारे सपने सजोये, अध्यापक के पद पर अपनी नियुक्ति की संपुष्टि करता है। वो नौजवान प्रो श्याम मोहन अस्थाना थे। बनारस से शुरू हुई उनकी जीवन यात्रा काठमांडू होते हुए आरा मे आकर आरा के ही होकर जीवन यात्रा मुक्तिधाम आरा पर समाप्त हो जाती है। बनारस से निकला ये यायावर अपना स्थायी ठिकाना आरा के महादेवा रोड से होते हुए राजेन्द्रनगर और मानसरोवर कॉलोनी अस्पताल रोड मे अपने यायावरी को कुछ सालो तक विराम देता है।

1961 साल में 37 वर्ष प्रो० श्याम मोहन अस्थाना ने अपनी रंगमंच की यात्रा आरा रंगमंच पर विसर्जन नाटक से शुरू हो कर 2011 मे उनके घर के ऊपर सावत्री सभागार मे मई माह मे तीन एकांकी नाटक भारतेन्दु हरिश्चंद्र के अंधेर नगरी चौपट राजा, मुंशी प्रेमचंद की सवा सेर गेहूँ और उनके द्वारा लिखित तीन बुद्धिमान बंदर नाटक उनका अंतिम नाटक रहा। ये तीनों नाटक उन्ही के द्वारा निर्देशित थी। उनके अस्वस्थ होने से पहले तक मुझ पर उनका निरंतर दबाव बनाये थे कि तुम पुनः रंगमंच पर लौट आओ, तुम्हारी जरूरत है। ऐसी तुम लोहा को सोना बना रहे हो परन्तु तुम नाटक भी करो। रामकुमार सिंह और शमशाद प्रेम भी दबाव बनाये थे। अंततः मैं रंगमंच पर लौटा अपने निर्देशन मे आषाढ का एक दिन नाटक लेकर। 24, 25, 26, 27 December 2015 इस नाटक का तिथि थी।

इस यायावर ने कमाल की तिथि अपनी यायावरी के लिए चुनी 24 Dec 2015 को संध्याकाल, जब आषाढ का एक दिन का मंचन हो रहा था। वे रंगध्वज जो वर्षो से लिए वे चल रहे थे शायद मेरे लिए ही रूके थे कि मैं रंगमंच पर वापस लौटकर आऊँ और वे रंगध्वज मुझे सौंप कर ये यायावर अनंत की यात्रा पर निकल पड़े मानो कह रहे हो कि रखो अपनी लुगदी कमानी। अब मैं चला, डर हम को भी लगता है, रस्ते के सन्नाटे से लेकिन एक सफर पर ऐ दिल अब तो जाना तो होगा। किसी भी रंगकर्मी साहित्यकार को शायद ही ऐसा नसीब होता कि जिदंगी भर रंगमंच पर होगा और अनंत की यात्रा की शुरुआत पर नाट्य जगत के अप्रतिम नाटक मोहन राकेश के आषाढ के एक दिन से भूमिका नाट्य संस्था के द्वारा सारे कलाकार नाटक के वेश-भुषा मे मंच से 24 Dec 2015 को इस यायावर रंगमंच के पुरोधा प्रो श्याम मोहन अस्थाना को भावभीनी श्रद्धांजली और अंतिम सलामी अपने नाटक के द्वारा दी। ये सिलसला चारो दिन उनके याद मे चला। 25 Dec 2015 को उनकी यायावरी की अनंत यात्रा सुबह में शुरू होकर आरा के मुक्तिधाम मे अपने रंगो को पंचतत्व मे बिखेरते हुए अग्नि को देह दान कर हमेशा के लिए यह यायावर अपनी यायावरी की अनंत की यात्रा पर निकल गये।

मैं सर के साथ मात्र दो नाटको मे साथ काम किया। पहला 1981 मे दुसरी सृष्टी आरा के रूपम सिनेमा मे तथा दुसरा मुजाहिद 1992 मे शिमला मे। मेरे द्वारा निर्देशित सभी नाटको को सर देखने जरूर आते तथा एक अभिभावक की तरह नाटको की समीक्षा कर प्रोत्साहित करते थे। महाभोज नाटक देखने के बाद घर पर बुलाकर पीठ ठोकते हुए आशीर्वाद दिया और कहा कि ऐ जी तुमने ऐतिहास रच दिया जिस ढंग से तुमने महाभोज को प्रस्तुत किया वो कल्पना, भव्यता और भावनाओ का समिश्रण लाजवाब था। पर उनका उलाहना भी था कि तुमने नाटक को बहुत महंगा कर दिया। बहुत से मुद्दो पर हम दोनो के बीच असहमति रहते हुए भी आपसी प्रेम हमेशा बना रहा। एक बार सर अपने घर बुलाकर मुझे अपनी नयी नाटक रावण तेरे कितने रूप को सुनाया तथा पहली बार उन्होने मुझ से कहा कि इस नाटक को तुम निर्देशित करो जी।

मैं ने हामी भर दी। इस नाटक के बारे में हमदोनों के बीच चर्चा और बातचीत के आधार पर मैंने सर को इस नाटक पर सुझाव दिये और सर मान गये। अमूमन उनके स्वभाव के विपरीत था,

वे किसी का सुझाव जल्दी मानते नहीं थे पर मेरा सभी सुझाव माने और उस पर काम भी शुरू किये पर वक्त के गर्भ में कुछ और था सर भी कुछ कार्यों में व्यस्त हो गये और मैंने भी दिसंबर 1995 में थैक यू मि ग्लाड नाटक करने के बाद रंगमंच छोड़ दिया। इस नाटक में सत्या अस्थाना जो महिला रंगकर्मी के तौर पर विसर्जन एवम अन्य नाटक की थी और सर की बहन भी थी,

उनको श्रद्धांजली दी गयी थी। रंगमंच छोड़ने के कारण सर का नाटक रावण तेरे कितने रूप नहीं कर पाये। जब मैं रंगमंच पर बीस वर्षों बाद लौटा तो सर अस्वस्थ हो चुके थे। सर के एक दोस्त राम निहाल गुंजन थे ये वाम पंथी थे और सर दक्षिणपंथी थे पर दोनों में काफी अच्छी साहित्यिक दोस्ती थी। दोस्ती में वे लोग अपने अपने विचार धारा को अलग रखते थे। ऐसे थे अस्थाना सर। बहुत सारी यादें उनसे जुड़ी हैं। सर आज सशरीर नहीं हैं पर ऐसा लगता है कि वो कह रहे कि-

मेरी अंतिम यात्रा में जब
पहला कदम रखो
तब याद करना
वे सारी यात्राएं
जो मैंने अकेले की।

मुझे अंतिम विदाई देते
मेरा चेहरा निहारते
मन ही मन मुझे
बिन बताए जाने का
उलाहना ओढ़ाते याद करना।
मेरे द्वारा तुम्हें बार-बार
कहना कि तुम रंगमंच पर लौट आओ
तुम्हारी याद रंगमंच को आ रही है
कब आओगे।

मेरी अंतिम इच्छा का
अंदाजा लगाते याद करना
मेरे वे सारे हंसते
खिलखिलाते मन
जो हर हाल में जीने का
प्रयास करते अंततः थक कर
चिरनिद्रा में लीन हो गए।

और फिर जब भी
किसी से बताओगे कि
मैं नहीं रहा तब शायद
तुम्हें अहसास होगा
कि मैं कभी था भी...

- श्रीधर शर्मा

श्याम मोहन अस्थाना - रंगमंच की अंतरात्मा को गढ़ने वाला एक नायक

जब भी भोजपुरी अंचल के रंगमंच का इतिहास लिखा जाएगा, तो उसमें एक नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा प्रो. श्याम मोहन अस्थाना। वे केवल एक नाट्यलेखक, निर्देशक, या शिक्षक नहीं थे; वे रंग-संस्कृति के विवेकी निर्माता थे। उनके शब्दों में विचार, व्यंग्य में विवेक, और मंच पर समाज का प्रतिबिंब दिखाई देता था। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे उनके साथ काम करने और उनके सान्निध्य में रंगमंच की बारीकियों को समझने का अवसर मिला। उनकी उपस्थिति नाटकों की केवल समीक्षा तक सीमित नहीं थी, वह मंचन की आत्मा में समाहित हो जाती थी।

उनके नाटक विचारों का सजीव दस्तावेज़ प्रो. अस्थाना के लिखे नाटक समाज के तमाम यथार्थों को हमारे सामने लाते हैं। चाहे वह विडंबनाओं पर आधारित हो या मानवीय संवेदनाओं से भरे हों, उनके नाटक हमेशा संवाद पैदा करते थे और यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी। उनके प्रमुख नाटकों में शामिल हैं: हजारों मंचिय नाटक का भी सृजन किया जिसमें " बुद्धम् शरणम् गच्छामि " ने मोन्स लैण्ड " मेरा नाम मथुरा है ", " अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरोवा " तुफान " " बुधुआ की शादी ", एंव , सपना खरीदोगे " दुसरी सृष्टि आदि नाटकों ने तो देश में झंडे गाड़ दिए और उनके इस प्रयास से लघु नाटकों के मंचन में एक नयी दिशा दी जो आज भी जारी है।

मुर्गियों को क्यों गुस्सा आता है एक व्यंग्यपूर्ण नाटक जिसमें मुर्गे-मुर्गियों के ज़रिए पुरुषसत्ता, पाखंड और सामाजिक कुरीतियों पर करारा व्यंग्य किया गया। इसका निर्देशन मैंने (रविंद्र भारती) किया, और यह नाटक अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित हुआ। एक गुरु, एक मार्गदर्शक, एक साथीवे केवल अपने लिखे नाटकों के माध्यम से नहीं, बल्कि युवा रंगकर्मियों के साथ संवाद और विमर्श के ज़रिए भी प्रेरणा देते थे। मैंने जब भी कोई मंचन किया, वे उपस्थित रहे और हमेशा मंच के बाद एक गूढ़ समीक्षा करते, जिसमें सुधार और सराहना दोनों का सामंजस्य रहता। वे मेरी यात्रा के सहयात्री थे एक ऐसे साथी जिन्होंने सिखाया कि रंगमंच केवल प्रस्तुतिकरण नहीं, उत्तरदायित्व है।

भोजपुर और रंगकर्म की आत्मा आज जब भोजपुर का कोई रंगकर्म नाटक करता है, तो उसकी चेतना में कहीं न कहीं प्रो. अस्थाना जी की छाया होती है। वे मंच पर भले नहीं रहे, पर उनकी दृष्टि आज भी हमारे संदों, निर्देशन, और प्रयोगों में जीवित है। उनकी जीवन शताब्दी वर्ष में, मैं एक रंगकर्म के रूप में उन्हें श्रद्धा, स्मृति और कृतज्ञता के साथ नमन करता हूँ।

प्रो. श्याम मोहन अस्थाना जी, आपका योगदान अविस्मरणीय है, और आपकी विरासत सदैव हमें प्रेरित करती रहेगी मुझे याद आते हैं प्रो. श्याम मोहन अस्थाना, एक रंगकर्म की दृष्टि से रविंद्र भारतीजब भी रंगमंच की बात होती है, और भोजपुर की धरती पर थियेटर की हलचल याद की जाती है, तो एक नाम ससम्मान और सजीवता के साथ उभरता है प्रो. श्याम मोहन अस्थाना। वे केवल एक शिक्षक या रंगनिर्देशक भर नहीं थे, वे थिक टैंक थे समाज को रंग के माध्यम से देखने-समझने और बदलने की प्रेरणा देने वाले पुरोधामुझे गर्व है कि उनके साथ कार्य करने का अवसर मिला।

मेरे द्वारा निर्देशित नाटक "मुर्गियों को क्यों गुस्सा आता है" उनके प्रिय नाटकों में से एक रहा। इस नाटक में मुर्गे और मुर्गियों के माध्यम से हमने समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों, लिंगभेद, नैतिक गिरावट और सत्ता के दोहरे मानदंडों पर तीखा व्यंग्य किया था। यह नाटक अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने में सफल रहा और मुझे आज भी याद है, उस दिन प्रो. अस्थाना जी की आंखों की चमक और चेहरे की मुस्कान ने मेरी मेहनत को सार्थक कर दिया था।

उनकी उपस्थिति और समीक्षा: वे मेरे हर नाटक के मंचन में उपस्थित रहते। मंचन के बाद उनके द्वारा किया गया विश्लेषण, कभी कड़वा, कभी मीठा पर हमेशा रचनात्मक होता था। उन्होंने कभी चापलूसी नहीं की, पर कभी मेरी पीठ थपथपाना न भी भूले जब उन्होंने कुछ अलग और सशक्त देखा।

उनके साथ काम करते हुए रंगमंच मेरे लिए केवल अभिनय या निर्देशन नहीं रहा, बल्कि सामाजिक चेतना का माध्यम बन गया।

आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं...भोजपुर के रंगकर्मी, विद्यार्थी, और समाज में जागरूकता की बात करने वाले हर व्यक्ति को आज उनकी अनुपस्थिति खलती है। उनकी जीवन शताब्दी पर, मैं एक रंगकर्मी के रूप में उन्हें याद करता हूँ श्रद्धांजलि देता हूँ। उन्होंने सिखाया कि रंगमंच केवल संवाद नहीं, संवेदना है। वह एक मंच नहीं, एक आंदोलन है। और सबसे बड़ी बात उन्होंने यह विश्वास दिया कि एक छोटे से कस्बे से भी कला की बड़ी लहर उठ सकती है। "प्रो. श्याम मोहन अस्थाना जी, रंगमंच आपको कभी नहीं भूलेगा। आप विचारों में, रंगों में, संवादों में जीवित रहेंगे।"

शत शत नमन

- रविंद्र भारती

आज भी मेरी स्मृतियों में मौजूद हैं प्रो. श्याम मोहन अस्थाना

एजी-एजी नाटक नहीं हो रहा है। एजी-एजी नाटक होना चाहिए। एजी-एजी नाटक करोगे? चर्चित नाटककार, निर्देशक, रंगकर्मी और समाजसेवी प्रो.श्याम मोहन अस्थाना के जीवन के अंतिम समय की उक्त बातें आज भी मेरे और अन्य के जेहन में मौजूद हैं। आजीवन वे रंगमंच के प्रति समर्पित रहें। शहर ही नहीं, बल्कि देश के विभिन्न शहरों में आयोजित अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिताओं में शामिल होकर उन्होंने अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों को काफी प्रभावित किया। साथ ही इनकी टीम कामायनी ने कई पुरस्कार जीता। उन्होंने आरा को नाटक के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया। कई संस्थाओं से जुड़े प्रो. श्याम मोहन अस्थाना का निधन 24 दिसंबर 2015 को आरा स्थित आवास पर हो गया।

बचपन से था नाटकों से लगाव: प्रो.श्याम मोहन अस्थाना का जन्म 29 अक्टूबर 1924 को बनारस में हुआ था। उन्हें बचपन से ही नाटकों से लगाव था। स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रम में होने वाले नाटकों में वे हिस्सा लेते थे। एक बार नाटक अंधेर नगरी चौपट राजा में राजा की भूमिका निभा रहे थे, तभी संवाद बोलते समय उनकी बनावटी मूँछ गिर गई। छात्र अस्थाना ने अपने विवेक का इस्तेमाल करते हुए मंत्री से कहा- मंत्री देखते नहीं राजा की मूँछ गिर गई है। इसे उठाकर लगाओ। इस संवाद से एक पल के लिए लगा कि यह संवाद नाटक का है। नाटक समाप्त होने के बाद उनकी इस चतुराई की लोगों ने बहुत तारीफ की।

प्रो. श्याम मोहन अस्थाना का आरा आगमन: नौकरी के सिलसिले में प्रो.श्याम मोहन अस्थाना नेपाल में कई साल तक रहें। इसके बाद उनका आरा आगमन 1956 में बनारस से हुआ। यहां महाराजा कालेज में राजनीति शास्त्र में व्याख्याता के पद पर नियुक्त हुए। वे शहर के सामाजिक व राजनीतिक आंदोलनों से जुड़े। साथ ही सांस्कृतिक गतिविधियों की शुरुआत की। प्रो.अस्थाना, डॉ.मुरली मनोहर प्रसाद और प्रो.राणा प्रताप सिंह ने रंगमंच नामक संस्था का गठन किया। इस संस्था के द्वारा प्रो.श्याम मोहन अस्थाना लिखित नाटक पूरब और पश्चिम, तवांग, मुजाहिद, जमीन जो किसी की नहीं आदि का मंचन हुआ।

कामायनी का गठन: त्रिमूर्ति में मतभेद के कारण प्रो.श्याम मोहन अस्थाना रंगमंच से अलग होकर कामायनी संस्था बनाई। इस संस्था के माध्यम से प्रो.अस्थाना ने स्थानीय स्तर से लेकर दूसरे प्रदेशों में कई नाटकों की प्रस्तुतियां की। साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर आरा रंगमंच को स्थापित किया। कामायनी व इससे जुड़े कलाकारों ने स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता में कई पुरस्कार प्राप्त किये।

प्रमुख कृतियां: प्रो.श्याम मोहन अस्थाना ने लगभग 150 नाटक, एकांकी, बाल नाटक आदि लिखा। इनके संग्रहों में पूरब व पश्चिम (पूर्ण कालिक- 1963), खरीदा हुआ चेहरा (एकांकी संग्रह- 1983), नागफनी की डाल (एकांकी संग्रह - 1983), धीरे बहो गंगा (एकांकी संग्रह- 1989), आदिम अग्नि (एकांकी संग्रह - 1989), रावण तेरे रूप अनेक (पूर्ण कालिक - 1989), दूसरी सृष्टि, शाप ग्रस्त, बुद्धम शरणम् गच्छामि, मुर्गियों को क्यों गुस्सा आता है, नारदजी चुनाव के चक्कर में, बीबियों की हड़ताल आदि हैं।

नाटकों का आकाशवाणी व दूरदर्शन से प्रसारण: प्रो. अस्थाना का आकाशवाणी से एक सौ से अधिक नाटकों का प्रसारण हुआ।

कला व कलाकार को करते थे सहयोग: शहर में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक व अन्य आयोजनों में वे आर्थिक सहयोग करते थे। वहीं जरूरत पड़ने पर कलाकारों को आर्थिक सहयोग करते थे। अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए यदि कलाकार के पास कोई प्रॉब्लम होता तो प्रो.अस्थाना उसका टिकट स्वयं करा देते थे।

गिरफ्तारी के लिए पहुंची पुलिस को चाय पिलवाई: प्रारंभ से ही विद्रोही प्रवृत्ति के व्यक्ति होने के कारण 1942 के राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। वहीं बिहार के 74 आंदोलन में भी काफी सक्रिय रहे। जिसके कारण मीसा के तहत इनकी गिरफ्तारी हुई और हजारीबाग जेल भेजा गया। प्रो.अस्थाना ने बताया था कि तब मैं किराए के मकान में राजेन्द्र नगर में रहता था। अहले सुबह मकान को पुलिस ने चारों ओर से घेर लिया। पुलिस ने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खोलने पर पुलिस ने कहा कि मीसा के तहत हम आपको गिरफ्तार करने आए हैं। तब वे पुलिस से रिक्वेस्ट किये कि कोई बात नहीं हमको थोड़ा आप लोग समय दीजिए, ताकि फ्रेश हो लें। वहीं अपनी पत्नी सावित्री अस्थाना को आवाज दी कि इन लोगों के लिए तुम चाय बना दो। पुलिस को आश्चर्य हुआ कि वे लोग इनको गिरफ्तारी के लिए आए हैं और वे उन्हें चाय पिला रहे हैं।

कई सम्मानों से हुए सम्मानित: नाटक के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर कई आयोजनों में प्रो.श्याम मोहन अस्थाना को एक सौ से अधिक बार सम्मानित किया गया। राजभाषा विभाग, बिहार सरकार द्वारा रामवृक्ष बेनीपुरी पुरस्कार, प्रांगण पटना द्वारा पाटलीपुत्र पुरस्कार, रमण ट्रस्ट, पटना द्वारा नाट्य लेखन पुरस्कार, बिहार आर्ट थियेटर, पटना द्वारा अनिल मुखर्जी शिखर सम्मान, एकजुट, दानापुर द्वारा भिखारी ठाकुर शिखर सम्मान समेत अन्य सम्मानों से सम्मानित किया गया

|

नाटकों पर हुआ शोध: प्रो. श्याम मोहन अस्थाना के नाटकों पर शोध कार्य भी हुआ है। शोध छात्रा प्रभा कुमारी ने एकांकीकार प्रो.श्याम मोहन अस्थाना एवं शोध छात्रा सरोज कुमारी ने भोजपुर रंगमंच के 100 वर्ष और प्रो.श्याम मोहन अस्थाना के नाटक विषय पर शोध किया।

- शमशाद प्रेम

“रंग ऋषि” प्रो. श्याम मोहन अस्थाना

प्रिय मित्र, डा. दीपक के द्वारा सर की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में डिजिटल स्मृति ग्रन्थ निकालने की योजना की खबर पा कर जहां एक ओर मन खुशियों से भर उठा, वहीं दूसरी ओर वर्षों, मंच पर और मंच के परे सर के साथ बिताये दिनों की स्मृतियाँ सजीव हो उठीं...स्मृतियों के इस आवेग को शब्दों में बांधना कठिन सा प्रतीत होने लगा...क्योंकि संस्मरण अनेक हैं...और सर का व्यक्तित्व बहुआयामी...पशोपेश में हूँ किनको लिखूँ और किनको छोड़ूँ...गागर में सागर भरना सरल तो नहीं होता ना...

बहरहाल...

मैं, अपने आरा प्रवास के लगभग पन्द्रह वर्षों तक सर के निकट सानिध्य में रहा...रंगकर्म को नजदीक से जानने समझने का अवसर मिला...उनसे ही यह जाना कि अनुशासन और एकाग्रता एक उत्कृष्ट रंगकर्म के लिए कितना ज़रूरी होता है...

नाटकों के रिहर्सल के दौरान कलाकारों को अभिनय और अभिव्यक्ति के लिए खुली छूट देना भी मैंने सर में ही देखा...पूछने पर अक्सर कहा करते थे कि कला में विशेष कर नाटक और नाटक में अभिनय, तो बिल्कुल ही मैथेमेटिक्स का दो और दो चार नहीं है...जीतेंद्र, अभिनय ना ही गुणा है, न भाग, न प्लस है न माइनस... अभिनय स्वतः प्रस्फुटित अभिव्यक्ति है...और अभिव्यक्ति को सिखाया नहीं जासकता...अभिव्यक्ति सही समय पर स्वतः ही उपजता है, उभरता है...अभिव्यक्त होता है...इसलिए **Let it come from inside of the soul**...बस फील करो और करते जाओ...कई नाटकों का मंचन सर के निर्देशन में करने का अवसर मिला...आरा शहर से ले कर अखिल भारतीय लघु नाट्य प्रतियोगिताओं तक मैं...उमंग और उत्साह से भरे होते थे हम सब रंगकर्म सर की निकटता में...

सर के लिखे नाटकों में एक नाटक, “मेरा नाम मथुरा है” न केवल मुझे बल्कि सभी रंगप्रेमियों के मन-मस्तिष्क को झकझोरता है...यह नाटक एक तीखा प्रहार हैसमाज पर...इस नाटक के मंचन के बाद भी बहुत दिनों तक मैं इस नाटक के प्रभाव को महसूस करता रहा था... सहज और सम-भाव में रहने की कला भी यहीं से सिखने को मिली है...

आरा छोड़ बाहर जाने के कारण सर के साथ का सत्संग छूट गया और साथ ही लगभग छूट गया रंगमंच... लेकिन सर के साथ के बिताये पल, दिन हमेशा साथ रहे...और आज अनंत में विलीन होने के बाद भी सर हमारी स्मृतियों में वैसे ही जीवंत हैं जैसे तब थे...और सदा रहेंगे...जब भी रंगकर्म और रंगमंच की बात होगी अतीत के गलियारों में सर के कदमों की आहट हम सभी रंगकर्मियों और रंग प्रेमियों को अवश्य सुनाई देगी... “रंग ऋषि” सर को कोटि-कोटि नमन...

- जितेंद्र सुमन

I remember Late Professor Shyam Mohan Asthana for underwritten plays-

1. YAMRAJ KA BIMA
2. NAGAR VADHU
3. JAMIN KO KISI KI NAHI

Above these plays have been played by me in my sweet memory.

I had also been given chance in Akashvani Patna by him and for that I will always be grateful to him.

- Uday Sahay

जब गुरु के कहने पर मैंने शिर का मुंडन कराया

गुरु और शिष्य का रिश्ता बड़ा प्यारा होता है भले ही काल समय और स्थान बदलते रहें पर गुरु गुरु होता है। मुझे याद है जब पहली बार महाराजा कॉलेज के पॉलिटिकल साइंस विभाग में मेरी मुलाकात प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना से हुई। मैं प्रथम वर्ष का छात्र था और पॉलिटिकल साइंस मेरा एक विषय था नाटकों के प्रति मेरा रुझान जैन स्कूल छात्र जीवन से था और प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना का शिष्य बनकर मैं अपने आप को भाग्यशाली मानता था गुरु ने एक दिन मेरा अग्नि परीक्षा ली और मुझे अपने घर मानसरोवर कॉलोनी आने का मौका दिया मैं बहुत खुश था क्योंकि मेरे स्कूल जीवन का रंगकर्म जग चुका था।

जब मैं गुरु अस्थाना के घर शाम के समय पहुंचा तो वहां दीपक भैया, रामकुमार भईया, भाभी, टुनी, तितली, गुड़िया, प्रसून आदि से मुलाकात हुई सारे लोग बुद्धम शरणम् गच्छामि नामक नाटक के मंचन की बात कर रहे थे बिना किसी लाग लपेट के नाटक के लेखक और निर्देशक प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना ने कहा क्या आप बौद्ध भिक्षुक का पात्र अभिनय कर सकते हैं और यदि हां तो आपको अपने बाल का मुंडन करना होगा।

वहां प्रसून और गुड़िया, तितली का नृत्य देख मैं हतप्रभ था, रामकुमार भईया और भाभी राजा रानी एवं दीपक भईया पुरोहित के रूप में शानदार अभिनय का मैं कायल होगया और दुसरे दिन अपने बालों का मुंडन करा आपने अभिनय के लिए गुरु श्याम मोहन अस्थाना के सामने खड़ा हो गया फिर क्या था खगोल नाट्य महोत्सव, अखिल भारतीय नाट्य महोत्सव इलाहाबाद में बुद्धम शरणम् गच्छामि का पंचम लहराया, जमीन जो किसी का नहीं, गिरगिट, आदि अनेक नुक्कड़ नाटक में काम करने का मौका मिला।

आज हमारे बीच हमारे गुरु श्याम मोहन अस्थाना नहीं रहे लेकिन उनके द्वारा लिखित एवं निर्देशित नाटक आज भी हमारे साथ हैं आरा रंगमंच प्रो. श्यामा मोहन अस्थाना और डॉ. के. बी. सहाय के बिना अधूरा है उनकी कमी आरा रंगमंच को हमेशा खेलेगी लेकिन उनके यादों को उनके नाटक को आरा रंगमंच हमेशा जिंदा रखा है और रखेगा।

- मनोज कुमार सिंह

मेरी व्यक्तिगत यादगार स्वर्गीय प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना और मेरे नाट्य गुरु के जन्म शताब्दी वर्ष पर

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर, मैं भारतीय रंगमंच के एक महान व्यक्तित्व को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूँ जिन्होंने मेरी कला यात्रा में भी गहरा प्रभाव डाला।

मेरा उनसे पहला परिचय 1981 में हुआ, जब उन्होंने मुझे अपने प्रसिद्ध नाटक *बुद्धं शरणं गच्छामि* में एक छोटी भूमिका निभाने का अवसर दिया। वह भूमिका थी—प्रतिहार की, जो राज दरबार में नृत्य प्रतियोगिता के दौरान भाला लिए खड़ा था। मुझे कोई संवाद नहीं था, फिर भी उनके निर्देशन में मंच साझा करने का सौभाग्य मिला। उस संक्षिप्त अनुभव में ही मैंने उनकी कला पर गहरी पकड़ और हर एक दृश्य में गहराई भरने की क्षमता देखी।

इसके बाद जो हुआ, वह मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। उन्होंने मुझमें छुपी संभावनाओं को देखा और मुझे बाद के कई नाटकों में मुख्य भूमिका निभाने का मौका दिया—जैसे *बुद्धं शरणं गच्छामि, नो मेन'स लैंड* और *मेरा नाम मथुरा* है। उनकी मार्गदर्शन में मैं केवल एक अभिनेता ही नहीं, बल्कि एक विचारशील और अनुशासित कलाकार भी बना।

उनका प्रशिक्षण कठोर पर स्नेहपूर्ण था, और उनके मार्गदर्शन से मैं विश्वविद्यालय में दो बार, 1985 और 1986 में, श्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार जीत पाया। लेकिन पुरस्कारों से बढ़कर वे मूल्य थे जो उन्होंने मुझे सिखाए—समर्पण, पात्र के प्रति ईमानदारी, और मंच के प्रति सम्मान—जो आज भी मेरे साथ हैं।

उनमें सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा जो मैंने पाई, वह थी हिंदी उच्चारण और सार्वजनिक भाषण की कला, जिसे मैं आज भी अपने व्यवसाय और पेशेवर जीवन में उपयोग करता हूँ।

प्रोफेसर अस्थाना केवल एक निर्देशक नहीं थे; वे सच्चे गुरु थे। वे उस प्रतिभा को देखते थे जो अन्य लोग नहीं देखते थे। उन्होंने कच्चे जुनून को सशक्त प्रदर्शन में बदला। उनकी विरासत न केवल उनके नाटकों में बल्कि उन अनगिनत जीवनों में जीवित है, जिन पर उन्होंने छाप छोड़ी, जिसमें मेरा जीवन भी शामिल है।

आज जब हम उन्हें याद करते हैं, तो मैं एक महान कथाकार, प्रेरणादायक शिक्षक और विनम्र आत्मा को नमन करता हूँ, जिनका रंगमंच और हमारे व्यक्तिगत जीवन में योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

सादर,

- गणेश प्रसाद सिंह

1981 की बात है बोधगया में मगध यूनिवर्सिटी में इंटर कॉलेज कंपीटीशन थे हम लोग ने 6/3/81 को आरा से बोधगया के लिए प्रस्थान किया हमारे टीम लीडर थे प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना सर और हम लोग कुछ लोगों की टीम गई थी सेमी क्लासिकल ग्रुप में। मुझे एक होली गानी थी दादरा में और 7 तारीख को मेरा प्रोग्राम था लगभग 1:00 बजे दिन में मेरा नंबर आने वाला था और करीब 11:00 बजे अस्थाना सर हमको रूम में बैठकर होली के पहले के दोहे लिख रहे थे और उन्होंने कहा कि इस होली के पहले यह दोहे तुमको गाने हैं और उन्होंने सिखाया 1 घंटे में हम लोग तैयार हो गए 1:00 बजे करीब मेरा प्रोग्राम हुआ उस प्रोग्राम में मैं नेअच्छा गाया लेकिन एक जगह में बेसुरा हो गया क्योंकि बहुत प्रेक्टिस नहीं थी।

इसलिए मेरा नंबर चौथा आया इसलिए कहीं लिस्ट में नाम नहीं होगा लेकिन वहां पर एक और चीज थी कि वहां बहुत सारे कॉलेज प्रोफेशनल सिंगर को लेकर आए थे जैसे मुझे याद है पटना कॉमर्स कॉलेज वाले पटना रेडियो स्टेशन का एक ए ग्रेट आर्टिस्ट थे इनामुद्दीन जी को लेकर आए थे वह फर्स्ट आए थे ये यह मेरी बहुत अच्छी यादें हैं और उनके हाथ का लिखा हुआ वो दोहा मेरे साथ है अभी भी मेरे पुरानी डायरी में जो मैं इसके साथ संलग्न करूंगा और बाकी मेरा प्रोग्राम अच्छा हुआ हम लोग एक नाटक भी ले गए थे जिसको वहां बहुत सराहा गया था हम लोगों ने नाटक में अच्छा किया था आज भी मुझे वो हर पल याद है और जीवनभर याद रहेगाहमारे लिए बहुत अच्छा संस्मरण रहा है अस्थाना जी से बहुत सीखने को मिला उनका अनुशासन उनकी कार्यशैली हमेशा वह हमारे लिए वंदनी रहेंगे।

धन्यवाद!

- सोमेंद्र माथुर

SEPTEMBER

4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17

Reminders 21 Wednesday

'होली' 'दादरा'

मैं तो मलूंगी गुलाल तेरे जालन में, मैं तो
खुज मलूंगी,

अबीर गुलाल लाल भये बादल
भारत कुमकुमा तेरे जालन में।

आज पिया तोहे पकड़ मंगवहीं,
वीर बनूंगी वृज जालन में।

खेलत फाग छटाग घरी

अनुरागही लालन की चरिके,

भारत कुमकुम केसर को

पिचकारिन में टंग को प्ररिके

मदमस्त प्रली रसरवान चली

Saturday मदमस्त हिये हरि को हरिके Reminders

अनोखी (अबीरनी)

आज अनोखी रास भयी

वृज में मदमस्त यये लरिके

स्व. प्रो. श्याम मोहन अस्थाना

यह एक नाम ही है मात्र, समझने की हम सबो को भूल नहीं करनी चाहिए। साहित्य के मुर्धनय व्यक्तित्व के मालिक, जिन्होंने समसामयिक समाजिक, कुरीतियों, घटनाओं का त्वरित नाट्य रूपन्तर कर समाज को दिशा और दशा निर्धारित करने का अटल प्रयास करते रहे। गुरुजी के सानिध्य में मुझे 1986 से 1996 तक नाटक करने का मौका मिला। कई नटको का मंचन किया, मेरा नाम मथुरा है, बुधम शरणम गच्छामि, नो मैस लैंड, दृष्टिहीन दिशा हीन, मदन दहन इत्यादि। बात सिर्फ नाट्य के मंचन की नहीं, उनके बहुयामी व्यक्तित्व से जो कुछ सिखने को मिला। जैसे टीम स्पिरिट, आपसी सामंजस्य, जात पात भेड़ भाव से ऊपर उठ कर काम करना। क्युकि जो टीम लेकर जाते थे गुरुजी, उसमें शहर के सभ्रान्त परिवार से लेकर सामान्य तक कई विभिन्न विचार और आचरण के कलाकार होते थे। सबो को एक साथ लेकर चलना यह वही कर सकते थे। आरा जैसी जगह से हम सबो को निकाल कर हमारी गुणवक्ता निखार के उसके आधार पर हमें राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनने का मौका दिया।

क्षमाप्रार्थी हूँ परन्तु, मैं उनकी चाल का बहुत ही नकल करता था, बोली की भी, उनका तकिया कलाम था एजी एजी जो काफ़ी प्रचलित था।

मुझे याद है मिंड मुरैना में नाट्य यात्रा के दौरान कोई तैयारी नहीं थी। वो परेशान थे, मगर मैंने आरा में पुरुषो को स्त्री लिवास में नृत्य करते बचपन से देखा था, और उनसे छुपा कर यात्रा के दौरान वह नृत्य किया, वो बहुत खुश हुए और जब उस नृत्य के कारण हमारी संस्था को जुलूस प्रदर्शन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। मेरठ में मेरा नाम मथुरा है को, लेकर रघुवीर यादव और वाशीर वदर ने सराहना की, याद है सभी अवार्ड कामायनी को ही मिला कुछ लोग तो बेहोस हो गए खुशी से उन्हें **** सुघाना पड़ा। लोगो का ओटोग्राफ के लिए हुजूम उमड़ पड़ा, वह भी अविस्मरणीय याद आज तक भूल नहीं पाता हूँ, उनका स्नेह प्यार के साथ साथ कभी भी कंही भी एजी एजी भुजंग जरा नन्हीकी, मैडया पर हो जाय नहीं भूल पाता हूँ।

धारा और रूढिवादी सोंच के विपरीत चलने की साहस, उनका मानना था की मनुष्य पदार्थों का पिटारा नहीं भावनाओं का समुच्यय है।, एकाग्रता पूर्ण संग्राम में जूझने वाला उत्साह पूर्ण आनंद का दूसरा नाम प्रो. श्याम मोहन अस्थाना है। मुझे विशेष आभार का अधिकार इस लिए भी है की कामायनी जाने के पश्चायात ही जीवन संगनी भी मिली, जिसमें उनका मानसिक सहयोगी भरपूर था। गुरुजी को हमारे पुरे परिवार की तरफ से विनम्रता पूर्वक श्रद्धांजली। वह एक विचार थे जिन्हे समझने के लिए वैसा ही बौद्धिकता चाहिए 🙏

एक बात कहना तो भूल ही गया जंहा जाते थे ब्लू रंग का कपड़ा पर सफ़ेद से लिखा हुआ बैनर जैसे ही लगते थे बाकी टीमों की टिप्पणी आने शुरू हो जाता था। की कामायनी वाले आ गए अब संतावना पुरस्कार भी मिल जाय यों खुद को धन्य समझिओ।

- द्विवेदी भुजंग भूषण भारद्वाज

मैं निरुपमा शंकर, अपना परिचय किस
 रूप में दूँ, संगम में नहीं आ रहा
 है। स्कूल के दिनों से ही शुरू करती
 हूँ। मैं काफी छोटी थी, छोटी या
 नहीं मैं पढ़ती रही हूँगी। 15 अगस्त या
 26th जून पर राष्ट्र गान गाने हेतु
 मैं कुछ बालिकाओं का चयन हो रहा था
 मेरे स्कूल में, प्रधानाचार्या महोदया
 ने कहा कि मैं जून जम मन गा कर
 सुनाओ। मैंने निर्धारित समय सीमा
 में गा कर सुना दिया, इस प्रकार मेरे
 स्टेज B परफार्मेंस की कुकआत हुई
 मेरी प्रधानाचार्या महोदया प्रीमति
 सावित्री अस्थाना थी, जो प्रो. श्याम
 मोहन अस्थाना सर की धर्म पत्नी
 थीं। वह एक राष्ट्र गान ने मेरी
 मुलाकात / जान पहचान अस्थाना
 सर से करवाई। उसके बाद तो
 करवा नहीं सका। मैं राष्ट्र गान से
 कब इनकी चहती भूनिया बन गई
 पता ही नहीं चला। अस्थाना सर
 संगम से काफी आगे थे / इनके

कई नाटक जैसे अग्नी परीक्षा, बुधम्,
 वारणम्, गच्छामी, मेरा नाम भुशु
 है NO mens Land में प्रमुख
 भूमिका निभाते हुए गिने जाने।
 सर के साथ भारत के कई
 नाट्य प्रतियोगिताओं में भाग लेने
 का अवसर प्राप्त हुआ। इस क्रम
 में सर के सानिध्य में मेरा व्यक्तित्व
 भी मिश्रित रहा था। आज मैं एक
~~बिह्वल~~ ~~व्यक्त~~ बहुराष्ट्रीय व्यक्ति की
 महिला हूँ जिसे गढ़ने में मेरी माता-
 पिता और के साथ साथ सर की
 भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है।
 नाटक के साथ, साथ सर
 ने जब classmate level मपाए
 सिखना शुरू किया, तो मुझे थोड़ा
 आश्चर्य हुआ। क्योंकि अस्थाना सर
 काफी पहले ही अपने शिक्षण कार्य से
 अवकाश प्राप्त कर चुके थे। अवकाश
 प्राप्त करने के पश्चात अखिरसंख्य
 व्यक्ति जीवन से रिशंका हो जाते
 हैं। परन्तु सर ने एक नए जीवन

की शुरुआत का यह बताया कि उस
मात्र मात्र एक नमक है। जब मैं
जी करे, जीवन शुरू करना चाहिए।
उसके इस फिलॉसोफी की मैं बहुत
बड़ी फैन हूँ। कुछ समय वहाँ बाकि
जब मैं अपनी नौकरी से अपवका
प्राप्त करूँगी तब मैं पुनः जीवन की
शुरुआत करना चाहूँगी।

मुझे नहीं समझ में आ रहा है
कि अस्थाना सर की 90-95 वर्ष की
ऊर्जावान जिन्दगी को कैसे उठाने
में समर्थ हूँ। बहुत मुश्किल है।

मैं पुनः दोहराना चाहूँगी कि
मेरे व्यक्तित्व पर जो प्रभाव मोहन
अस्थाना सर का बहुत प्रभाव पड़ा है।
मैं आज भी उन्हें बहुत याद करती
हूँ, मांस करती हूँ।

निरुपमा शंकर

नमस्ते! मैं अनुपमा, आज अस्थाना जी के बारे में बात करते हुए बहुत अजीब सा लग रहा है बहुत सारी पुरानी यादें बहुत सारी अच्छी बातें जब हम लोग सब अस्थाना जी के साथ जाते थे और पूरे भारतवर्ष में हम लोगों ने ऑल इंडिया कला प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था उनके निर्देशन में उनके लिखे हुए नाटकों को मंचन किया मैंने अस्थाना जी में एक बहुत प्रगतिशील और खुले विचारों वाले व्यक्ति देखा था हमेशा वक्त से आगे के सोच रखते थे और उनका यह बड़ा प्लस पॉइंट था और बराबर समझना एक जैसा बिहेव करना और खास करके हम लोग जाते थे तो इतनी लड़कियां नहीं थी नाटकों में काम करने वाली लेकिन हम लोगोंने बहुतइज्जत पाई।

कामायनी से जुड़कर और बहुत अच्छी-अच्छी यादें अस्थाना जी बहुत जेनुइन आदमी थे वह हमेशा हम लोगों को आगे बढ़कर प्रोत्साहित किया जब हम लोग जब हम लोग रिहर्सल करते थे आधी आधी रात को तो वे रिहर्सल मेरे घर पर ही होता था अस्थाना जी को बहुत बड़ी चिंता होती थी की लड़की सेफटी बहुत जरूरी है।

वह बहुत हिसाब से काम करते थे मेरे माँ बाप कभी यह नहीं सोचते थे कि अस्थाना जी के साथ जा रहे हैं तो कोई गड़बड़ होगी वह हमेशा तैयार रहते थे आज उनको याद कर रही हूं बहुत सारी बातें सबसे पहले दूर गए हुए राजगीर तब से लेकर आखिरी मेरे ख्याल से शिमला गए हुए थे।

बहुत अच्छे याद है उनके साथ जुड़ी हुई बहुत अच्छे लोगों से मुलाकात हुई दोस्त बने हुए और सबसे बढ़कर के स्थाना जी से जो सादगी सीखा बहुत हम इज्जत और प्रणाम करूंगी।

- अनुपमा राय

स्मृति-लेख : मेरे गुरु प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना

मनुष्य का जीवन तभी सार्थक बनता है जब उसे कोई ऐसा मार्गदर्शक मिले, जो केवल ज्ञान ही न दे बल्कि आत्मा को भी आलोकित करे। मेरे जीवन में यह सौभाग्य मुझे मेरे गुरु, रंगमंच के महान कलाकार, निर्देशक और नाटककार प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना जी के रूप में प्राप्त हुआ। जब मैं पीछे मुड़कर अपने अतीत को देखता हूँ तो पाता हूँ कि आज मैं जो कुछ भी हूँ, उसमें मेरे गुरु का अमूल्य योगदान है। उनकी स्मृतियाँ आज भी मेरे हृदय में जीवित हैं और वही मेरे लिए प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत हैं।

रंगमंच का दीप्तिमान व्यक्तित्व

श्याम मोहन अस्थाना जी का नाम रंगमंच की दुनिया में किसी परिचय का मोहताज नहीं था। वे केवल अभिनेता ही नहीं, बल्कि अद्भुत निर्देशक और गहन लेखक भी थे। उनके नाटकों में जीवन की सच्चाई, समाज की विडम्बनाएँ और मानवीय संवेदनाएँ इस प्रकार जीवित हो उठती थीं कि दर्शक लंबे समय तक उन्हें भूल नहीं पाते। उनकी लेखनी में तीखापन भी था, और साथ ही वह सहजता भी थी जो सामान्य जनमानस के दिल को छू ले।

मैंने स्वयं देखा है कि जब वे मंच पर उतरते थे तो पूरा सभागार जैसे किसी जादू के असर में आ जाता था। उनके संवादों की गूँज, उनकी आँखों की भाषा और उनके हावभाव इतने सजीव होते कि पात्र की आत्मा उनके माध्यम से प्रकट होती।

गुरु-शिष्य का अनोखा बंधन

मेरा उनके साथ जुड़ाव वर्ष 1982 में हुआ। उस समय मैं भी अभिनय की दुनिया में कदम रख रहा था। धीरे-धीरे यह संबंध केवल रंगमंच तक सीमित न रहकर व्यक्तिगत जीवन में भी गहराता गया। वे मुझे केवल एक शिष्य ही नहीं मानते थे, बल्कि अपने बेटे से भी बढ़कर स्नेह करते थे। यही कारण था कि मेरा उनका घर-आना-जाना परिवार जैसा हो गया।

शाम को जब भी मैं उनके घर जाता, तो वे मुस्कुराकर कहते – “अजी, अजी, आज एक नया नाटक सुनो।” उनकी यह अद्भुत शैली मेरे लिए जीवन का सबसे बड़ा उपहार थी। मैं घंटों बैठकर उनकी बातें सुनता, उनके विचारों में डूब जाता और हर बार कुछ नया सीखकर लौटता।

यात्राएँ और रंगमंचीय अभियान

हमारी टीम ने देश के कोने-कोने में जाकर नाटक प्रस्तुत किए। शिमला की ठंडी वादियों से लेकर असम की धरती तक, बनारस की गलियों से लेकर बरेली और भिंड जैसे शहरों तक हमने अपने गुरु के नेतृत्व में कई मंचीय यात्राएँ कीं। हर शहर में उनका निर्देशन मानो दर्शकों के दिलों पर छा जाता था।

ड्रामा प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए मैंने देखा कि कैसे वे हमें कभी थकने नहीं देते। वे कहते, “नाटक केवल संवाद नहीं है, यह जीवन की गूँज है। जब तुम मंच पर हो तो समझ लो कि पूरा समाज तुम्हारे माध्यम से बोल रहा है।” इन वाक्यों ने मुझे जीवन का दर्शन समझाया।

परिवार जैसा रिश्ता

गुरुजी के साथ मेरा रिश्ता औपचारिकता से कहीं परे था। वे अक्सर मेरे घर आते और उतनी ही आत्मीयता से व्यवहार करते जितनी मैं उनके घर पर पाता। कई बार तो ऐसा लगता था कि हम केवल गुरु-शिष्य नहीं, बल्कि एक परिवार हैं। उनका स्नेह मुझे संबल देता और उनकी उपस्थिति से मेरा जीवन मानो रोशन हो जाता।

जीवन पर उनका प्रभाव

यदि आज मैं रंगमंच और जीवन दोनों में कुछ भी मूल्यवान कर पा रहा हूँ, तो उसका श्रेय उन्हीं को जाता है। उन्होंने मुझे सिखाया कि अभिनय केवल मंच पर नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है। उन्होंने कहा था, "मनुष्य को हर परिस्थिति में अपना पात्र ईमानदारी से निभाना चाहिए।" यह वाक्य मेरे लिए जीवन-मंत्र बन गया।

उनकी संगति ने मेरी सोच को व्यापक बनाया, मुझे आत्मविश्वास दिया और कठिन परिस्थितियों में टिके रहने का साहस भी।

उपसंहार

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना जी केवल एक महान कलाकार ही नहीं थे, वे एक संस्था थे, एक विचारधारा थे। उन्होंने हमें सिखाया कि कला केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाला प्रकाशस्तंभ है। मेरे लिए वे गुरु से बढ़कर पिता समान रहे।

आज जब भी मैं मंच पर खड़ा होता हूँ, तो उनकी आवाज़ मेरे भीतर गूँजती है। उनकी यादें मेरी शक्ति हैं और उनकी स्मृतियाँ मेरी धरोहर। यह स्मृति-लेख उनके प्रति मेरी श्रद्धांजलि है।

- शिवेश्वर पांडेय

अस्थाना सर से मेरा परिचय 'खोज एक नारी पात्र की' नाटक के दौरान हुआ था। तब सातवीं या आठवीं कक्षा में पढ़ती थी। एक दिन क्लास में कहा गया जिसको नाटक में भाग लेना हो स्कूल के ऑफिस में चली जाए।

मैंने बहुत छोटी उम्र में अपने मुहल्ले में नाटक का पूर्वाभ्यास देखा था। तब से ही ये मुझे अपनी ओर खींचता था। तो मैं ऑफिस पहुंच गयी। वहीं पहली बार अस्थाना सर को देखा। पता न क्या देखकर मुझसे झांसी की रानी के संवाद बुलवाए, फिर इसी के लिए चुन लिया। दूसरे दिन रिहर्सल में पहुंची तो देखा झांसी की रानी की भूमिका एक सीनियर निभा रही हैं। जबकि मुझे उद्घोषक की भूमिका दे दी गयी थी। बहुत गुस्सा आया था, रोना भी आया। पर नाटक में काम करने का यह पहला अवसर था तो बड़े मन से काम किया। हालांकि इस पहले अभिनय ने मुझे बड़ा परेशान किया था। डफली बजा-बजाकर कर इसके ताल पर बोलना था- "सुनो-सुनो-सुनो....."। यह कहते हुए चलना भी था। अब या तो मैं डफली ही बजा पाती या चल ही पाती। दोनों होता तो संवाद गायब। सर ने फिर भी धीरज नहीं खोया। बोलते रहे-"एजी, एजी हो जाएगा। फिर से करो।" प्रस्तुति सफल रही। हमें प्रथम पुरस्कार मिला। अब स्कूल में नाटक करने की शुरुआत हो गयी थी। कुछ महीने बाद अस्थाना सर ने 'तीन बंदर' नाटक करवाया। उसमें मेरी बहन और एक दोस्त सुकृति भी थी। इस नाटक के संवाद बड़े चुटीले थे। हास्य-व्यंग्य से भरपूर इस नाटक को करने में बड़ा मजा आया था। आज जब लिख रही तो धुंधली सी याद आ रही।

उन दिनों शाम के समय अपने स्कूल में ही कथक सीखने जाती थी। एक दिन देखा एक नाटक का रिहर्सल हो रहा है, जिसमें बड़े लोग काम कर रहे थे। वहां अस्थाना सर भी थे। देखती कि वो एक कुर्सी पर बैठे रहते और सबके संवाद बोलते। यहां तक की सामने वो कलाकार अभिनय करता इधर सर के चेहरे की मुद्राएं भी बदलती रहतीं। पहले तो खूब हंसी आती। बाद में पता चला इसे प्रोमटिंग कहते हैं। दो- चार-दस दिन बीते थे कि मुझे भी सारे संवाद याद हो गए। एक दिन कोई नहीं आया था तो सर ने मुझे प्रॉक्सी करने को कहा। मैं तो एकदम खुश हो गयी। हूबहू वैसा ही किया जैसा एक दीदी करती थीं। सभी हैरान हुए और खुश भी। फिर तो जो नहीं आता उसी की प्रॉक्सी करनी होती। एक बार मैं डांस स्कूल नहीं गयी। उस दिन कोई एक कलाकार भी नहीं आया था। दूसरे दिन गयी तो सर ने डांटा। बुरा लगा कि एक तो ये लोग अपने घूमने जाएंगे, मुझे नहीं ले जाएंगे और डांट भी रहे। पर क्या पता था कि ऐसा करके ही मुझे अभिनय की बारीकियां सिखायीं गयीं थी। लोगों की प्रॉक्सी करते-करते पूरा नाटक और उसके सभी पात्र का अभिनय मुझे याद हो गया था। नाटक का नाम था 'बुद्धम शरणं गच्छामि'। अब भी इस नाटक के सारे संवाद याद हैं।

एक साल था जब सिनेमा हॉल बंद हो गए थे। तब अस्थाना सर ने तीन नाटक तैयार किया था। उसे देखने स्कूल की सभी लड़कियां गयीं थीं। वो अनुभव अविस्मरणीय था। पहली बार, थोड़ी समझदारी होने के बाद मंच पर नाटक होते देखना ऐसा था जैसे किसी दूसरी दुनिया में प्रवेश कर जाना। देखा कैसे अभिनय से एक पूरी कहानी कही जा रही है। परकाया प्रवेश क्या होता है पहली बार जाना। अब एक बात साफ थी मुझे नाटक करना ही था।

नौवीं कक्षा में थी कि बड़े लोगों के साथ एक नाटक प्रतियोगिता में जाने का अवसर मिला। जगह था रामनगर जो नैनीताल के समीप है। ये एक सपने के पूरे होने जैसा था।

भले अभिनय न किया पर नाटक में नर्तकी की भूमिका निभाने का अवसर मिला, जिसे डांडिया करना था। रामनगर में कुछ ऐसा हुआ कि सब भईया, दीदी लोगों का स्नेह मिलने लगा। सर ने तारीफ की और इसके बाद से ही अस्थाना सर के साथ नाट्य-यात्रा प्रारंभ हो गयी।

कई मज़ेदार अनुभव हुए। पर सबसे हास्यास्पद घटना तब की थी जब नागपुर गए थे। वहां 'तूफान' नाटक का मंचन करना था। नाटक की मुख्य भूमिका छंदा आंटी और एक अन्य पुरुष कलाकार की थी। पर किसी कारणवश दोनों ही नागपुर नहीं जा पाए। अब हुआ ये कि मुझे छंदा आंटी का रोल करना था। मेरी बहन प्रियंबरा को मेरा रोल। तब मेरी उम्र 15 और बहन की 13 थी, जबकि अभिनय 25-26 वर्षीय और 18 वर्षीय लड़कियों का करना था। जबकि अस्थाना सर को मुख्य पुरुष पात्र की भूमिका करनी पड़ी। हम सब जैसे-तैसे तैयार हुए। मेरा किरदार उस लड़की का था जिसे दोनों मुख्य पुरुष किरदारों ने मार दिया था। बहुत गंभीर, उदास रहना था। अस्थाना सर और भूषण भैया को नशे में चूर पात्र का अभिनय करना था। मंच पर नाटक शुरू हुआ, पर जाने क्या हुआ कि दर्शकों की हूटिंग शुरू हो गयी। वो दोनों संवाद बोलते और उनके अंदाज़ पर मुझे भी हंसी आ जाती। दो स्पॉट लाइट था। एक ऑफ होता तो दूसरे स्पॉट लाइट के नीचे खड़े हो जाना था। ये भाग-भाग कर करना था। एक बार भाग ही रही थी कि लाइट ऑन हो गया। नाटक के बीच में बूढ़े काका को लालटेन लेकर मंच पर आना था। वे जैसे ही आए, दर्शकों से आवाजें आने लगी - "चिनिया बादाम, चिनिया बादाम।" अब दर्शक भी हंसने लगे थे। मंच पर गंभीर दृश्य चल रहा था। बड़ी बहन की रूह आयी हुई थी बदला लेने। उधर दर्शक ठहाके लगा रहे थे। मेरी हालत यह थी कि जी चाह रहा था मंच फटे और मैं समा जाऊं। राम-राम करते नाटक खत्म हुआ। न कोई पुरस्कार मिलना था न मिला। पर सर के ही लिखे एक नाटक को पुरस्कार मिला जिसे सोलन की टीम ने किया था। नाम था - 'कोई जगह खाली नहीं है'। ये बेरोजगारी जैसी समस्या पर एकदम अलग तरीके से लिखा शानदार एकांकी है। सीख मिली सिर्फ अच्छे स्क्रिप्ट से नाटक अच्छा नहीं होता, सही अभिनय, निर्देशन भी होना चाहिए। यहां तो निर्देशक स्वयं मंच पर थे तो गड़बड़ होने पर सम्भालनेवाला कौन होता।

खैर, नाटक करने के लिए डुमरांव, गुवाहाटी, बक्सर, शिमला, सोलन, पटना आदि कई जगहों पर जाना हुआ। कई अनुभव हुए। कुछ अच्छे, कुछ बुरे, कुछ बहुत बुरे।

अस्थाना सर ने मेरे भीतर के रंगमंचीय कलाकार को पहचाना था, तभी उन्होंने लगातार काम करवाया। शिमला में मुझे पुरस्कार भी मिला मुजाहिद नाटक के लिए। नाटक प्रतियोगिताओं में आने-जाने से छोटी उम्र से आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ने लगी थी। यात्राएं अच्छी लगने लगीं। पर जब अस्थाना सर ट्रेन में ही नाटक और नृत्य का अभ्यास कराने लगते तो बड़ी शर्म आती। सर तो शुरू हो जाते-"एजी एजी चलो शुरू करो।" हम सब भी मजबूरी में शुरू हो जाते पर आस-पास बैठे यात्रियों का चेहरा देखने लायक होता।

गुवाहाटी में बिहू फेस्टिवल में जाना हुआ था। 15-20 लोगों की टीम थी। बक्सर से भी लोग थे। एक दिन हम सब बाहर जाने के लिए निकले। कुछ दूर चलने पर किसी ने पीछे देखने को कहा। देखकर जोर से हंसी आ गयी। अस्थाना सर की एक खास चाल थी। तो दृश्य यह था कि सर आगे-आगे चल रहे थे, पीछे-पीछे एक लंबी लाइन में उनके ही अंदाज़ को फॉलो करते टीम के कई सदस्य चल रहे थे। उन लोगों को जो भी देखता हंसने लगता। हम सब भी खूब हंसे। तय हुआ सर से नहीं बताना है। पर अब लगता है सर को सब पता होता होगा।

पर शैतान बच्चों की टोली को कैसे काबू में रखना है ये भी उन्हें आता था।

डुमरांव युवा उत्सव का आयोजन था। उसमें नाटक, नृत्य, भाषण, गायन सहित कई तरह की प्रतियोगिताएं होनी थीं। इसमें भाग लेने के लिए हम महाराजा कॉलेज की तरफ से गए थे। अस्थाना सर ने नाटक और नृत्य तैयार करवाया था। वे भी साथ गए थे। हमें जो नाटक करना था उसका नाम था- "अश्वत्थामा हतो, नरो वा कुंजरो वा", जिसे सर ने ही लिखा था।

नाटक में मैं द्रोपदी के रोल में थी और एक भईया युधिष्ठिर के रोल में थे। भईया को संवाद पूरी तरह याद नहीं था। तय हुआ सर प्रोमटिंग करेंगे। नाटक शुरू हुआ। मंच पर मैं थी और युधिष्ठिर थे। संवाद चल रहा था। मैंने अपना संवाद बोल दिया था, युधिष्ठिर को बोलना था, जो प्रोमटिंग का इंतज़ार कर रहे थे। प्रोमटिंग सुनाई दिया- "आर्यपुत्र, सुनिये आर्यपुत्र।" ये मेरा संवाद था पर इसे युधिष्ठिर ने सुना और मुझसे मुखातिब होकर बोले- "आर्यपुत्र, सुनिए आर्यपुत्र।" सर बोले- "तुम नहीं।" युधिष्ठिर बोले- "तुम नहीं।" मैं हक्की बक्की कि क्या हो रहा है। पर तुरंत मामला समझ गयी और संवाद को सही जगह पर ला दिया। पर इसके बाद हुआ ये कि सर की प्रोमटिंग मंच के साथ-साथ दर्शकों को भी स्पष्ट सुनाई देने लगी, क्योंकि अब सर जोर-जोर से बोलने लग गए थे।

कई कहानियां हैं। कई यादें हैं। कई बातें हैं। पूरा लिखने बैठो तो किताब लिख जाएगी। सर के साथ बहुत साल काम नहीं किया पर जितना भी किया उससे प्राप्त अनुभवों ने ज़िंदगी को समृद्ध ही किया है। इसके लिए अस्थाना सर की हमेशा ही आभारी रहूंगी।

- डॉ. स्वयम्बरा

श्याम मोहन अस्थाना, जिन्हें हम अस्थाना सर कहा करते थे। पहली बार किसी बड़े नाटक में हिस्सा लेने का अवसर मिला तब मैं पांचवीं या छठी क्लास में रही होऊंगी। नाटक का नाम था "बुद्धम शरणम् गच्छामि"। इस नाटक में मुझे प्रतिहारी की भूमिका दी गई थी और मेरी बड़ी बहन मुख्य भूमिका में थी। मेरे हिस्से सिर्फ एक डायलॉग था "चल लड़की, वधशाले को चल।" और वो भी दीदी (नाटक की मुख्य नायिका) को बोलना था। मैं घर में बस इसी एक डायलॉग की प्रैक्टिस करती जिसके लिए मम्मी से डांट भी खा जाती कि दीदी को ऐसे बोलते हैं! इस नाटक में मुझे मूँछ लगाई गई, जो काफी अनकंपर्टेबल था। अस्थाना सर से मेरा वही पहला परिचय था। बाद में मालूम चला कि वे बड़ी जीजी (हमारे स्कूल की प्रधानाध्यापिका) के पति हैं। इस नाटक के बाद, नाटकों में भाग लेने का सिलसिला शुरू हो गया।

मुझे शिमला की एक घटना याद आ रही है। मैं लोक नृत्य के लिए गई थी। नाटक में मुझे कोई किरदार नहीं मिला था। नाटक का नाम याद नहीं, कुछ आतंकवादियों और जमीन को लेकर था। नाटक कमजोर पड़ रहा था, प्रतियोगिता की बात थी, रिहर्सल के दौरान किसी ने यह आइडिया दे दिया कि इसमें एक पगली की एंट्री करवा दीजिए नाटक का अलग इंपैक्ट पड़ेगा। अस्थाना सर को आइडिया बहुत अच्छा लगा लेकिन पगली बने कौन, फिर मुझे कहा गया, मुझे गुस्सा आ रहा था कि मुझसे कितना खराब किरदार करवाया जा रहा लेकिन फिर भी मैंने बड़े मनोयोग से किया।

एक बड़ा ही दिलचस्प वाक्या हुआ था नागपुर में। वहां नाटक प्रतियोगिता थी। प्रतियोगिता के लिए जो नाटक अस्थाना सर लेकर गए थे उसका नाम था तूफान। मुख्य किरदार छंदा आंटी निभा रही थीं। सपोर्टिंग दीदी निभा रही थी। मैं इसलिए टीम के साथ थी क्योंकि दीदी जा रही थी। वहां पहुंचने पर मालूम चला कि मुख्य किरदार निभाने वाले दोनों कलाकार नहीं आ पाएंगे। अब क्या हो ? नाटक तो करना था।

प्रतियोगिता की बात थी। तब अस्थाना सर स्वयं पुरुष का मुख्य किरदार निभाने के लिए तैयार हो गए, दीदी को छंदा आंटी वाला किरदार निभाने के लिए कहा गया और मुझे दीदी वाला किरदार निभाना था। डायलॉग तो रिहर्सल देख देख कर मुझे याद था। नाटक की कहानी ठीक ठीक याद नहीं शायद आत्मा से जुड़ी हुई थी। दो दोस्त किसी महिला की हत्या करते हैं, तब उसकी आत्मा आती है, महिला की छोटी बहन का किरदार मेरा था, जिसके हिस्से सिर्फ रोना आया था और दिलचस्प ये कि मुझे रोने नहीं आता था।

रिहर्सल के दौरान जब भी रोने का समय आता, मुझसे कहा जाता कि हंसना नहीं है रोना है और मुझे हंसी आ जाती। मतलब मैं रोने का अभिनय करती लेकिन मेरे चेहरे से लगता मैं हँस रही हूँ। आखिरकार यह निष्कर्ष निकाला गया कि मैं अपने दांतों को ढक लूंगी तो हँसी का एक्सप्रेसन नहीं आएगा।

नाटक शुरू हुआ और जब तूफान की रात में बूढ़े काका का लालटेन लेकर संवाद शुरू हुआ तो दर्शकों में से आवाज आई, "चीनिया बादाम" ... इसके साथ जोर का ठहाका लगा। इतनी मुश्किल से जो मैंने गंभीरता ओढ़ रखी थी देखते-देखते मुस्कराहट में बदल गई,

लेकिन फिर मैंने दृश्य के अनुरूप खुद को तुरंत ढाल भी लिया। लेकिन वो यादगार अनुभव था। वहां की हूटिंग भी यादगार रही।

एक और वाक्या है "मेरा नाम मथुरा" नाटक से जुड़ा हुआ। बक्सर में इस नाटक की प्रस्तुति थी। दो दिन पहले सर घर पर आए और बोले कि इस नाटक में मुख्य किरदार निभाना है।

मैंने उनसे कहा कि दो दिन में और इतना मुश्किल किरदार,

तो उन्होंने अपने खास अंदाज में कहा "करना क्या है शुरू में तो हल्का फुल्का है उसके बाद तुम नीचे देखती रहना, वही तुम्हारी भावाभिव्यक्ति होगी।" मैंने कहा ठीक। जैसा उन्होंने कहा था ठीक वैसा की मैंने किया और पूरे नाटक में नीचे ही देखती रही। दरअसल वह नाटक तब मेरी समझ में आया भी नहीं था, तो क्या भाव देना है ये कैसे समझ पाती। साथी कलाकार पूछने लगे कि सारे समय नीचे क्यों देखती रही अब मैं क्या बताऊं कि क्यों देखती रही।

ऐसी अनेक यादें हैं कुछ खट्टी-कुछ मीठी, जिन पर समय का गर्द परत दर परत चढ़ चुका है। जब संस्मरण लिखने की बात आयी तो गर्द को झाड़ने के क्रम में अनेक दिलचस्प किस्से याद आने लगे, जिन पर आज के समय में सिर्फ हँसा जा सकता है।

- प्रियंबरा

स्मृति ग्रंथ के लिए प्रेरणादायक लेख (प्रो. श्याम मोहन अस्थाना के स्मरण में)

मेरे जीवन में कला, नाटक और रंगमंच की जो गहरी समझ विकसित हुई, उसका श्रेय मैं संपूर्ण रूप से प्रो. श्याम मोहन अस्थाना को देती हूँ। जब मैं अपने प्रारंभिक जीवन में थी, तभी से मुझे उनके सान्निध्य में सीखने का अवसर मिला। उन्होंने न सिर्फ नाट्यकला सिखाई, बल्कि जीवन के प्रति एक संवेदनशील दृष्टिकोण भी विकसित किया। वे नाटक को केवल मंचन नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन मानते थे। उनके साथ काम करना मेरे लिए सौभाग्य की बात रही, और यह मेरे जीवन की सबसे अनमोल सीखों में से एक रही।

प्रो. अस्थाना जी का नाट्य योगदान अत्यंत ही प्रेरणादायक रहा है। आकाशवाणी से उनके 100 से अधिक नाटकों का प्रसारण हुआ, जिनमें "होटल खजुराहो", "आदिम अग्नि" और "नो वैकेंसी" जैसे नाटक राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए। वहीं दूरदर्शन से भी उनके कई नाटकों का प्रसारण हुआ, जैसे रांची दूरदर्शन से "तीसरा आदमी" और पटना दूरदर्शन से "हाथी राजा"। बच्चों के लिए बनाई गई फिल्म "जवाब आयेगा", जिसकी कथा भी उन्होंने ही लिखी, दूरदर्शन से लगभग 20 बार प्रसारित हुई – यह उनके लेखन और निर्देशन क्षमता का जीवंत प्रमाण है।

मैंने उनके साथ देश के कई नगरों में प्रस्तुतियाँ दीं, जिनमें से औरंगाबाद महोत्सव मेरे लिए सबसे यादगार रहा। वहाँ की प्रस्तुति, दर्शकों की प्रतिक्रिया और प्रो. अस्थाना जी का मार्गदर्शन – ये सब आज भी मेरी स्मृतियों में जीवंत हैं।

उनके अद्वितीय योगदान के लिए उन्हें 100 से भी अधिक बार विभिन्न मंचों पर सम्मानित किया गया। यह केवल संख्यात्मक उपलब्धि नहीं, बल्कि उनके नाट्यकर्म की गुणवत्ता और गहराई का प्रमाण है।

प्रो. श्याम मोहन अस्थाना सिर्फ एक नाट्यनिर्देशक नहीं थे, बल्कि एक विचारक, एक शिक्षक और एक सच्चे जीवनदृष्टा थे। उनका व्यक्तित्व मेरे जैसे कई विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। आज जब यह स्मृति ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है, तो मेरा मन उनके प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता से भर जाता है।

उनकी यादें, उनके द्वारा दी गई सीख और उनका योगदान हमें सदैव मार्गदर्शन देता रहेगा।

प्रणाम, आदरणीय अस्थाना जी।

- मेधा वर्मा

पीढ़ियों की प्रेरणा पाठशाला है आरा रंगमंच के 'भीष्म पितामह' की जीवनी

'ए जी...एजी सुनो, करना है तो ठीक से करो, नहीं तो रहने दो कोई और कर लेगा' शायद ही आरा शहर का कोई रंगकर्मी ऐसा होगा जिसे ये हिदायत नहीं मिली हो... स्व. प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना का ठीक से करने का आशय ये नहीं था कि वो एक रंगकर्मी में किसी मंजे हुए पेशेवर अभिनेता की छवि देखना चाहते थे बल्कि वो एक इंसान में अपने उस किरदार का अक्श चाहते थे जो नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बने... संवाद संप्रेषण के अभ्यास के दरम्यान अभ्यास स्थल पर सन्नाटा और अस्थाना सर के चेहरे पर शब्द दर शब्द भावों का कौतुहल.. अलबत्ता ज्यादातर उनकी भावनाएं उनकी चक्षुमंच से अश्रु का रूप धर प्रवाहित होने लगती... नाटक के प्रति उनकी यही बैचेनी बिना गुरु दक्षिणा हजारों को अभिनय में पारंगत कर गई... प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना पीढ़ियों की प्रेरणा पाठशाला थे... उनकी जीवनी उनकी गैरहाजिरी में भी नई पीढ़ी को रंगमंच का पाठ बखूबी पढ़ाती है... यबी वजह है कि उनकी शख्सियत को आरा रंगमंच के 'भीष्म पितामह' का दर्जा हासिल है...

जी हां मैंने भी उसी पाठशाला से अभिनय और लोक नृत्य के अल्हड़ तन को गंभीरता के लिबास से ढकना सीखा है... मैं भी वो बुत हूं जिसमें अस्थाना सर की हिदायतों और अनुभवों ने कलात्मकता का प्राण प्रवाह किया है... अस्थाना सर की सरपरस्ती में 'दृष्टिहीन दिशाहीन' 'प्रोमोशन' 'रत्नावली' और 'मेरा नाम मथुरा है' जैसे नाटकों में अभिनय का मेरा अनुभव अविस्मरणीय है.. उनकी साहित्य की सूझ बूझ, नृत्य में भी भावनाओं का संचार करने की क्षमता, काव्य और गीति नाट्यों की रचना के माहिर अस्थान सर की स्मृति मेरे शिथिल पड़े नाट्य जीवन में प्रायः नई उर्जा का संचार करती है.

सादर भेंट

- अनूप सोनू

स्वर्गीय प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना जी की जन्म शताब्दी पर मेरा शत-शत नमन है। मैं आरा मे अपने उच्च शिक्षा ग्रहण करने के दौरान सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यों में भी रुचि लेता था। 1988-89 में आरा के जिलाधिकारी मनोज कुमार श्रीवास्तव के तबादले पर सरकार के विरुद्ध हुए ऐतिहासिक आंदोलन से लेकर बरेली, उत्तर प्रदेश में आयोजित अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता में सर द्वारा रचित और निर्देशित नाटक 'बुद्धं शरणम् गच्छामि' (1985) में भगवान बुद्ध का पात्र निर्वहन करने तक की बहुत सारी मीठी यादें ताजा हो जाती हैं।

आदरणीय सर एक साथ शिक्षाविद्, संस्कृति के पोषक, राजनीति के जानकार और सामाजिक संवेदनशीलता के द्योतक थे। मैं अस्थाना सर सानिध्य पाने और कुछ वर्षों तक समाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों में साथ साथ सक्रीय रहा हूं उसका मुझे गर्व है।

- तारकेश्वर नाथ ठाकुर

कला एवं संस्कृति के प्रकाश पुंज का नाम प्रोफेसर अस्थाना : बक्शी विकास

सूर्य के प्रकाश से जिस तरह पूरी सृष्टि प्रकाशित है ठीक उसी तरह प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना जी के कला कीर्ति से आरा का कला जगत प्रकाशमान है। प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना महज किसी व्यक्ति का नाम नहीं बल्कि एक कला एवं संस्कृति का एक प्रकाश पुंज हैं जिसकी आभा से जीवंत था आरा का कला जगत। अस्थाना साहब की कला कृतित्व के विषय में कुछ भी कहने के लिए मैं स्वयं को बहुत छोटा समझता हूँ पर मैं कुछ मेरे उनके बीच की घटित स्मृतियों को साझा कर रहा हूँ।

प्रोफेसर अस्थाना सर को केवल नाटककार कहना शायद उनका सर्वांगिक परिचय नहीं होगा बल्कि कला एवं संस्कृति के लिए जीने और मरने वाले अस्थाना साहब का परिचय एक युग पुरुष के रूप में ही देना उचित होगा। किसी नवॉंकुर को प्रोत्साहित करना हो या किसी सांस्कृतिक आयोजन को शीर्ष तक ले जाना हो तो इसके लिए सबसे आगे रहने वाले प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना जैसा कोई दूसरा व्यक्तित्व मुझे आज तक दूसरा कोई नहीं दिखा।

प्रोफेसर साहब से जुड़ी मेरी कुछ स्मृतियाँ कभी विस्मृत नहीं हो सकती। वर्ष 2005 में मैंने एक शास्त्रीय संगीत समारोह का आयोजन किया था। तब मेरी उम्र बहुत छोटी थी। इस आयोजन में अस्थाना सर पहली पंक्ति में बतौर अतिथि बैठे थे। मैंने बड़े मन से आयोजन किया था किंतु लाख बुलाने पर भी दर्शकों की उपस्थिति बहुत कम थी जिस कारण मनोबल टूट रहा था। ऐसे में अस्थाना सर ने उद्घाटन सत्र में सभा को संबोधित करते हुए कहा था कि आरा में ललन जी के संगीत परंपरा का सूर्य कभी उदय हुआ था किंतु कालांतर में यह सूर्य ढलने लगा।

शास्त्रीय संगीत का यह आयोजन कर बक्शी विकास ने एक दिया प्रज्ज्वलित कर दिया है जिसके प्रकाश अंधेरे से लड़ रहा है और एक न एक दिन सुबह होगी जरूर होगी। सर के द्वारा कही गई यह बात मुझे इतनी प्रेरक लगी कि आज 2025 में आरा का शास्त्रीय संगीत अपने चर्मोत्कर्ष की ओर अग्रसर है। प्रोफेसर अस्थाना साहब दूरदर्शी थे वो आरा में संगीत के भविष्य को देख चुके थे। नाटक के क्षेत्र में तो प्रोफेसर साहब के विषय में कुछ कहना सूरज को दीपक दिखाने जैसा है। प्रोफेसर साहब ठुमरी भी गाते थे और रचना भी करते थे। आरा में नाटक एवं कला की अन्य विधाओं के आयोजन के लिए सभागार के रूप में महज एक नागरी प्रचारिणी सभागार ही था जिसका शुल्क भी सामान्य नहीं था। लिहाजा आयोजन करना आसान नहीं था।

प्रोफेसर साहब ने अपने आवास में ही उपर एक बड़ा सा हॉल केवल इसलिए बनवाया कि संगीत व नाटक जैसी विधाएँ विलुप्त न हो और आरा में कला संस्कृति का झंडा बुलंद हो सके। मेरी संस्था बिरजू महाराज कला आश्रम, भोजपुर हिंदी साहित्य सम्मेलन, कामायनी, शत्रुंजय संगीत विद्यालय, संस्कार भारती जैसे संस्थानों में बतौर संरक्षक, अध्यक्ष एवं सचिव के पद को सुशोभित करते हुए प्रोफेसर साहब ने कई कीर्तिमान रचे हैं साथ ही समाज को प्रेरित किया है।

यहाँ मैं जरूर जिक्र करना चाहूंगा कि अकसर मेरे सांगीतिक आयोजन के सम्पन्न होने के बाद प्रोफेसर साहब उसे ग्रेड प्रदान करते थे और हँसते हुए कहते थे "एजी एजी इस आयोजन को दस में सात नम्बर दिया जाता है"। इस तरह कभी सात, कभी आठ कभी नौ नम्बर मिलते। ये नंबर सही मायनों में बहुत महत्वपूर्ण थे जो आगे और बेहतर करने के लिए मेरे भीतर हौसले को बुलंद कर रहे थे।

अब भला जिंदगी का वो सबक जो एक गार्जियन के रूप में उन्होंने सिखाया उसकी चर्चा किये बिना यह आलेख अधूरा रह जायेगा। विककी (मुझे इसी नाम से बुलाते थे) जीवन में कभी तकरार की स्थिति आये तो "मुस्कुरा के और सलीके से अपनी बात कहना" देखना यह व्यवहार

हमेशा तुम्हारी अलग छवि कायम करेगा।

सच में इन सारी बातों ने मेरे सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन लाया जिसके लिए मैं सदैव अस्थाना साहब का ऋणी हूँ। प्रोफेसर अस्थाना कभी व्यक्तिगत बात को आगे नहीं रखते थे बल्कि कला और संगीत को सबसे पहले रखते थे। नाटक होना चाहिए, संगीत होना चाहिए नृत्य होना चाहिए यह।

सर का जीवन ही कला और समाज के लिए समर्पित था। मेरे सांगीतिक आयोजन में लगभग सर की उपस्थिति शत प्रतिशत रहती थी आज उनकी कमी बहुत महसूस होती है। आरा में सांगीतिक आयोजन भी होते हैं लेकिन अग्रिम पंक्ति का वो जगह आज भी भर नहीं पाया जहाँ प्रोफेसर अस्थाना विद्यमान थे। किसी शायर ने क्या खूब कहा है:-

"हजारों बैठे हैं महबूब तेरी महफ़िल में
मगर वो चांद का टुकड़ा नजर नहीं आता"

- बखशी विकास

नमस्कार दोस्तों, मैं रोहिताश्व गौड़ (अभिनेता)

दोस्तों आज मैं आपके समक्ष एक ऐसी शकिसयत का जिकर करने जा रहा हूँ जिन्होंने 80-90 के दशक में नाट्य लेखन के क्षेत्र में नाट्य निर्देशक के क्षेत्र में कुछ नए आयाम छुए थे।

हमारे शिमला में आयोजित होने वाली All India Artist Association की जो प्रतियोगिता होती है, उसमें आप आरा से अपनी टीम के साथ आया करते थे अपनी बेटे कावेरी के साथ और पूरी टीम साथ हुआ करती थी और बेहतरी नाटक उस समय शिमला कालीबाड़ी में खेले गए।

इस शकिसयत का नाम है "श्याम मोहन अस्थाना", अस्थाना जी अब इस दुनिया को अलविदा कह चुके हैं। लेकिन उस समय जो नाटक उन्होंने किये उनमें कुछ नई बात थी। कुछ चीजें ऐसी थी जो पुराने को छूते हुए भी बहुत कन्टेम्परेरी थी।

इसलिए, मैंने आपको कहा कि नाट्य क्षेत्र में कुछ नए प्रयोग उस समय हुए। बहुत अच्छे अच्छे नाटक को लेकर आया करते थे "मेरा नाम मथुरा है, No man's land, कोई जगह खाली नहीं है"। ये कुछ बड़े बेहतरीन नाटक हुए उस दौरान जिसमें "कोई जगह खाली नहीं है" का निर्देशन मैंने भी सोलन फिल्म फोरम के साथ किया था, जो नागपुर में खेला गया था और भी कई जगहों पर खेला गया।

तो दोस्तों आज मैं उस महान शकशीयत को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ जो इस दुनिया में तो नहीं हैं लेकिन अपने लेखन के कर्मों से वो आज भी हमारे बीच जीवित हैं।

उनकी सुपुत्री कावेरी बहुत अच्छी गायिका हैं। बहुत अच्छा काम कर रही हैं। और बहुत सुरीली हैं उनकी आवाज। वो उस समय इन नाटकों में म्यूजिक दिया करती थी। श्याम मोहन अस्थाना मेरे पिता सुदर्शन गौड़ के बहुत अच्छे मित्र थे, दोनों में घंटों वार्तालाब हुआ करता था और मुझे आज भी याद है पापा हमेशा कहा करते थे "श्याम जी मैं वो दिन की कल्पना नहीं कर सकता जिस दिन या जिस साल आप नहीं आएंगे क्योंकि मैं आपके बिना प्रतियोगिता की कल्पना नहीं कर पाता।"

"मेरा नाम मथुरा है" मैं उन्होंने प्रेमचंद जी के जीवन को बताया था, मुंशी प्रेमचंद जी जो आज के दौर में अचानक से अवतरित हो गए हैं और आज की व्यथा जो है, उसका वो बखान कर रहे हैं और देख कर बड़े परेशान हैं।

बड़ी खूबसूरती से लिखा गया नाटक था ये वही सारे चरित्र जो उनके प्रेमचंद जी की कहानियों में होते हैं वो सब आज के दौर में उपस्थित होते हैं और कुछ सवालालत उतपन्न होते हैं आज की कन्टेम्परेरी व्यवस्था को लेकर जो उस समय भी कितनी प्रासंगिक थी जब प्रेमचंद जी ने ये सब लिखा था।

इस ताने-बाने को इतने खूबसूरत तरीके से अस्थाना जि ने अपनी नाटक पुस्तकों में लिखा था की वो आज भी पढ़ने में उतनी ही दिलचस्प लगती हैं।

मैं माननीय अस्थाना जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ वो जहां भी हूँ, जैसे भी हूँ, जिस रूप में भी हूँ, बहुत बहुत सुख से हूँ अच्छे लोग काश हमेशा के लिए इस धरती पर रह जाएं।

मैं अपने पिता श्री सुदर्शन गौड़ को भी इस मौके पर याद कर रहा हूँ, जिन्होंने इतने खूबसूरत व्यक्तित्व के लोगों का सामंजस्य से शिमला में All India Artist Association के माध्यम से बिठाया

आज भी हमारी प्रतियोगिता चल रही है, मैं और मेरी वाईफ रेखा इस प्रतियोगिता का एक अभिन्न अंग हैं।

एक नया रूप इस प्रतियोगिता ने ले लिया है। आज के दौर के कलाकार, आज के दौर के नाट्य दल इस प्रतियोगिता में आते हैं। इस बार वो 70वीं थी।

अस्थाना जी होते तो चीज़ें और भी शायद विभिन्न रूप ले पातीं, अलग रूप ले पातीं।

एक बार फिर मैं अस्थाना परिवार को बहुत सारी शुभकामनाये देता हूँ और कावेरी को बहुत सारी शुभकामनाये देता हूँ कि उन्होंने अपने पिता की परम्पराओं को इस तरह से आगे बढ़ा रखा है।

बहुत सारी शुभकामनाये आप सभी को अस्थाना परिवार को गौड़ परिवार की तरफ से।

- रोहिताश्व गौड़

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थान जी की स्मृति में कुछ शब्द लिखने का प्रयास करता हूँ:

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थान जी एक अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी थे, जिनकी उपस्थिति हजारों की भीड़ में भी विशिष्ट थी। सोलन के फिल्मफोट कार्यक्रम में आरा, बिहार से अपने समूह के साथ उनकी पहली मुलाकात ने मुझे प्रभावित किया। एक विद्वान, लेखक और सज्जन व्यक्ति के रूप में उनकी आभा स्पष्ट थी।

उनके साथ बिताए गए समय ने मुझे उनकी सादगी और मधुर वाणी से परिचित कराया। बात करते समय वह इतने तल्लीन हो जाते थे कि उनकी विचारधारा में खो जाना स्वाभाविक था। उनकी बातें दिल की गहराइयों तक पहुँचती थीं।

बिहार में उनके नाटकों की पुस्तकें प्रकाशित होना उनकी साहित्यिक प्रतिभा का प्रमाण है। लेकिन उनकी महानता का असली मापदंड उनकी विनम्रता और मित्रता में था। उनके द्वारा अपने मित्र के साथ बनाया गया समान घर और बिना दीवार के आँगन और फूलों का बगीचा मित्रता और प्रेम की अदभुत मिसाल है।

आरा में उनकी प्रतिष्ठा और सम्मान अद्वितीय था। लोग आज भी उनका नाम आदर और श्रद्धा से लेते हैं। एक सच्चा कलाकार भावुक होता है, और यह बात प्रोफेसर अस्थान जी में स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी।

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थान जी, आपकी स्मृति हमारे दिलों में हमेशा जीवंत रहेगी।

- विपुल कुमार गोयल

स्नेह युक्त स्मृति

रंग कर्म से जुड़े हर रंग कर्मियों को सदैव एक अच्छे नाटक की तलाश रहती है, अच्छे नाटक तभी मिलते हैं जब लेखक या नाटककार अच्छा हो.. हिन्दी नाटकों में सदैव इसकी कमी खलती रही है किन्तु हम उन सौभाग्य शाली रंग कर्मियों में हैं जिन्हें न केवल अच्छे नाटक में काम करने का मौका मिला बल्कि महान लेखक, निर्देशक व रंगकर्मी स्वर्गीय डाक्टर श्याम मोहन अस्थाना जी का सानिध्य भी प्राप्त हुआ....अब तो बस याद ही बाकी है..

यह संस्मरण है वर्ष 1986-87 का जब मैं नाटक व नृत्य के जनून में सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग में "सर्वेयर"

की 9 वर्ष की रेगुलर नौकरी छोड़कर हिमाचल प्रदेश के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग में ऐज़ ए ड्रामा इन्स्पेक्टर सोलन आ गया पहले ही दिन मैंने वहां की सांस्कृतिक संस्था "फिलफाट" को ज्वाइन कर लिया....

नौकरी के साथ साथ रंगकर्म का सिलसिला भी चल पड़ा....

इन्हीं दिनों रोहिताश्व गौड़ (भाभी जी घर में हैं के फेमस पात्र तिवारी जी) राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय देहली से पास आउट हो कर आए, उन्होंने फिलफाट संस्था के माध्यम से अपने निर्देशन में श्याम मोहन अस्थाना जी का लिखा

नाटक "कोई जगह खाली नहीं है" तैयार करवाया जिसमें फिलफाट ग्रुप के कलाकार..

रश्मि धर, राजीव उप्पल, गुलाब सिंह नामधारी आदि के साथ मुझे भी शीतल बाबू नामक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर मिला...

इसका मंचन हिमाचल के अतिरिक्त महाराष्ट्र के नागपुर में भी किया गया...

"कोई जगह खाली नहीं है" नामक नाटक उनके एकांकी संग्रह "खरीदा हुआ चेहरा" से लिया गया था उसमें 6 बेहतरीन नाटक लिखे गए हैं।

इसी दौरान अस्थाना जी से मुलाकातों का सिलसिला चल पड़ा..

सोलन में अखिल भारतीय नाटक एवं नृत्य प्रतियोगिता के आयोजन में अस्थाना जी विशेष लगाव व आशीर्वाद रहा..

उनकी बेटी कावेरी जी का योगदान भी हम भूला नहीं सकते हैं...

जहां तक अस्थाना जी की बात है मैंथा व्यक्तिगत अनुभव यह बतलाता है कि...

अस्थाना जी ने अपनी अद्वितीय लेखन शैली और गहरी समझ के साथ ऐसे नाटक रचे हैं जो दर्शकों को सोचने पर मजबूर करते हैं। उनकी कल्पनाशीलता और शब्दों का जादू दर्शकों को नाटक के पात्रों के साथ जुड़ने का अवसर प्रदान करता है।

उनके नाटकों का कथानक गहरा और अर्थपूर्ण है, जो दर्शकों को सोचने पर मजबूर करता है।

पात्रों की सृजनात्मकता व संवादों की मार्मिकता दर्शकों को भावनात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

एक कुशल नाटककार के साथ अस्थाना जी का धीर, गम्भीर व सौम्य व्यक्तित्व भी बहुत प्रभावित करता था..

फिलफाट फोरम सोलन के साथ तो उनके पारिवारिक सम्बन्ध हो गये थे.. उनका चले जाना मैं न केवल हिमाचल, बिहार बल्कि राष्ट्रीय क्षति मानता हूं 🙏

- उत्तम कुमार

श्रद्धांजलि – स्वर्गीय श्री श्याम मोहन अस्थाना की जन्म शताब्दी पर

स्वर्गीय श्री श्याम मोहन अस्थाना जी की जन्म शताब्दी पर हम उन्हें सादर नमन करते हैं। हिन्दी रंगमंच को उन्होंने ऐसी अनमोल कृतियाँ दीं जिनमें मानवीय संवेदनाएँ, सामाजिक यथार्थ और परिवर्तन का स्पष्ट संदेश समाहित था।

फिलफोट फोरम, सोलन के लिए यह गर्व का विषय है कि अभिनय '89 (अखिल भारतीय नृत्य, नाटक एवं संगीत प्रतियोगिता, सोलन) में कामायनी सांस्कृतिक समूह आरा, बिहार, जो अस्थाना जी की प्रेरणा से सक्रिय था, ने भाग लेकर अपनी छाप छोड़ी। इसके उपरान्त दिसम्बर 1991 में हमारे दल को भी आरा (बिहार) में उनका प्रसिद्ध नाटक "कोई जगह खाली नहीं है" मंचित करने का सौभाग्य मिला। इस नाटक का निर्देशन उस समय राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से नवनिर्वात हुए श्री रोहिताश्व गौड़ ने किया, जो आज फिल्म और टीवी जगत के ख्यातिनाम अभिनेता हैं (दर्शकों के बीच भाभी जी घर पर हैं के 'तिवारी जी' के रूप में लोकप्रिय)।

ये दोनों ही अवसर अस्थाना जी की साहित्यिक विरासत और रंगकर्म की प्रासंगिकता के जीवंत साक्षी रहे। उनके नाटक आज भी दर्शकों और कलाकारों को समान रूप से दिशा और प्रेरणा प्रदान करते हैं।

हम उनकी जन्म शताब्दी पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और संकल्प करते हैं कि उनकी रचनात्मक धरोहर से हम सदा प्रेरित होते रहेंगे।

- राजीव उप्पल

प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना निश्चित तौर पर वह आज हमारे बीच नहीं है लेकिन उनकी लेखनी ने उनके साहित्य धर्मिता ने उनको अपनी कृतियों और रचनाओं के माध्यम से अजर अमर कर दिया है और ऐसा लगता है कि आज अभी भी वह हमारे बीच में है।

मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य अखिल भारतीय नाटक प्रतियोगिता पटना में वर्ष मुझे ठीक से याद नहीं है उसमें हुई थी और उनके द्वारा लिखित एक नाटक मेरा नाम मथुरा है जो की नारी उत्पीड़न पर आधारित है, जिसमें मैंने मुंशी प्रेमचंद के रोल को एक बार नहीं बल्कि अनेकों बार किया है और यही नहीं उस पात्र ने मुझे अखिल भारतीय स्तर पर अनेकों पुरस्कारों और सम्मानों से भी सम्मानित करवाया है।

आज उनकी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में, मैं यही कहना चाहूंगा कि, ऐसे कलमकार बार-बार पैदा नहीं होते हैं। मैं हृदय की गहराइयों से उनका स्मरण करता हूं, उनको नमन भी करता हूं और सभी आयोजकों को इस निमित्त बहुत बधाइयां और बहुत शुभकामनाएं भी देता हूं,
जय हिंद, जय भारत..

- प्रमोद त्रिगुणायत प्रामिल



प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना

कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनसे न कोई पहले का नाता होता है, न तो कोई परिचय होता है और न ही कभी कोई संपर्क हुआ होता है; लेकिन जब वो मिलते हैं तो न जाने क्यों एक अपनापन सा महसूस होता है। ऐसा लगता है उनके साथ बहुत ही पुराना संबंध है। उनके हाव-भाव, उनकी भंगिमा से ऐसा जान पड़ता है मानो बरसों पहले की मुलाकात हो।

ऐसे लोगों का एक औरा होता है, जो हर किसी को अपने मोहपाश में खींच लेता है। कुछ ऐसा ही अनुभव मुझे प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना जी से मिल कर हुआ। पहली बार ही जिस आत्मीयता से उन्होंने मुझ अकिंचन को संबोधित किया, उसने उनके पूरे अस्तित्व का परिचय दे दिया।

देश के सुप्रसिद्ध नाटककारों में से एक प्रोफेसर अस्थाना ने मुझे पहली मुलाकात में ही "अमलेश जी" और "आप" कहकर संबोधित किया, जो इस विधा के लोगों में कम ही देखने को मिलता है। उनका यही बड़प्पन मेरे दिल को छू गया। उसके बाद तो मुलाकातें होती रहीं। नाटक पर, समाज पर और देश-विदेश पर सभी तरह की बातें होती रहती थीं।

हां, वो अपनी बात बड़ी साफगोई और स्पष्टता के साथ रखते थे। किसी भी विषय के संबंध में उनके अंदर कोई झिझक न थी। उन्होंने अपने नाटकों में भी जो बातें पात्रों और संवादों के माध्यम से कही हैं वह पूरी दृढ़ता और प्रामाणिकता के साथ कही हैं। प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना जी ने हिंदी नाट्य जगत को अपनी लेखनी के माध्यम से बहुमूल्य योगदान दिया है। उन्होंने बच्चों के लिए, किशोरों के लिए, युवाओं के लिए, बुजुर्गों के लिए, कल्पनाओं, दंत कथाओं, ऐतिहासिक, सामाजिक, शिक्षाप्रद और प्रेरणादायक नाटकों की रचना की है। ऐसी शख्सियत से कुछ वर्षों का सान्निध्य मुझे प्राप्त हुआ, जो मेरे इस जीवन के लिए सौभाग्य की बात है।

सैंकड़ों प्रकाशित एवं अप्रकाशित नाट्य कृतियों, नाट्य रूपांतरणों, संस्मरणों के रचयिता प्रोफेसर अस्थाना को वर्ष २०१५ में २४ दिसंबर को देवराज इंद्र ने अपने दरबार में नाट्यालेखन के लिए बुला लिया। आगामी २९ अक्टूबर २०२५ को श्रद्धेय नाटककार के साथ-साथ सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था "कामायनी आरा" एवं "कामायनी वाराणसी" के संस्थापक स्मृतिशेष प्रोफेसर श्याम मोहन अस्थाना जी की १०१वीं जन्म-जयंती पर हमारी श्रद्धांजलि, भावांजलि और नाट्यांजलि अर्पित है।

- अमलेश श्रीवास्तव

दादाजी (प्रो. श्याम मोहन अस्थाना) जी से मेरी मुलाकात बहुत ही संक्षिप्त रही है। जब से मैं संगीत विद्यालय में आना शुरू किया, दादाजी अस्वस्थ रहने लगे थे। फिर भी सांस्कृतिक गतिविधियों को लेकर चैतन्य रहते थे।

मुझसे हमेशा कहते " एजी एजी कुछ कार्यक्रम कराते रहो , सन्नाटा ठीक नहीं है।"

मुझे भी हर समय " नाटक करोगे जी" कहते हुए प्रेरित करते रहते थे, परंतु यह मेरा क्षेत्र ही नहीं था। मुझे बैठाकर काव्य नाटिका "बुद्धम् शरणम् गच्छामि" की पूरी कहानी भाव सहित सुनाएं। उसके बाद हम लोगों ने कथक शैली में " बुद्धम् शरणम् गच्छामि " एवं "आम्रपाली" का मंचन किया। दादाजी अंदर से काफी प्रसन्न हुए एवं हम लोगों को काफी आशीर्वाद दिए।

मेरा दुर्भाग्य है कि मैं उनके सान्निध्य में बहुत दिन नहीं रह सका। अस्वस्थता के कारण 24 दिसंबर 2015 को उनकी मृत्यु हो गई।

- अनीश कुमार

सर्वप्रथम मैं श्रद्धामुखर्जी सभी को प्रणाम करती हूँ।
कामायनी से मैं तब से जुड़ी हूँ जब से संस्थान की शुरुआत वाराणसी में हुई थी।

आज कुछ यादों को आपलोगों के सामने संस्मरण स्वरूप रखना चाहूँगी, और ये बातें
जुड़ी हैं परम श्रद्धेय प्रोफेसर श्याम मोहन आस्थाना जी से, मेरे लिए उनका लिखा
हुआ एक नाटक में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जिसका नाम था, श्रापग्रस्त

|

और सबसे अहम बात ये है कि, मुझे उनसे मिलने का और उनसे बहुत कुछ सीखने का
भी मौका मिला।

उनसे आशीर्वाद एवं स्नेह भी मुझे खूब मिला।

धन्यवाद

- श्राबंती मुखर्जी

अंकल जी बहुत ही सुलझे हुए व्यक्ति थे और सबसे प्यार मुहब्बत और सम्मान से बातें करते थे। उनको लोगो से बातें करने का बहुत शौक था और वो बातें हमेशा यही की आगे बढ़ते जाने की प्रेरणा देते थे।

अंकल जी को अपने सम्मानित ट्रॉफी लोगो को दिखा कर बताना की किस कहानी में सम्मानित किया और किसने किया सन् के साथ और गर्व से बताते हुए उनके चेहरे पर एक अलग ही चमक दिखाई देती थी।

मैंने जब उनसे बात की और उनकी ट्रॉफी देखी बहुत ही अच्छा महसूस हो रहा था और दिल कर रहा था की उनसे बातें करने का सिलसिला कभी भी खत्म ना हो। 🙏🙏🙏🙏🙏

- रजनी बेदी

अस्थाना सर को उनके जन्म शताब्दी पर अशेष बधाईयाँ 🙏

सर एक ऐसी हस्ती थे जिनके विषय में क्या कहुँ और कितना कहुँ समझ नहीं आ रहा। वे अपने आप में एक सांस्कृतिक संस्था थे। नाटक के प्रत्येक विधा--लेखन, निर्देशन और मंचन-में उन्हें पारंगत हासिल था।

कुछ नाटक जैसे- 'पूरब और पश्चिम', 'तवांग' और 'मेरा नाम मथुरा है'- ये आज भी मेरे मन-मस्तिष्क में विद्यमान हैं। सर का एक एकांकी 'एक आदर्श नारी पात्र की खोज' जिसमें मैंने झाँसी की रानी के किरदार को अभिनीत किया था अविस्मरणीय है। सर ने पंचतंत्र की एक कहानी का नाट्य-रूपांतर कर मंचन करवाया था।

एक बात सर के विषय में बताना जरूरी है कि उन्हें अपने काम में पूर्णता चाहिए होता था जिसकी वजह से रिहर्सल में माहौल अनुशासित रहता था, इसकी मैं आज प्रशंसा करती हूँ।

एकबार पुनः उन्हें ण स्मरकरके नमन करती हूँ। 🙏

- कविता सिन्हा

भावपूर्ण श्रद्धांजलि : स्व श्रद्धेय प्रो. श्याम मोहन अस्थाना

यह जानकर काफी काफी खुशी का अनुभव कर रहा हूँ कि, रंगमंच के क्षेत्र में नाट्य लेखक, निर्देशक एवं विद्वान के रूप में पथप्रदर्शक, आरा बिहार निवासी

"प्रो. श्याम मोहन अस्थाना की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक डिजिटल स्मृति ग्रंथ निकालने की योजना है।

इस के लिए, सब से पहले प्रो० श्याम मोहन अस्थाना के खास कर पुत्र डा० दीपक कुमार जो आज भी मेरे भाई समान हैं,

पुत्रबधु श्रीमति वीणा सहाय

स्व अस्थाना जी की पत्नी स्व श्रीमती सावित्री अस्थाना

साथ ही साथ बहन टुन्नी (कावेरी मोहन) समेत पूरे परिवार के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

ऐसे तो रंगमंच, खेलकूद, सामाजिक कार्यों के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में मेरी अभिरुचि बचपन से रहा है। इस वजह से खगौल, पटना में, अखिल भारतीय खगौल नाट्य महोत्सव एवं लोकनृत्य प्रतियोगिता के साथ साथ पटना में आयोजित होने वाला, पाटलिपुत्र नाट्य महोत्सव में मेरा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग आयोजक के रूप में रहा है।

अखिल भारतीय खगौल नाट्य महोत्सव का आयोजन,स्थानीय सभी नाटक संस्थाओं के संयुक्त प्रयास से बना," एकजुट" संस्था से शुरू हुआ।

जिस में बिहार, झाड़खंड के साथ साथ उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, मुंबई, केरल, पश्चिम बंगाल, हिमाचल, उत्तराखंड, हिमाचल, मद्रास समेत कई राज्यों की नाट्य संस्था शामिल होती थी। इस में स्व अस्थाना जी की नाटक संस्था "कामायनी" भी हमेशा शामिल होने के साथ, इसमें व्यक्तिगत रूप से अस्थाना जी का मार्गदर्शन और सहयोग मिलता था। जिसकी कमी हमें ही नहीं, भारतीय रंगमंच को प्रभावित किया है।

इसी संदर्भ में, कुछ बातों की चर्चा तो नहीं करना चाहता था, पर लगा रंगमंच के क्षेत्र को कुछ विनाशकारी, व्यक्तिगत स्वार्थ और अपने गलत आचरण से प्रभावित करते रहे हैं। इस लिए नाम तो नहीं ले रहा, और ऐसे लोगों से सावधान भी रहने की जरूरत है।

कहना कि "एकजुट" की कुछ वर्षों के बाद जब, इसकी उपलब्धियों की चर्चा पूरे भारत के नक्शे पर होने लगी, तो इस क्षेत्र में कुछ ऐसे कलाकार के रूप भेड़िया छिपे हैं, सक्रिय हैं, जो रंगमंच को बदनाम करने के साथ साथ, इस के माध्यम से सरकार को चुना लगा ही रहा है, कलाकारों का भी शोषण आज भी जारी है। ऐसे ही एक स्वार्थी रंगमंच के मठाधीश, जिसके पास कई संस्था कार्यरत है। उस ने एकजुट की उपलब्धियों का फायदा लेने को लेकर, चुपके से एकजुट का बिहार सरकार से निबंधन करा लिया। जिसका बाद में काफी विरोध भी हुआ। करीब दस वर्षों तक खगौल में एकजुट का निबंधन करा लेने के बाद भी मंचन नहीं करा सके। बाद में कुछ लोगों को प्रलोभन दे कर याद कदा कार्यक्रम करा का सरकारी फंड ले रहा है। इस के बावजूद, एकजुट का नाम बदल कर, भारतीय एकजुट सांस्कृतिक संघ के नाम से, कार्यक्रम हो रहा था, लेकिन स्थानीय सांस्कृतिक धरोहर, एन सी घोष इंस्टीट्यूट, एलिवेटेड रोड विकास में टूट गया, इसके कारण, स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रम फिलहाल प्रभावित है।

इसी नाट्य महोत्सव के दौरान स्व. अस्थाना जी और इनके साथी परिवार जो भी कह लें,डॉ के बी सहाय और इन दोनों के पूरे परिवार से मेरा पारिवारिक रिश्ता भी आजतक बना हुआ है। इसका पूरा परिवार साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ा रहा। आज भी दीपक भैया, अपने पेशा के साथ साथ, "कामायनी" संस्था की गतिविधियों, खुद भी काफी व्यस्त होने के बावजूद सक्रियता बनाए हुए हैं।

स्व अस्थाना जी तो अब नहीं रहे, पर उनके पूरे परिवार साथ आज भी पारिवारिक रिश्ता बना हुआ है। यह सब उन्हीं के सानिध्य का प्रतिफल है।

लिखने कहने की बातें तो काफी हैं..पर..एक गीत के साथ
फिर से स्व. अस्थाना जी के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ,
"जाने चले जाते हैं, कहां दुनियां से जाने वाले"

साथ साथ डॉ दीपक भैया और उनके पूरे परिवार के प्रति आभार व्यक्त करता कि उन्होंने, एक पुत्र के नाते ही नहीं
कलाकार
के रूप ने अपने पिता स्व अस्थाना जी का डिजिटल स्मृति ग्रंथ बनाने का संकल्प लिया है।

- सुधीर कुमार

संस्मरण आदरणीय श्री श्याम मोहन अस्थाना के सानिध्य में

मेरा सर के साथ जुड़ाव मगध विश्वविद्यालय के साँस्कृतिक आयोजन 1981 के दौरान हुआ था फिर क्या था उनसे निरंतर रंगकर्म के आयोजन मे मेरा साथ रहा, सर की सरलता उनके लेखनी में है, उतनी ही उनके व्यक्तित्व में हैं।

रंगकर्म मे होने वाली भागीदारी के परिमाण स्वरूप होने वाले व्यक्तित्व विकास के लिए आमतौर पर उन व्यक्तित्व चरित्रों पर ध्यान केंद्रित किया था जिन्हें नाटक गतिविधियों के माध्यम से भावनात्मक कौशल, समाजिक कौशल को स्थापित किया जाता था जो भक्तगण तरीके से मेरे ऊपर एक सशक्त प्रभाव पडा था जिसका पूरा श्रेय सर का था।

- संजय कुमार

प्रो. श्याम मोहन अस्थाना जी के साथ मेरा और मेरे परिवार का बहुत ही गहरा रिस्ता था। मेरे भैया महाराजा कालेज में पढ़ते थे, उसी कॉलेज में सर प्रोफेसर थे। जब मेरे पिता जी का आरा मे तबादला हुआ तो हमारे नामांकन का सवाल आया, मेरे पिता जी शुरू से बाहर रहे थे उनको पता नहीं था कि कौन सा विद्यालय अच्छा है, लेकिन भैया को पता था कि जैन बाला विश्राम सबसे अच्छा विद्यालय है। भैया को ये भी पता था कि उस विद्यालय में प्रोफेसर साहब की पत्नी ही प्राचार्या हैं। भैया ने मेरे साथ मेरी चचेरी बहनों का भी उस विद्यालय में नामांकन करवाया।

फिर क्या था, सर की बहन श्रीमती सत्या दीदी जो शनिवार के बालसभा में मेरा एक भजन सुन कर मुझसे इतनी प्रभावित हुई कि सर से मेरी तारीफ करने लगी। उस दिन के बाद से मैं प्रोफेसर साहब के परिवार से जुड़ती चली गई, परिणाम ये हुआ कि हमारे विद्यालय के संगीत शिक्षक भी मुझे अलग से संगीत की शिक्षा देने लगे।

मैं शत्रुंजय संगीत विद्यालय से संगीत की शिक्षा लेने लगी इसका श्रेय मैं प्रोफेसर साहब को एवं उनकी पत्नी पूज्या सावित्री दी को देती हूँ। सर तो नाटककार भी बहुत अच्छे थे, उनके साथ प्रोफेसर राणा जी का भी अच्छा सहयोग रहता था।

“पैसा बोलता है” ये नाटक आरा के रुपम सिनेमा हॉल में किया गया था जो काफी नाम कमाया था। इतनी यादें जब मेरे साथ हैं तो उन लोगों के पास कितनी होगी जो सर के साथ वर्षों तक जुड़े हुए थे।

मुझे सर की एक बात बहुत याद आती है जब हम लोग कोई भी गाना गाते थे अगर बीच में गाने के बोल भूलते थे तो समथिंग समथिंग... गाते थे ..ऐसी बहुत सी बातें, बहुत सी यादें हैं, एजी एजी भी सर का तकिया कलाम था, ऐसे व्यक्ति के साथ की सभी बातें संस्मरण में रहती हैं।

- कांति सिंह

धन्यवाद !